University Literature Number

विश्वविद्यालय वाङ्मय विशेषांक

त्रै मा सि क

शब्दावली पत्रिका

SHABDAVALI PATRIKA

QUARTERLY JOURNAL OF TERMINOLOGY

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

Commission for Scientific & Technical Terminology, Ministry of Education, Government of India

त्रैमासिक
शब्दावली पत्रिका

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल

SHABDAVALI PATRIKA

Quarterly Journal of Terminology

Editorial Advisory Board

त्रैमासिक
शब्दावली पत्रिका
वर्ष : 1 अंक : 2-3

Quarterly Journal of Terminology
Shabdavali Patrika
Vol. 1 No. 2-3

विषय - सूची

21. वाणिज्य
22. शिक्षा
23. समाज-विज्ञान
24. समालोचना

मूल्य		Subscription Rates	
प्रति अंक :	रु० 1.00	Single copy	Re. 1/-
वार्षिक :	रु० 4.00	Yearly	Rs. 4/-

यह पत्रिका वर्ष में चार बार जनवरी-मार्च, अप्रैल-जून, जुलाई-सितम्बर, और अक्तूबर-दिसम्बर में प्रकाशित की जाती है।

The journal is published four times a year in January-March, April-June, July-September, October-December

चन्दा, विज्ञापन और लेखों के सम्बन्ध में सभी प्रकार का पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते पर करें :

All correspondence regarding subscriptions, advertisements and contributions may be addressed to :

अध्यक्ष,
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार,
7, वेस्ट ब्लाक,
रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-22।

The Chairman,
Commission for Scientific and Technical Terminology,
Ministry of Education,
Government of India.
West Block VII,
Ramakrishnapuram,
New Delhi-22

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

इंजीनियरी	रु०	Engineering
□ प्राथमिक सूक्ष्मदर्शीय खनिज विज्ञान लेखक—सुधाकर मोतीराम चौधरी	Rs. 6.00	Prathmik Sookshma Darshiya Khanijvigyan (Elementary Mineralogy; Author : Sudhakar Motiram Chowdhry
वैद्युत औद्योगिकी, भाग I लेखक : एच० काटन	7.75	Vaidyuta Audyogiki (Electrical Technology) Part I Author : H. Cotton
आधुनिक सर्वेक्षण, भाग I लेखक : प्रीतम दास बूलचन्द साहनी	6.25	Audhunik Sarvekshan (Modern Surveying) Part I; Author : Pritam Das Boolchand Sawhney;
निर्माण सामग्री लेखक : प्रो० आर० एस० देशपाण्डे	5.50	Nirman Samagri (Materials of Construction); Author : Prof R. S. Deshpande
गणित		**Mathematics**
□ शुद्ध घन ज्यामिति प्रवेशिका लेखक : जी० एस० महाजनी	4.15	Shuddha Ghan Jyamiti Praveshika (Textbook of Pure Solid Geometry) Author : G. S. Mahajani
□ समीकरण सिद्धान्त लेखक : डा० श्रीराम सिन्हा	5.35	Samikaran Siddhant (Theory of Equations); Author : Dr. Shri Ram Sinha
बीजगणित लेखक : डब्ल्यू० एल० फेरर	9.00	Beejganit (Algebra) Author : W. L. Ferrar
भौतिकी		**Physics**
□ अर्धचालक और उनके उपयोग लेखक : ए० एफ० योफी	3.75	Ardhachalak Aur Unke Upyoga (Semi Conductors and Their Uses) Author : A. F. Yoffee
□ अश्रव्य ध्वनियां लेखक : कुदरायावस्तेव	4.80	Ashravya Dhwaniyan (Sound We cannot Hear) Author : Kudrayavastev
□ उल्काएं लेखक : वी० फेडनिस्की	2.60	Ulkayen (Meteors) Author : V. Fednisky

□ **अंकित पुस्तकें प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, भारत सरकार, सिविल लाइन्स दिल्ली-6 से और अन्य पुस्तकें वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, वेस्ट ब्लाक VII, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्राप्त की जा सकती हैं।**

अखिल भारतीय शब्दावली

वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों में समान शब्दावली अनिवार्य रूप से अपेक्षित ही नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय एकता और छात्रों, शिक्षकों तथा व्यावसायिक कार्यकर्त्ताओं के देश के विभिन्न भागों में कार्य करने की दृष्टि से भी आवश्यक है। सितम्बर, 1968 में, नयी दिल्ली में भारतीय भाषाओं के विकास के लिए राज्य-शिक्षा अधिकारियों का सम्मेलन हुआ था, जिसमें इस आवश्यकता पर विशेष रूप से जोर दिया गया था। सम्मेलन में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री ने यह विचार व्यक्त किया कि छात्र अंग्रेजी नहीं समझ पाते हैं। उन्होंने कहा कि यदि शिक्षक छात्रों को उनकी मातृ-भाषा में पढ़ायेंगे तो कक्षा में छात्र प्रश्न पूछेंगे; शिक्षकों से अपेक्षा की जायेगी कि वे विषय में पूर्णत: दक्ष हों और उन्होंने विषय का गहन अध्ययन किया हो।

इस सम्मेलन का आयोजन वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग ने किया था। इसका उद्देश्य आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुकूलन अथवा अंगीकरण की विधि और साधनों पर विचार करना था। इस आयोग की स्थापना 27 अप्रैल 1960 के राष्ट्रपति-आदेश के अधीन हुई थी। उसमें निदेश था कि शब्दावली-निर्माण में स्पष्टता, संक्षिप्ति और सरलता को मुख्य लक्ष्य रखा जाय; उपयुक्त विषयों में अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली का अनुकूलन अथवा अंगीकरण किया जाए; शब्दावली निर्माण में सभी भारतीय भाषाओं में यथासम्भव शब्दावली की अधिकाधिक समरूपता पर ध्यान दिया जाय, तथा राज्यों और केन्द्र में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दावली-निर्माण के प्रयासों के समन्वय की समुचित व्यवस्था की जाए। यह भी निदेश था कि विज्ञान और टेकनोलोजी के क्षेत्र में समस्त भारतीय भाषाओं में यथासम्भव एकरूपता हो और निर्मित शब्दावली अन्तर्राष्ट्रीय अथवा अंग्रेजी शब्दावली के अधिकाधिक निकट हो। आयोग इस क्षेत्र में विभिन्न संस्थाओं द्वारा किये जाने वाले कार्य का पर्यवेक्षण करे और समस्त भारतीय भाषाओं के लिए प्राधिकृत शब्दावलियाँ प्रकाशित करे। अन्ततः आयोग को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में किये गये कार्यों की समीक्षा और हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में शब्दावली-निर्माण और उनके समन्वय-सम्बन्धी सिद्धान्तों के निर्माण का कार्य सौंपा गया। राज्यों में विभिन्न संस्थाओं द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में किए जाने वाले कार्यों का, उन संस्थाओं की सहमति से समन्वय करने का कार्य भी आयोग को सौंपा गया। सम्बद्ध संस्थाओं द्वारा हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त करने के लिए प्रस्तुत की जाने वाली शब्दावली को स्वीकृत करने का कार्य

भी आयोग को दिया गया। जिन शब्दावलियों को आयोग निर्मित करे अथवा स्वीकृति दे, उनके प्रयोग से, मानक वैज्ञानिक-ग्रंथों तथा वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दकोशों का निर्माण और विदेशी भाषाओं के वैज्ञानिक-ग्रंथों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने का कार्य भी आयोग को सौंपा गया।

आयोग ने अब तक अंग्रेजी के दो लाख शब्दों के हिन्दी पर्याय निश्चित कर लिए हैं। ये पर्याय भौतिकी, रसायन, गणित, कृषि, प्राणि-विज्ञान, विद्युत-इंजीनियरी, संचार-इंजीनियरी, इलेक्ट्रानिकी, भवन-निर्माण-सामग्री, भवन-निर्माण, राजमार्ग-इंजीनियरी, आयुर्विज्ञान, इतिहास, पुरातत्व, राजनीति, दर्शन, मनोविज्ञान, शिक्षा, समाज-विज्ञान, समाज-कार्य, सामाजिक-मनोविज्ञान, प्रशासन आदि के हैं। अन्तिम रूप से निश्चित इस शब्दावली को, भाषा की प्रकृति और व्याकरण के अनुसार आवश्यक परिवर्तन कर के, विभिन्न रूपों में विभिन्न भाषाओं में प्रयोग किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों का अनुवाद, संस्कृत धातुओं पर आश्रित शब्दों का लिप्यन्तरण और शेष शब्दों में भाषा-विशेष की उच्चारण-रीति के अनुसार आवश्यक ध्वन्यात्मक सुधार द्वारा यह प्रक्रिया और अधिक सरल बनाई जा सकती है।

उच्च शिक्षा के लिए हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को समृद्ध बनाना अपरिहार्य कर्त्तव्य है। शिक्षा का मानदंड उन्नत करने के लिए और इन भाषाओं को शिक्षा - माध्यम बनाने की दिशा में जो रचनात्मक काम हो रहे हैं—उनके लिए भी, इसकी अपरिहार्यता है। भारत सरकार ने पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम आरंभ किया है जिससे विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए आवश्यक साहित्य उपलब्ध कराया जा सके। आदर्श पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम में वर्तमान आवश्यकता की पूर्ति होनी चाहिए जिससे हिन्दी में शिक्षा-माध्यम परिवर्तन के लिए विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के अनुसार स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर की आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध कराई जा सकें और हिन्दी में संदर्भ ग्रन्थों की समृद्धि हो सके। अतः पहली आवश्यकता यह है कि प्रत्येक विषय में आवश्यक पुस्तकों का एक सेट शीघ्र तैयार हो जाए ; दूसरी आवश्यकता है कि प्रत्येक विषय में आवश्यक साहित्य की कमी को पूरा करने के लिए पुस्तकें तैयार और अनूदित कराई जाएं ; और अन्तिम आवश्यकता है कि निश्चित चरणों में संदर्भ ग्रन्थों आदि के निर्माण की सुचालित योजना तैयार की जाए। इतने वृहत् कार्यक्रम का संचालन, समुचित शैक्षिक मूल्यांकन, मार्ग-दर्शन और समन्वय के बिना संभव नहीं है। इस प्रयोजन के लिए जरूरी है कि विश्वविद्यालय और राज्य सरकारें अपना सहयोग प्रदान करें तथा संघ सरकार इस कार्यक्रम के विभिन्न पक्षों को समन्वित करे। पत्रिका के प्रस्तुत विशेषांक में, राष्ट्रीय महत्त्व के इस कार्य से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों की सूचना के लिए, पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों को प्रकाश में लाया गया है।

सरकार, अंग्रेजी से भारतीय भाषाओं में माध्यम परिवर्तन के लिए विभिन्न विषयों में ग्रंथों के अभाव को पूरा करना चाहती है। इसकी पूर्ति के लिए विभिन्न विषयों के ग्रंथों का अनुवाद करना होगा और मौलिक ग्रंथों की रचना करनी होगी। क्षेत्रीय भाषाओं के लिए विभिन्न राज्यों के विश्वविद्यालयों के विषय विशेषज्ञों की सहायता से ग्रंथ-निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया जा रहा है। केन्द्रीय सहायता कार्यक्रम के अधीन जिन ग्रंथों का निर्माण होगा उन्हें विश्वविद्यालयों में स्वीकार किया ही जाएगा। इस कार्य में विभिन्न विषयों की शब्दावली की आवश्यकता होगी। ऐसी शब्दावली का उद्देश्य मात्र भाषा में पढ़ाना नहीं होगा। इसका उद्देश्य यह होगा कि छात्र भाषा-विशेष में अध्ययन करने के बाद उस विषय की उच्चतम शिक्षा देश के दूसरे भाग में भी प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।

इस संदर्भ में आयोग द्वारा निश्चित शब्दावली सहायक होने के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण भी सिद्ध होगी। भारत-सरकार ने राष्ट्रीय पुस्तक-निर्माण योजना के अनुदान का

3 से 5 प्रतिशत भाग आयोग की शब्दावली का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुकूलन अथवा अंगीकरण से सम्बन्धित कार्य के लिए निश्चित किया है। भारत सरकार के तत्वावधान में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा जो शब्दावली निर्मित हुई है, वह हिन्दी शब्दावली मात्र नहीं है; यह शब्दावली अखिल भारतीय शब्दावली है। यदि समाज की नवरचना और राष्ट्रीय समृद्धि के लिए शिक्षा को प्रत्यक्ष और सशक्त साधन के रूप में प्रयुक्त करना है तो आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली विभिन्न विषयों, अनुसंधान और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान प्रसार का मार्ग प्रशस्त करेगी।

Editorial

Pan Indian Terminology

A common terminology in scientific and technical fields was not only a pre-requisite but also essential for national integration and for mobility of students, teachers and professional workers from the one of part of the country to another. This was emphasised in the conference of state officers incharge of development of Indian languages held in last September at New Delhi. The Union Minister of Education expressed that English was not understood by the students and when the teacher taught through mother tongue of the students, there would be questions in the class and the teacher was expected to master the subject fully and to study the subject in great depth.

The Commission for Scientific and Technical Terminology had convened the conference to discuss ways and means for adopting or adapting the terminology evolved by the Commission in the various Indian languages. The Commission was set up vide Presidential Order of April 27, 1960. It was directed that in preparing terminology clarity, precision and simplicity should be primarily aimed at and international terminology may be adopted or adapted in suitable cases; maximum possible identity should be aimed at in evolving terminology for all Indian languages; and suitable arrangements should be made for coordinating the efforts made at the Centre and the States for evolving terminology in Hindi and other Indian languages. In the field of science and technology there should, as far as possible be, uniformity in all Indian languages and the terminology should approximate closely to English or international terms; the Commission should supervise the work done by various agencies in this field and issue authoritative glossaries for use in all Indian languages. Ultimately, the Commission was entrusted with the work related to review of the work done so far in the field of scientific and technical terminology; formulation of principles relating to coordination and evolution of scientific and technical terminology in Hindi and other Indian languages; coordination of the work done by different agencies in the States in the field of scientific and technical terminology with the consent or at the instance of the State Governments concerned and approve glossaries for use in Hindi and other Indian languages as may be submitted to it by the concerned agencies; and to prepare standard scientific books using the new terminology evolved or approved by it and to prepare scientific and technical dictionaries and translation of scientific books from foreign languages into Indian languages.

The Commission has finalised the equivalents of two lac English terms in Hindi related to Agriculture, Mathematics, Physics, Chemistry, Zoology, Electrical Engineering, Communication Engineering, Electronics and Building Materials, Building Construction. Highway Engineering, Medical Science, History, Archaelogy, Political Science, Philosophy, Psychology, Education, Social Work, Social Psychology, Social Science, Administration etc. Suitable variations of the finalised terminology can be used in different Indian languages with necessary modifications according to the grammar and to suit the genius of the language concerned. The process can be simplified to the extent of translating the international terms, transcribing the terms derived from Sanskrit roots and writing the remaining terms with necessary phonological requirements according to the pronunciation in the language concerned.

The enrichment of Hindi and other Indian languages is essential for higher education and for improvement of standard of education. Constructive steps have to be taken to adopt them as media of instruction for higher education. The Government of India has launched the book production programme for providing essential literature in Hindi and other Indian languages for making them media of instruction at the university level.

An ideal programme of book production must fulfill the immediate requirement of changeover to Hindi and other Indian languages according to the syllabi of the universities for providing necessary books for the degree and postgraduate standards and to strive for enriching and making the Indian languages capable to become a library language. Therefore the first requirement is of swift arrangement for providing a set of necessary titles in each subject ; secondly, to prepare and translate books for filling up the gaps of necessary literature in each subject ; and lastly, a phasewise workable plan for production of reference works etc. The programme of such a magnitude cannot be carried out without proper academic evaluation, guidance and coordination. For this purpose it is essential that universities provide their co-operation, State Governments extend their collaboration and the Union Government coordinate the various aspects of the programme and avoid duplication of any kind. In the present number of this journal various activities connected with the book production programme have been highlighted for the information of all concerned with this task of national importance.

The Government proposes to fill up the gaps of books on different subjects, for a smooth change over from English to Indian languages. It is expected that with this objective in view, a large number of books will be translated and original books will be prepared. The targets of book production for the regional languages are being worked out in collaboration with the subject specialists of the different universities situated in different States. As the books produced under the centrally aided programme will invariably be prescribed in different universities, they will require the terminology of various subjects, not only with a view to teach the subject in a particular language, but also with the objective that after learning a particular subject in a particular language the students may pursue advanced courses of study in other parts of the country.

In this context the scientific and technical terminology finalised by the Standing Commission for Scientific and Technical Terminology will prove helpful, as well as valuable. The Government of India has decided that three to five percent of the grants under the national book production scheme may be used for adoption or adaptation of the scientific and technical terminology of the Commission into other Indian languages. Thus the terminology prepared under the auspicies of the Government of India by the Commission for Scientific and Technical Terminology does not provide terminology in Hindi only, but is the Pan-Indian terminology. If education has to be used as a deliberate and powerful instrument for social regeneration and to increase national prosperity, then the terminology prepared by the Commission can pave the way to the path of expansion of knowledge in different disciplines, advancement of research work and higher education.

National Programme for Education

By

Dr. T. Sen

Union Minister for Education

IN August, 1967, we had placed three main tasks before ourselves. The first was to consider the report of the Education Commission and to formulate a national policy on education. The second was to prepare a fairly long-term plan of educational development in the country based on the national educational policy ; and the third was to start a vigorous implementation of the programme of educational reconstruction, thus decided upon, by revising the old Fourth Plan which was then in its third year.

With regard to the first of these tasks, it may be recalled that the recommendations of the Education Commission, the Tenth Conference of State Education Ministers and the Committee of Members of Parliament on Education (1967) were considered and it was recommended that the Government of India should issue a Resolution on the National Policy on Education on the broad lines of the recommendations of the Central Advisory Board of Education. The Ministry of Education then discussed these proposals further in the Vice-Chancellors Conference held in September 1967, and in both Houses of Parliament. After all this nation-wide debate was over, taking into consideration all the different view points put before it, the Government of India finally issued a Resolution on the National Policy on Education. I believe that this was an essential step well taken and it will provide us with a broad compass to guide our efforts at educational reconstruction.

Long Term Plan

The second task which we had set before ourselves was to prepare a fairly long-term plan of educational development in the country spread over say, the next 15-20 years. Since the centre of gravity in educational planning is now being deliberately shifted to the State level, this effort has obviously to be done separately for each State and Union Territory, and then consolidated suitably for the country as a whole. The matter was taken up with all State Governments and the response has been very good. Steps have also been initiated in a number of States ; and although it has not been possible to make substantial progress due to several reasons, we hope to make better progress in the days ahead ; and with the cooperation of the States which is so generously coming forth, to complete this task before the end of the next year.

We could not make any progress with regard to the third task, namely, revision of the old Fourth Five Year Plan in the light of the recommendations of the Education Commission and to start implementing them, to the extent possible, from 1968-69 itself, this was due almost entirely to two factors beyond our control. The financial situation, both at the Centre and in the States was so difficult that the utmost we could do was to keep the old schemes going ; and even as we were grappling with this problem, the Planning Commission decided to scrap the old Fourth Five Year Plan itself and to direct that a new Fourth Five Year Plan should be prepared from 1969-70. All major programmes of educational development, therefore, had to be postponed to the next year.

Fourth Plan

As regards the most important item namely, the formulation of the Fourth Five Year Plan in Education, Report of the Steering Committee of the Central Planning Group proposed an outlay of Rs. 1300 crores in the public sector. This is only slightly more than the allocation made to education in the old Fourth Plan, namely Rs. 1210 crores. In the new Fourth Plan, however, a much larger allocation of about Rs. 1500-1600 crores will be needed because we have to work on a larger base, develop a more comprehensive programme and allow for a substantial increase in prices that has since taken place. Unfortunately, it was not possible to get this allocation and the actual allocation to education is only Rs. 809 crores.

This seems to be due to three main reasons. The first is that the total amount available for planned development is likely to be much smaller, mainly because the hard polititical decisions required to raise the necessary resources do not seem to be forthcoming. Secondly, higher priorities are being given to programmes of agricultural development, irrigation, power, industry and family planning ; and thirdly every sector in education-Central, Centrally-sponsored and State, seems to be contracting, for some reason or the other, Such a low allocation can only be disastrous to the future of education, especially because it has been estimated that the minimum amount needed for the inevitable expansion alone will be about Rs. 950 crores. Unless, therefore, we take proper steps right from now, it may not be possible to implement the National Policy on Education in a satisfactory manner.

In my opinion, therefore, we must do all we can to maximise the total investment in educational development. The Government of India will have to expand its Central sector. The State Government in their turn, will have to give a high priority to education and make as large allocations to it as possible. These should, under no circumstance, be less than about 10 per cent of the State. In addition, efforts, should also be made to raise the maximum contribution possible from other sources, such as local authorities, voluntary organisations and local communities.

Need to Economise

While I do plead for higher allocations, I must also emphasise another aspect of the problems, namely, the urgent necessity to reduce wastages and to economise costs. In education, we must learn to place a much greater emphasis on the returns, we obtain rather than on the investments we make. Poor as we are, and small as is the investment, we now make in educational development, we all know that there is a good deal of wasteful and ill effective expenditure even in the present system. Our rates of wastage and stagnation are high at all stages, and especially at the primary stage. The unit cost per student is often high because the institution of an uneconomic size or is wrongly located, or because no attempt has been made to try out alternative techniques of development and choose the one which would be most economic and effective.

It would, therefore, be a great thing if we can emphasise these aspects of the problem in the Fourth Five Year Plan and concentrate our efforts on reducing the ineffectiveness and waste which is writ large on every sector of our educational system.

Side by side, we must emphasise yet another aspect of educational development which has been comparatively neglected in the past, namely, the need to stress human effort rather than monetary investment. The programmes, I have in view in this context include : revision of curricula ; adoption of improved methods of teaching and evaluation ; improvement of textbooks ; production of instructional materials of high quality ; improvement of supervision ; and bringing the educational institutions closer to the community through programmes of mutual service and support. Even these programmes will need some investment in financial and physical terms, no doubt. But, this is comparatively limited and what they need most is hard original thinking and sustained and dedicated effort. How to provide these essential inputs and to emphasise these programmes is one of the major problems to be faced in the Fourth Plan.

Key to Success

I feel that the key to the success in this programme is the teacher. In the first three Five Year Plans teachers were not effectively involved in formulating and implementing educational plans. We must now make earnest efforts to do so. Side by side, we must take steps to improve their professional preparation, status and remuneration. I would like to draw attention to the fact that the problem of improving the salaries of school teachers has not yet been satisfactorily solved and that a determined effort will have to be made for this purpose in the Fourth Five Year Plan.

To the same end, we will have to adopt a broad-based and decentralised system of educational planning under which well-coordinated plans would be prepared at the institutional, district, State and national levels, strengthen institutions like the NCERT and the State Institutes of Education which are charged with the responsibility of academic improvement of education, involve selected university departments in improved programme of school education and generally strengthen educational administration.

I may refer to one more point about the Fourth Five Year Plan, namely the need to select some national programmes for intensive implementation. A national programme has been defined in the Government Resolution on the National Policy on Education, as programme of national importance in which coordinated action on the part of the Government of India and the State Governments is called for. Obviously, the national programmes to be implemented will vary from time to time and the State. It will be a responsibility of the Centre and the States to sit together and decide the national programmes to be implemented in each Five Year Plan. We shall have to attempt this exercise for the Fourth Five Year Plan ; and as a basis for consideration we might develop the following six national programmes over the next five year :—

1. Steps for the early fulfilment of the directive of Article 45 of the Constitution, with special emphasis on programmes for reducing wastage and stagnation ;
2. Qualitative improvement of higher education ;
3. Orientation of technical education at all stages to the needs of the economy ;
4. Science Education ;
5. Book Development programmes ; and
6. Schemes for promoting national integration including the National Service Programme.

National Integration

The third important item relates to the programmes of national integration. The National Integration Council has made a number of important recommendations at its Srinagar meeting held in June, 1968.

An important recommendation of the Council is that the entire educational system, from primary to post-graduate stage, should be reoriented to serve the purpose of creating a sense of Indianness, unity and solidarity, to inculcate faith in the basic postulation of Indian democracy and to help the nation to create a modern society. This will need an overhaul of curricula, textbooks and instructional materials at all stages.

The National Integration Council has also recommended that no domicile certificate should be required from any student seeking admission to an educational institution in any part of the country. This is of special significance in regard to admissions to engineering and medical colleges. I consider this to be a very important reform and all State Government must give immediate effect to it. As a simultaneous action on the part of all State Governments is needed, I would like to suggest that we should bring this recommendation into effect with effect from the next academic year which will begin in June, 1969.

The Council has emphasised the need to reduce regional imbalances. In so far as imbalances of educational development at

the State level are concerned, the Government of India has decided to give a special grant-in-aid to all backward States. This will mean, in practice, that 10 per cent of the available Central assistance, will be distributed, on some equitable basis, only among those States whose income per head of population is below the national average. This will not meet all the needs of the situation, but it can certainly be described as a good beginning. The state governments on their part, will have to reduce the imbalances at the district level, the imbalances between urban and rural areas, and the imbalances between different social groups. Appropriate programmes to this end will have to be included in their Fourth Five Year Plan.

Finally, the Council has suggested that we should take steps to promote the exchange of teachers and students and devise schemes under which students in one part of the country can spend their vacations on some useful programmes in other parts. A few concrete schemes for promoting national integration can be included in the Fourth Plan. Such schemes will be assisted by the Government of India although they will be implemented largely through the State Governments and the universities.

शिक्षा का राष्ट्रीय कार्यक्रम

डा० त्रिगुण सेन
केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री

अगस्त 1967 में हमारे समक्ष तीन प्रमुख कार्य थे । शिक्षा आयोग की रिपोर्ट पर विचार कर शिक्षा की राष्ट्रीय नीति पर आश्रित शिक्षा-विकास की एक दीर्घावधि-योजना का निर्माण; और चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का संशोधन कर, निश्चित शिक्षा-पुनर्गठन-कार्यक्रम का सशक्त कार्यान्वयन ।

इसी संदर्भ में शिक्षा-आयोग, शिक्षा-राज्य-मंत्रियों के दसवें सम्मेलन, और संसद-सदस्यों की शिक्षा-समिति (1967) की सिफारिशों पर विचार किया गया था और यह सिफारिश की गई कि शिक्षा-मंत्रालय, शिक्षा की केन्द्रीय सलाहकार समिति की सिफारिशों के आधार पर, शिक्षा की राष्ट्रीय नीति का प्रस्ताव प्रस्तुत करे । शिक्षा-मंत्रालय ने इन प्रस्तावों पर सितम्बर 1967 के कुलपति-सम्मेलन में भी विमर्श किया और संसद के दोनों सदस्यों में इस पर बहस हुई । इसके उपरान्त शिक्षा मंत्रालय ने शिक्षा की राष्ट्रीय नीति का प्रस्ताव उपस्थित किया ।

दीर्घावधि योजना

दूसरा कार्य 15-20 वर्षों की अवधि के लिए शिक्षा-विकास की योजना का निर्माण था । शिक्षा-योजना का केन्द्र-बिन्दु राज्यों में है । इस कारण प्रत्येक राज्य और संघ-शासित क्षेत्र की योजनाओं को सारे देश की उपादेयता की दृष्टि से समेकित करना होगा । इस दिशा में राज्यों की अच्छी प्रतिक्रिया हुई है । राज्यों के सहयोग से यह कार्य आगामी वर्ष में सम्पन्न हो सकता है ।

तीसरे कार्य में प्रगति नहीं हो पाई है । इसके दो कारण हैं, जो हमारे नियन्त्रण के बाहर हैं । देश की आर्थिक अवस्था, केन्द्र और राज्य दोनों स्तर पर इतनी विषम थी कि पुरानी योजनाएं किसी तरह चलाई जाती रहीं । दूसरे, योजना-आयोग ने चतुर्थ योजना को रोक दिया और नई चतुर्थ योजना को 1969-70 से आरम्भ करने का निश्चय किया ।

चतुर्थ योजना

योजना दल की विषय-निर्वाचन-समिति ने अपनी रिपोर्ट में चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत शिक्षा के लिए 1300 करोड़ रुपए की राशि नियत करने का प्रस्ताव किया था । पुरानी चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में यह राशि 1210 करोड़ रुपए थी । नई चतुर्थ योजना में शिक्षा के वृहत्

कार्यक्रमों और आवश्यकताओं को देखते हुए 1500—1600 करोड़ रुपए की धन-राशि की आवश्यकता होगी, लेकिन दुर्भाग्य से शिक्षा के लिए केवल 809 करोड़ रुपए की धन-राशि नियत हो सकी है।

इसके कई कारण हैं। राजनैतिक निश्चयों के कारण वांछित साधनों की उपलब्धि की आशा नहीं है। कृषि, सिंचाई, उद्योग, परिवार-नियोजन आदि को विशेष प्राथमिकता दी गई है। किसी-न-किसी कारण से, केन्द्र, केन्द्र प्रायोजित, तथा राज्य-स्तर के शिक्षा-सेक्टर संकुचित होते गये हैं। इतनी कम राशि नियत करने का शिक्षा के भविष्य पर कुप्रभाव पड़ेगा। क्योंकि शिक्षा के अपरिहार्य विकास के लिए 950 करोड़ रु० की आवश्यकता होगी और इस दिशा में अभी से उचित प्रयास करना होगा अन्यथा शिक्षा-नीति का कार्यान्वियन सन्तोषजनक नहीं पो पायेगा।

भारत-सरकार को अपने केन्द्रीय शिक्षा-सेक्टर का विस्तार करना होगा और राज्यों को शिक्षा-विषय को उच्च प्राथमिकता देनी होगी। राज्यों को कम-से कम-10 प्रतिशत व्यय शिक्षा पर अवश्य करना होगा।

मितव्ययता की आवश्यकता

खर्च कम करने और लागतों में मितव्ययता बरतने की भी बड़ी आवश्यकता है। जो लागत लगाई जाती है उसकी तुलना में उपलब्धि कितनी होती है, इस पर अधिक ध्यान देना चाहिए। वर्तमान प्रणाली में प्राथमिक स्तर पर बहुत अधिक अपव्यय है; प्रति छात्र इकाई-लागत बहुत अधिक होती है। इसलिए चतुर्थ योजना में यह विषय सर्वाधिक विचारणीय है कि अप्रभविष्णुता किस प्रकार दूर हो और अपव्यय से कैसे बचा जाए।

अतीत में शिक्षा-विकास की एक और समस्या पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया कि आर्थिक विनियोजन की अपेक्षा मानवीय प्रयास पर अधिक बल देना आवश्यक होता है। इस दिशा में, मेरे विचार में, ये कार्यक्रम हो सकते हैं: पाठ्य-क्रम का संशोधन, शिक्षण और मूल्यांकन के लिए विकसित प्रणालियों का अंगीकरण, पाठ्य-पुस्तकों का सुधार, उन्नत शिक्षण-सामग्री का निर्माण, निरीक्षण में सुधार तथा पारस्परिक सेवाओं और सहायताओं द्वारा शिक्षण-संस्थाओं को परस्पर निकट लाने का प्रयास आदि। इसके लिए भी विनियोजन की आवश्यकता पड़ेगी। लेकिन अपेक्षाकृत यह सीमित होगा और आवश्यकता वास्तव में होगी अनवरत और निष्ठापूर्ण प्रयास की।

सफलता का सूत्र

इस कार्यक्रम की सफलता का सारा उत्तरदायित्व शिक्षक पर है। पहली योजनाओं में शिक्षक को शिक्षा-योजनाओं के निर्माण और कार्यान्विति में प्रभावपूर्ण ढंग से सम्मिलित नहीं किया गया। अब हमें यह करना है और उनके कार्य, स्थिति और वेतन में भी सुधार करना है।

हमें इसके लिए शिक्षा-योजना की विशद और विकेन्द्रित प्रणाली अपनानी होगी; संस्थान, जिला, राज्य और राष्ट्र-स्तर पर सुसमन्वित योजना तैयार करनी होगी और केन्द्र और राज्य के संस्थानों में भी स्थिति सुदृढ़ करनी होगी।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में कुछ ऐसे राष्ट्रीय कार्यक्रम चुनने हैं जिन्हें पूरे प्रयत्न के साथ कार्यान्वित किया जा सके। ऐसे कार्यक्रम समय-समय पर परिवर्तित भी होते रहेंगे और केन्द्र तथा राज्यों को इनके सम्बन्ध में समय-समय पर समन्वित रूप से निर्णय करना पड़ेगा। आगामी पाँच वर्षों के लिए आधार के रूप में इन छः राष्ट्रीय कार्यक्रमों पर विचार हो सकता है:—

1. संविधान की धारा 45 के निदेशों की शीघ्र पूर्ति के लिए प्रयास।
2. उच्च शिक्षा में गुणात्मक उन्नति।
3. मितव्ययता की आवश्यकता के अनुसार प्रत्येक अवस्था में तकनीकी शिक्षा का नवीनीकरण।
4. विज्ञान-शिक्षा।
5. पुस्तकों के विकास के लिए कार्यक्रम।
6. राष्ट्रीय सेवा कार्यक्रम सहित राष्ट्रीय एकता की वृद्धि की योजनाएँ।

(**शेष पृष्ठ 40 पर**)

विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण सम्बन्धी नीति और कार्यक्रम*

प्रो० शेर सिंह
राज्य मंत्री, केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय

बड़े हर्ष का विषय है कि मध्यप्रदेश सरकार ने विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए एक बोर्ड की स्थापना की है और मुझे उसका उद्घाटन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। निस्संदेह यह कदम सही दिशा में उठाया गया है, फिर भी शिक्षा के इस संक्रान्ति काल में प्रत्येक कदम बड़ी सावधानी से रखना होगा।

राधाकृष्णन् आयोग से लेकर, जो कि स्वतंत्रता के तुरन्त पश्चात ही विश्वविद्यालय की शिक्षा के संबंध में नियुक्त किया गया था, शिक्षा से संबंधित प्रत्येक आयोग या समिति ने हमारी शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रादेशिक भाषाओं को अपनाने की सिफारिश की है। इस सुधार की सिफारिश के पीछे शिक्षा के स्तर को ऊंचा करने, बुद्धिजीवियों और जन-सामान्य के बीच की खाई को कम करने, ज्ञान का प्रसार करने, और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र करने का उद्देश्य रहा है। मेरे विचार से प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम स्वीकार करने के मूल में प्रधान प्रेरणा विभिन्न कमीशनों की सिफारिशें न होकर अधिकांशत: परिस्थितियों की माँग है। विगत 20 वर्षों में हमने देखा कि शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी वास्तव में विच्छिन हो गई है, इसके कई कारण हैं। यद्यपि विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम अधिकांशत: अभी अंग्रेजी ही है किन्तु वास्तविक स्थिति कुछ और ही है। देश के कम से कम 35 विश्वविद्यालयों में प्रादेशिक भाषा को माध्यम के रूप में प्रयुक्त करने की अनुमति है। लगभग 15 विश्वविद्यालयों में 90 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रादेशिक भाषा के माध्यम से पढ़ना स्वीकार किया है। 17 विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर पर ही प्रादेशिक भाषाओं को माध्यम के रूप में प्रयुक्त करने का विधान है। इस प्रकार वस्तु-स्थिति को देख-परख कर भी शिक्षा आयोग को यह कहना पड़ा कि परिवर्तन की इस अनिर्दिष्ट और तदर्थ गतिविधि को तुरन्त ही रोकना आवश्यक है क्योंकि शिक्षा के हित में यही श्रेयस्कर होगा। जिस प्रकार परिवर्तन हो रहा है उसके पीछे कोई सुनिश्चित योजना नहीं है; आवश्यक साहित्य के निर्माण का कोई प्रयत्न नहीं है तथा उच्च शिक्षा के स्तर को बनाये रखने का कोई कार्यक्रम नहीं है।

---

* मध्य प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित 'विश्वविद्यालयीन रचना अकादमी' के उद्घाटन-अवसर पर दिए गए भाषण के कुछ अंश।

विद्यालय की शिक्षा का माध्यम स्वीकार करने के संबंध में बल देते हुए 'शिक्षा की राष्ट्रीय नीति के संकल्प : 1968' में लिखा है···"प्रादेशिक भाषाएं शिक्षा के प्राथमिक स्तरों पर प्रयुक्त हो रही हैं। अब विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा में उनका प्रयोग करने के लिए हमें तत्काल कदम उठाना चाहिए।"

जैसा कि आप जानते ही हैं इस सिफारिश को कार्यान्वित करने के संबंध में सरकार के निर्णय की समाज के विभिन्न वर्गों ने आलोचना की है। यह परिवर्तन अशैक्षिक बताया गया है क्योंकि इस सुधार को गति और शक्ति प्रदान करने के लिए प्रादेशिक भाषाओं में पर्याप्त सामग्री नहीं है। इस परिवर्तन को एक ऐसा उपक्रम बताया गया है जो कि देश की एकता के लिए घातक होगा, क्योंकि इससे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के बीच भाषाई दीवारें खड़ी हो जाएंगी और एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के आने-जाने में बाधा उत्पन्न हो जायेगी। मुझे लगता है कि यह आलोचना बहुत उपयोगी है क्योंकि इससे हमारा ध्यान उन खतरों की ओर जाता है जिनका सामना हमें एक सुनिश्चित और सुनियोजित योजना के अभाव में करना पड़ जाएगा। इसीलिए आरम्भ में ही मैंने कहा है कि इस कार्यक्रम में प्रत्येक कदम बड़ी सावधानी से उठाया जाना चाहिए।

हम यह परिवर्तन किस प्रकार लायें ? इस कार्यक्रम के संबंध में हमारा मूल आधारभूत ध्येय उच्च शिक्षा का स्तर उठाने की ओर ध्यान केन्द्रित करना होना चाहिए। यह बात सबसे महत्त्वपूर्ण है। इसी ध्येय को ध्यान में रखकर शिक्षा आयोग ने इस बात पर बल दिया है कि प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाते समय परिवर्तन के कार्यक्रम में एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय अथवा एक विषय से दूसरे विषय अथवा एक ही विश्वविद्यालय में एक शिक्षा संस्थान से दूसरे शिक्षा संस्थान में भिन्नता हो सकती है। इस मामले में कसौटी यह होनी चाहिए कि परिवर्तन से प्रत्येक अवस्था में शिक्षा का स्तर समुन्नत हो। इस विवेक में ही प्रस्तुत सुधार की सफलता निहित होगी। इस प्रसंग में शिक्षा आयोग ने और आगे कहा है···"हम सुझाव देते हैं कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और देश के विश्वविद्यालयों के समूह के लिए उपयुक्त, एक साध्य और व्यवहार्य कार्यक्रम बहुत कुशलता से तैयार करना चाहिए।" सरकार ने इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया है। दूसरी आधारभूत बात, जिस पर इस कार्यक्रम के सिलसिले में विचार करना चाहिए, यह है कि प्रादेशिक भाषाओं को माध्यम के रूप में प्रयुक्त करने के साथ, अंग्रेजी के अध्ययन को भी मजबूत बनाना पड़ेगा। ऐसा करना शैक्षणिक दृष्टि से आवश्यक है। भारत में अंग्रेजी दो उद्देश्यों की साधक रही है : (1) इसने सारे देश में विश्वविद्यालय-स्तर पर सम्पर्क कायम करने का काम किया है, और (2) इसी ने हमारे लिए सभी विद्याओं से संबंधित विश्व के विशाल और निरंतर बढ़ते हुए ज्ञान के द्वार खोले हैं। अतएव जब तक हम अंग्रेजी और प्रादेशिक भाषाओं में घनिष्ट सहयोग स्थापित न करेंगे तब तक उच्च शिक्षा अपने नाम के अनुरुप नहीं हो पाएगी। चिन्ता का विषय यह है कि प्रादेशिक भाषाओं को माध्यम बनाने के प्रयास में अंग्रेजी का अध्ययन क्षीण होता जा रहा है या उसे समाप्त किया जा रहा है। यह हमें और पीछे नहीं तो अठारहवीं शताब्दी तक धकेल देगा। इस प्रसंग में राष्ट्रीय एकता परिषद् की एक सिफारिश आपके सामने दुहराना चाहता हूँ :

"परिषद् अनिवार्य विषय के रूप में अंग्रेजी के महत्व पर बल देती है, चाहे वह माध्यम परिवर्तन के दौरान की स्थिति हो अथवा वह भविष्य में परिवर्तन क्रिया पूरी हो जाने के बाद की स्थिति हो। परिवर्तन की अवस्था में अंग्रेजी विश्वविद्यालय के लोगों तथा विश्वविद्यालयों के बीच प्रोफेसरों के विनिमय अथवा विद्यार्थियों के एक से दूसरे विश्वविद्यालय में जाने में सहायक होगी और साथ ही सभी समय वह एक महान अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की भाषा के रूप में बाहरी दुनिया से हमारा सम्बन्ध बनाये रखेगी। इसके अतिरिक्त इस अपरिहार्य साधन से और आगे अध्ययन करने में तथा प्रादेशिक भाषाओं के विकास में सहायता मिलेगी। परिषद् को आशा है कि जहाँ एक ओर अंग्रेजी सभी समय अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क का

साधन बनेगी वहाँ एक अन्तर्देशीय सम्पर्क सूत्र के रूप में क्रमशः, उसका स्थान, विकसित होती हुई हिन्दी ग्रहण कर लेगी।"

तीसरी महत्वपूर्ण आवश्यकता सभी भारतीय भाषाओं में उपयुक्त साहित्य के प्रकाशन का एक विशाल कार्यक्रम तैयार करने की है। यह कार्य तो प्रथमतः विश्वविद्यालयों का ही है और इसके लिए केन्द्र साधन उपलब्ध करायेगा। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत आज मैं यहाँ प्रादेशिक भाषा में विश्वविद्यालय-स्तर की पुस्तकें तैयार करने के लिए स्थापित स्वायत्त बोर्ड का उद्घाटन करने के लिए उपस्थित हूँ। यहाँ हमें इस बात को भली-भाँति ध्यान में रखना चाहिए कि आप चाहे कितनी ही मात्रा में प्रादेशिक भाषाओं में साहित्य का निर्माण कर लें, वह हमारे विद्यार्थियों को विश्व के सतत वर्तमान ज्ञानपुंज से निरन्तर परिचित रखने में अभी असमर्थ रहेगा। इसलिए यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों में निर्धारित की गई प्रादेशिक पुस्तकों की हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित पुस्तकों से यथा आवश्यक प्रतिपूर्ति की जाए, और आवश्यक हो तो फ्रेंच, जर्मन, जापानी और स्पेनिश आदि दूसरी भाषाओं की पुस्तकों से भी लाभ उठाया जाए। इस पूरक पाठ्यसामग्री से उच्च स्तर बनाये रखने में सहायता मिलेगी।

भारत सरकार ने सभी भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय-स्तर पर साहित्य-निर्माण और प्रकाशन के लिये प्रत्येक राज्य को एक-एक करोड़ रूपये का अनुदान देना स्वीकार किया है। इसके लिये यह शर्त रखी गई है कि सम्बन्धित राज्य इस काम के लिये 25 प्रतिशत अंशदान स्वयं करें। इस प्रकार पाँचों हिन्दी राज्यों को साहित्य-निर्माण के कार्यक्रम के लिये लगभग छः करोड़ पैंसठ लाख रूपये उपलब्ध होंगे।

इस धनराशि का समुचित उपयोग हो सके, अनावश्यक पुनरावृत्ति को रोका जा सके और इस कार्यक्रम में भाग लेने वाली विभिन्न संस्थाओं के कामों में समन्वय बना रहे, इस विचार को ध्यान में रखकर 1-2 फरवरी सन् 1968 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषी राज्यों के शिक्षा सचिवों और विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का एक सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन के पूर्ण अधिवेशन द्वारा सामान्य रूप से यह स्वीकार किया गया कि स्नातक-स्तर के लिये 1973 तक आयुर्विज्ञान, इन्जीनियरी तथा कृषि सहित सभी संकायों में हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बना दिया जाना चाहिये।

साहित्य-निर्माण के काम में समन्वय करने और अनावश्यक पुनरावृत्ति को रोकने के लिए कुलपति-सम्मेलन ने एक स्थायी समिति का गठन किया जिसमें सभी सम्बन्धित विश्वविद्यालयों, राज्य सरकारों और केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि शामिल हैं। स्थायी समिति ने साहित्य-निर्माण से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण निश्चय लिये हैं और उनको क्रियान्वित किया जा रहा है। स्थायी समिति ने अनुवाद और मौलिक लेखन के लिये 25 विषय-नामिकायें गठित की हैं जिनमें पाँचों हिन्दी राज्यों के विषय-विशेषज्ञ शामिल हैं। इन विषय-नामिकाओं ने न केवल विश्वविद्यालय-स्तरीय उपलब्ध प्रकाशित साहित्य का सर्वेक्षण किया है, वरन् इस बात को ध्यान में रखते हुए कि माध्यम-परिवर्तन 1973 तक लागू होना है, अनुवाद और मौलिक लेखन के लिये हजारों पुस्तक-शीर्षकों का प्राथमिकता की दृष्टि से चयन किया है। इन पुस्तक शीर्षकों को सभी राज्य सरकारों और विश्वविद्यालयों के विभागाध्यक्षों के पास उनकी सम्मति और सुझाव प्राप्त करने के लिये भेज दिया गया है। विषय-नामिकाओं के अध्यक्षों की एक बैठक फरवरी में हो रही है, जिसमें प्राप्त सुझावों पर विचार किया जायेगा और इस बात का प्रयत्न किया जायगा कि पाँचों हिन्दी राज्यों के विश्वविद्यालयों और सम्बन्धित संस्थाओं में इस काम को इस प्रकार बाँटने का आयोजन हो कि कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक साहित्य का निर्माण हो सके। आशा की जाती है कि अभी हाल में को होने वाले हिन्दी राज्यों के शिक्षा सचिवों और कुलपतियों के सम्मेलन में इस काम को अन्तिम रूप दिया जा सकेगा।

स्थायी समिति ने समन्वय करने की दृष्टि से 'विश्वविद्यालय वाङ्मय' नाम से एक त्रैमासिक पत्रिका का

प्रकाशन आरम्भ किया है। इसके प्रथम अंक का प्रकाशन-उद्घाटन फरवरी में हो रहा है। इस अंक में न केवल पुस्तक-निर्माण सम्बन्धी अब तक की प्रगति का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है, वरन् इसमें उन हजारों विषय-शीर्षकों की सूची भी प्रकाशित की गई है जिनका निषय-नामिकाओं ने प्राथमिकता की दृष्टि से अनुवाद और मौलिक लेखन के लिये चयन किया है। यह निश्चय किया गया है कि यह सूचना अहिन्दी भाषी राज्य सरकारों और विश्वविद्यालयों को भी उनके लाभ और मार्गदर्शन के लिये उपलब्ध करा दी जाए।

इस काम को आरम्भ करने के लिये भारत-सरकार ने इस वर्ष हिन्दी भाषी राज्यों को उनकी माँग के अनुसार राजस्थान और बिहार सरकार को पाँच-पाँच लाख रूपया, हरियाणा और उत्तरप्रदेश को दो-दो लाख रूपया और मध्यप्रदेश को एक लाख रूपया दिया है। आशा है अनुवाद और मौलिक लेखन के लिये पुस्तक-शीर्षकों के पाँचों राज्यों में बँट जाने के बाद साहित्य-निर्माण का काम तेजी से आगे बढ़ सकेगा। अनुदित पुस्तकों के अनुवाद अधिकार प्राप्त करने का काम केन्द्रीय-सरकार के माध्यम से करने का निश्चय किया गया है। ऐसा होने पर अनुवाद अधिकार जहाँ शीघ्र प्राप्त होंगे, वहां पुनरावृत्ति के दोषों से भी बचा जा सकेगा।

उच्च शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य भाषायी व्यवधानों के पार जाना भी है। वर्तमान कार्यक्रम को लेकर अपने मार्ग पर आगे बढ़ते हुए इस महत्वपूर्ण उद्देश्य को निरन्तर सामने रखना है और वह उद्देश्य है हमारे देश की राष्ट्रीय एकता। शिक्षा का सच्चा उद्देश्य एकता को पुष्ट करना है, राष्ट्रीय तादात्म्य की भावना का बोध कराना है ताकि हम सदा एक होकर खड़े हों। अतएव प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के साथ-ही-साथ उच्च विद्याभ्यास के ऐसे संस्थानों की स्थापना भी आवश्यक है जो भाषा की दीवारों से परे उठ कर राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करें। इस प्रकार के अनेक संस्थान अभी भी मौजूद हैं और सरकार की नीति इनकी संख्या बढ़ाने और इन्हें परिपुष्ट करने की है। इन संस्थाओं में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी और हिन्दी भाषायें होंगी। इस बात का ध्यान रखा जायेगा कि उनमें प्रवेश पाने के सिलसिले में किसी भी भाषा-क्षेत्र के विद्यार्थियों को कठिनाई का अनुभव न हो।

मैंने यहाँ उच्च-शिक्षा के माध्यम-परिवर्तन से संबंधित कुछ मुख्य-मुख्य कार्यक्रमों की ही चर्चा की है। मेरा विश्वास है कि उन्हें आपके साथ-ही-साथ सारे शैक्षिक समुदाय का समर्थन प्राप्त है। मैं कामना करता हूँ कि आपके यत्न यशस्वी हों।

विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण कार्यक्रमों की झांकी

[भारतीय भाषाओं में पुस्तक-निर्माण के लिए भारत सरकार ने विश्वविद्यालयीन साहित्य-निर्माण कार्यक्रम को 18 करोड़ रुपये का अनुदान मंजूर किया है। इस योजना के अधीन भारत सरकार ने इस वर्ष 1 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। इसमें से अब तक 25 लाख रुपया विभिन्न राज्य सरकारों को अनुदान के रूप में दिया जा चुका है :—आन्ध्र प्रदेश को 10 लाख रुपये, राजस्थान और बिहार राज्य को क्रमश: 5-5 लाख रुपये, हरियाणा और उत्तर प्रदेश को क्रमश: 2-2 लाख रुपये तथा मध्य-प्रदेश को एक लाख रुपये का अनुदान दिया जा चुका है। इन राज्य सरकारों ने पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन कार्यक्रम को संगठित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए हैं और अनुवाद तथा मौलिक लेखन के लिए आवश्यक योजनाएं बना ली गई हैं। पाठकों की जानकारी के लिए इस शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न राज्यों में विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन कार्यक्रमों की रूपरेखा, प्रगति, और भावी कार्यक्रम की झांकी प्रस्तुत की जाया करेगी। इस अंक में प्रस्तुत है बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश राज्यों की पुस्तक-निर्माण की संक्षिप्त रूपरेखा—सं०]

बिहार पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन योजना

शिक्षा आयोग (1964-66) की सिफारिश थी कि **'विश्वविद्यालयों में शिक्षा और परीक्षाओं का माध्यम अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाएँ हों।'** राज्यों के शिक्षा मन्त्रियों के सम्मेलन (अप्रैल, 1967) में यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई और निश्चय किया गया कि इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्य-पुस्तकें तैयार की जाएँ। इसी राष्ट्रीय नीति का अनुसरण करते हुए तथा उक्त निश्चय को क्रियान्वित करने की दृष्टि से बिहार राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, शिक्षाविदों, अध्यापकों, शिक्षा विभाग के अधिकारियों एवं अन्य विषय-विशेषज्ञों ने उपलब्ध उच्चस्तरीय पाठ्य-पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद एवं मौलिक ग्रन्थों की रचना

के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया एवं निर्णय किया कि इस कार्य में राज्य सरकार और विश्वविद्यालयों के बीच समन्वय बनाए रखने के उद्देश्य से यह काम 'बिहार राज्य विश्वविद्यालय आयोग' को सौंप दिया जाए। राज्य-विश्वविद्यालय आयोग ने एक योजना तैयार की और राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा अन्तिम रूप में वह स्वीकार कर ली गई। इस योजना को आरम्भ करने के लिए भारत सरकार से पांच लाख रुपये का अनुदान भी मिल चुका है।

विश्वविद्यालय स्तर पर संगठन और व्यवस्था

राज्य में पाँच विश्वविद्यालय हैं तथा अध्ययन की जिन शाखाओं में अनुवाद कार्य किया जाना है वे इस प्रकार हैं :

(क)	मानविकी	में	30	पाठ्यक्रम	हैं
(ख)	विज्ञान	में	24	,,	,,
(ग)	वाणिज्य	में	30	,,	,,
(घ)	आयुर्विज्ञान	में	42	,,	,,
(ङ)	इन्जीनियरी	में	75	,,	,,
(च)	विधि	में	39	,,	,,
(छ)	कृषि	में	33	,,	,,
(ज)	पशुचिकित्सा-विज्ञान	में	36	,,	,,
	कुल संख्या		309		

यह देखते हुए कि 309 विषयों में अनुवाद कार्य किया जाना है यह एक विशाल उपक्रम है।

पाठ्य-पुस्तकों का अनुवाद

प्रत्येक विषय के लिए अलग-अलग एकक होंगे और उसमें एक रीडर तथा 2 से 4 तक प्राध्यापक होंगे। ये सभी व्यक्ति कालेजों व विश्वविद्यालयों से डेपूटेशन पर लिये जायेंगे। ये व्यक्ति विषय-विशेषज्ञ होने के साथ-साथ हिन्दी ज्ञाता भी होंगे। इस योजना के अन्तर्गत किये गए अनुवादों के पुनरीक्षण के लिए विश्वविद्यालय के हिन्दी विशेषज्ञों का एक अलग पूल होगा। इन सभी प्राध्यापकों को विश्वविद्यालय से मिलने वाले वेतन के अलावा अनुवाद के लिए प्रति 300 शब्द 3.50 रुपए तथा पुनरीक्षण के लिए प्रति 300 शब्द 2-00 रुपए के हिसाब से अतिरिक्त मानदेय दिया जाएगा।

राज्य विश्वविद्यालय आयोग प्रत्येक एकक को अनुवाद के लिए एक-एक विषय देगा। इसके बाद सम्बन्धित एकक अपने विषय की पुस्तकों की एक सूची तैयार करके आयोग के अनुमोदनार्थ प्रस्तुत करेगा। आयोग विषय नामिकाओं द्वारा पुस्तकों की सूची का अनुमोदन प्राप्त करेगा और तत्पश्चात सम्बन्धित एकक को उनका अनुवाद करने के लिए प्राधिकृत करेगा। इन अनुवादों को प्रकाशन के लिए देने से पहले राज्य का विश्वविद्यालय आयोग इनका अन्तिम रूप से पुनरीक्षण करेगा।

मौलिक लेखन

इस योजना के अन्तर्गत, हिन्दी में अनुवाद के साथ-साथ, उच्चस्तरीय मौलिक पुस्तकें तैयार करने का काम भी राज्य के विश्वविद्यालय आयोग द्वारा शुरु किया जायेगा। बिहार सरकार ने श्रेष्ठ ग्रन्थों की रचना को ध्यान में रखकर लेखकों को 15 प्रतिशत रायल्टी देने का निश्चय किया है। आयोग विभिन्न विषयों की पुस्तकें तैयार कराने का काम विभिन्न विश्वविद्यालयों के अधिकारी विद्वान प्राध्यापकों द्वारा करायेगा।

प्रथम वर्ष का कार्यक्रम

इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए पहले वर्ष के अन्दर 50 अनुवाद एकक और हिन्दी-विशेषज्ञों का एक अलग पूल खोलने का निश्चय किया गया है। आयोग इसकी व्यवस्था शीघ्र कर रहा है। ज्यों-ज्यों इस योजना का कार्यक्षेत्र बढ़ता जायेगा, त्यों-त्यों आगामी वर्षों में अनुवाद एककों की वृद्धि की जाती रहेगी और यह क्रम अगले पांच वर्ष तक चलेगा।

राजस्थान पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन योजना

राजस्थान सरकार ने विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तकों के निर्माण और प्रकाशन के लिए एक विशेष संगठन बनाने का निश्चय किया है जिसका नाम 'राजस्थान ज्ञान-विज्ञान

हिन्दी रचना संस्थान' रखा गया है। यह एक स्वायत्त संस्था के रूप में काम करेगा तथा राज्य के तीनों विश्वविद्यालयों (बी. आई. एस. टी.) और महाविद्यालयों का सक्रिय सहयोग भी प्राप्त करेगा। इसके प्रबन्ध के लिए एक प्रबंधक-मंडल की योजना बनाई गई है जो राजस्थान सरकार के मार्ग-दर्शन में काम करेगा। इस संस्थान को आवश्यक वित्तीय और प्रशासनिक अधिकार प्राप्त होंगे ताकि दैनिक कार्यों में इनके कारण कोई रुकावट न पड़ने पाए। राज्य के शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष होंगे तथा कुलपति, राज्य के विशिष्ट शिक्षाविद और वित्त एवं शिक्षा मंत्रालय के पदाधिकारियों सहित इसके 17 सदस्य होंगे। संस्थान का वास्तविक प्रबंध एक कुलपति की देख-रेख में एक कार्यसमिति करेगी। समिति के सदस्य विभिन्न विषयों की 5 क्षेत्रवार विशेषज्ञ समितियों के संयोजक होंगे। संस्थान का कार्यालय जयपुर में रखने का प्रस्ताव है। प्रोफेसर के वेतनमान में एक सुयोग्य शिक्षाविद कार्यालय का प्रधान होगा और प्रशासन की देखरेख भी वही करेगा। पहले कुछ कर्मचारियों की नियुक्ति करके काम प्रारभ किया जाएगा और बाद में यथास्थिति प्रति-नियुक्ति द्वारा कर्मचारियों को नियुक्त किया जाएगा। इस बात पर विशेष ध्यान रखा जाएगा कि कार्यालय का व्यय यथासंभव संस्थान के कुल बजट के 10 प्रतिशत से अधिक न हो।

संस्थान पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन प्रकार की पुस्तकें तैयार कराएगा—

(1) मौलिक ग्रंथ निर्माण
(2) मानक ग्रंथों का अनुवाद
(3) संदर्भ ग्रंथों एवं विश्वकोशों का निर्माण

हिन्दी में उच्चतर मौलिक पुस्तकें लिखवाने के लिए सभी तरीके काम में लाए जाएँगे।

इसके लिए पूर्ण-कालिक लेखकों की नियुक्ति की जायेगी।

विद्यालयों और महाविद्यालयों के अध्यापकों को पारिश्रमिक देकर पुस्तकें लिखाई जायेंगी, और—

उत्तम रचनाओं की प्रतियोगिताएं आयोजित करके मौलिक पुस्तक लेखन को प्रोत्साहन दिया जायेगा।

लगभग 500 पृष्ठ की 450 पुस्तकें प्रकाशित करने का प्रस्ताव है। इन पुस्तकों के अतिरिक्त हिन्दी में शोध-पत्रिकाओं तथा कुछ मानक-ग्रन्थों के अनुवाद प्रकाशित करने का भी विचार है। सोचा जा रहा है कि इन रचनाओं और पत्रिकाओं को विश्वविद्यालय प्रेसों द्वारा ही मुद्रित कराया जाए। अतएव इन प्रेसों की कार्यक्षमता बढ़ाने के हेतु पुस्तक-निर्माण के लिए नियत राशि में से ही कुछ राशि दी जा सकती है। प्रकाशन कार्य या तो संस्था करेगी अथवा आवश्यकतानुसार निजी प्रकाशकों द्वारा करायेगी।

संक्षेप में, संस्थान द्वारा पुस्तक-निर्माण एवं प्रकाशन कार्यक्रम की मोटी रूपरेखा इस प्रकार है—

(1) **स्नातक स्तर की रचनाएं**—स्नातक स्तरीय पुस्तक-निर्माण के बारे में योजना है कि हर विषय में लगभग 6 मानक पाठ्य-पुस्तकें एक वर्ष के अन्दर प्रकाशित कर दी जाएं। इसके साथ ही विभिन्न विषयों में विद्वान लेखकों द्वारा इसी स्तर के उत्कृष्ट मौलिक ग्रंथों की रचनाएं भी कराई जाएँ। इन रचनाओं को निजी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित कराना सुविधाजनक होगा।

(2) **स्नातकोत्तर स्तर की रचनाएं**—इस स्तर की पुस्तकों के लिए अपेक्षाकृत अधिक प्रोत्साहन अपेक्षित होगा। अतः विचार है कि वांछित कोटि के हिन्दी ज्ञाता एवं विषय-विशेषज्ञों के अभाव में पहले मूलतः अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, जापानी तथा हिंदीतर भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तकों के अनुवाद तैयार कराए जाएं। कापी-राइट की दृष्टि से प्रथमतः पुस्तकालय-भाषाओं में से अधिकांश अनुवाद कराने लाभकर होंगे।

(3) **संदर्भ-ग्रंथ एवं विश्वकोश**—इस प्रकार की रचनाओं के लिए दीर्घकालीन योजाएं बनानी होंगी। इस संबंध में विचार-विमर्श चल रहा है।

(4) **अनुसंधान-कार्य**—ज्ञान-विज्ञान की सतत प्रगति के वर्तमान युग में पुस्तकालय भाषाओं (जैसे अंग्रेजी, रूसी) की शोध पत्रिकाओं का अनुवाद प्रकाशित करना अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण काम है। फिर भी हिन्दी में शोध पत्रिकाएं प्रकाशित करते हुए उच्च कोटि के मौलिक शोध लेखों को

प्राथमिकता दी जाएगी। इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि शोध लेखों का प्रकाशन अनिवार्य रूप से एकाधिक भारतीय भाषा में किया जाए। इसके अलावा राजस्थान सरकार का यह भी विचार है कि हिन्दी में कुछ शोध-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ किया जाए और उसमें प्रकाशित शोध लेखों का सारांश भी अन्य भारतीय भाषाओं तथा कुछ पुस्तकालय भाषाओं में साथ-साथ दे दिया जाए।

डाक्टरेट की उपाधि के लिए जो शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत होंगे यदि वे अंग्रेजी भाषा में हैं, तो उनका सारांश हिन्दी भाषा में भी होना चाहिए—राजस्थान विश्व-विद्यालय ने हाल में ही ऐसा निर्णय लिया है। अतः ऐसे प्रत्येक शोध-प्रबंध का सारांश आवश्यक रूप से हिन्दी में सुलभ होगा।

निःसन्देह मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान आदि विषयों की अपेक्षा विज्ञान तथा तकनीकी विषयों में हिन्दी पुस्तकों के निर्माण का कार्य धीमी गति से होगा, क्योंकि इन विषयों के विशेषज्ञों में हिन्दी-ज्ञाताओं का सर्वथा अभाव है। किन्तु शुद्ध तकनीकी विषयों के हिन्दी ज्ञाता विशेषज्ञ जहां कहीं भी सुलभ होंगे उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जायेगा तथा प्रकाशकों को भी इस दिशा में प्रोत्साहन दिया जायेगा।

राजस्थान सरकार अनुवाद कराते समय इस बात का सतत ध्यान रखेगी कि किसी पुस्तक का दुहरा अनुवाद न हो और इसके लिए हिन्दीभाषी राज्यों से बराबर सम्पर्क रखा जायेगा।

आशा है पुस्तक-निर्माण के इस राष्ट्रीय महायज्ञ में राजस्थान सरकार का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और राष्ट्र की शिक्षा नीति के लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक होगा।

मध्य प्रदेश पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन योजना

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के निर्माण और प्रकाशन के लिए मध्यप्रदेश सरकार ने एक स्वायत्त संस्था "विश्वविद्यालयीन रचना अकादमी" की स्थापना की है। इसका विधिवत उद्घाटन अभी हाल में भारत सरकार के शिक्षामन्त्रालय में राज्य मन्त्री प्रो० शेरसिंह द्वारा 22 जनवरी 1969 को भोपाल में किया गया। उनका उद्घाटन भाषण इसी अंक के पृष्ठ 12 पर दिया गया है। इस अवसर पर शब्दावली आयोग द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री और शिक्षा-मन्त्री श्री गोविन्द नारायणसिंह ने किया। अकादमी में एक प्रबन्धक मंडल की व्यवस्था की गई है जिसके अध्यक्ष राज्य के शिक्षा मंत्री होंगे। उनके अतिरिक्त इसमें शिक्षा सचिव, वित्त सचिव, राज्यों के सभी विश्वविद्यालयों के कुलपति, कालेजों के शिक्षा-निदेशक तथा 5 शिक्षाविद् और एक भाषाविद् होंगे। काम को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक कार्यसमिति का गठन किया गया है जिसका अध्यक्ष अनिवार्य रूप से मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालय का एक कुलपति होगा और इस समिति का अध्यक्ष पद प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों के कुल-पतियों द्वारा बारी-बारी से ग्रहण किया जाएगा।

कार्य समिति में कार्य समिति के सदस्य, अकादमी के निदेशक और 5 विषय-विशेषज्ञ हैं। ग्रन्थ-निर्माण के लिए अकादमी में निम्न विशिष्ठ एककों की योजना बनाई गई है :

(1) मानविकी (2)सामाजिक विज्ञान (3) मूलभूत विज्ञान (4) व्यावहारिक विज्ञान (5) आयुर्विज्ञान (6) संदर्भ-सूची रचना आदि।

प्रत्येक एकक के दो उपविभाग होंगे। एक मौलिक लेखन और दूसरा अनुवाद।

मानविकी में ग्रन्थ निर्माण का काम एक पुस्तक के लिए एक विशिष्ठ विशेषज्ञ को सौंपा जाएगा और इस बात का प्रयत्न किया जाएगा कि वह ही पूरी पुस्तक लिखे। लेखक को रायल्टी के साथ-साथ एक मुश्त पारि-श्रमिक देने की व्यवस्था भी है।

मानविकी की ऐसी पुस्तकें जो हिन्दी को छोड़कर अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं और जो अपने विषय में शास्त्रीय मानी जाती है, को लिखने का काम लेखकों के मंडलों द्वारा करवाया जाएगा जिसमें एक विषय का विशेषज्ञ होगा, दूसरा भाषाविद् होगा और तीसरा अंग्रेजी

विषय का जानकार। तकनीकी पुस्तकों को लिखने का काम भी एक लेखक को सौंपा जाएगा। वह चाहे तो पुस्तक-निर्माण के काम में अन्य व्यक्ति से भी सहायता ले सकता है। मूलभूत विज्ञान की पुस्तक को विषय के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों से लिखवाया जाएगा। वैज्ञानिक और तकनीकी पुस्तकें लिखवाने का काम लेखक मंडल द्वारा किया जाएगा जिसमें अलग-अलग अध्याय अलग-अलग लेखकों द्वारा लिखे जाएँगे। इस प्रकार की पुस्तकों को लिखने के लिए अलग-अलग अध्यायों के लेखकों को पारिश्रमिक दिया जाएगा, रायल्टी नहीं।

इसके अतिरिक्त अकादमी विशिष्ट विषयों पर उच्च-स्तर की पाण्डुलिपियाँ प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिता का मार्ग अपनायेगी और सर्वोच्च पाण्डुलिपि को पारिश्रमिक देकर प्रकाशित करेगी।

इस प्रकार लिखी हुई पाण्डुलिपियों के पुनरीक्षण के लिए एक पुनरीक्षक समिति बनाने का आयोजन किया गया है जो पाण्डुलिपियों को भाषा और विषय की दृष्टि से पुनरीक्षित करेगी और इसके बाद पाण्डुलिपि का पुनरीक्षण एक अखिल भारतीय विशेषज्ञ मंडल द्वारा करवाया जाएगा जिससे उसमें और अधिक सुधार हो सके। जहाँ तक पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण का सम्बन्ध है अकादमी ने निश्चय किया है कि यथासंभव इन पाण्डुलिपियों का प्रकाशन प्राइवेट प्रकाशकों द्वारा करवाया जाए। इस काम के लिए प्रकाशन जगत के ख्याति प्राप्त और उच्च स्तर के प्रकाशकों का चयन कोटेशन माँग कर किया जाएगा और जिनको अकादमी के प्रकाशक भी मनोनीत कर दिया जाएगा। अकादमी प्रकाशकों को पाण्डुलिपि देकर उसका मुद्रण करेगी और उसका खर्चा वहन करेगी अथवा पाण्डुलिपि की रायल्टी लेकर प्रकाशन के लिए अकादमी उसे प्रकाशक को सौंप देगी। इस रायल्टी में 15 प्रतिशत लेखक की रायल्टी भी शामिल है। अकादमी ने प्रति वर्ष पुस्तकों के निर्माण के लिए 20 लाख रुपये की व्यवस्था की है।

विभिन्न विषयों में पुस्तकें लिखने की योजना अकादमी ने बनाई है। प्रस्तावित पुस्तकों की विषयवार सूची नीचे दी गई है :

विषयवार पुस्तक-सूची

क. मानविकी और सामाजिक-विज्ञान :

विषय	संख्या
दर्शन	6
इतिहास	12
अर्थ-शास्त्र	15
राजनीति विज्ञान	15
सांख्यिकी	6
लोक-प्रशासन	15
वाणिज्य	20
समाज विज्ञान	10
भूगोल	16

ख. विज्ञान :

विषय	संख्या
गणित	12
भौतिकी	24
रसायन	26
भूविज्ञान	10
वनस्पति विज्ञान	15

ग. व्यावहारिक विज्ञान :

विषय	संख्या
आयुर्विज्ञान	4
भेषज विज्ञान	4
पशुचिकित्सा-विज्ञान	4

विश्वविद्यालयों में साहित्य-निर्माण की प्रगति

[हिन्दी भाषी राज्यों के विश्वविद्यालय उच्च-स्तरीय पुस्तकों के निर्माण और प्रकाशन में बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। इस खंड के अन्तर्गत 'वाङ्मय' के पाठकों की जानकारी के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा पुस्तक-निर्माण सम्बन्धी काम का ब्यौरा प्रस्तुत किया जाया करेगा। इस अंक में कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तर प्रदेश एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा पुस्तक-निर्माण सम्बन्धी अब तक उठाए गये कदमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है—सं०]

कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तर प्रदेश की पुस्तक-निर्माण योजना

भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश राज्य सरकार, द्वारा यह निर्णय लेने के पश्चात कि विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ होनी चाहिए, कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तर प्रदेश ने यह निश्चय किया है कि यहां पर शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी से हिन्दी में 1971 तक बदल जाना चाहिए।

शिक्षा-माध्यम के परिवर्तन के लिए यह आवश्यक होगा कि हिन्दी में तथा सम्बद्ध प्रादेशिक भाषाओं में विभिन्न तकनीकी विषयों पर पाठ्य पुस्तकों का निर्माण, अनुवाद और प्रकाशन किया जाए। कार्यक्रम के तीन मुख्य अंग ये हैं :

1. मानक पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण,
2. मानक पाठ्य-पुस्तकों का भारतीय भाषाओं की प्रवृत्ति के अनुसार अनुवाद और अनुकूलन, और
3. हिन्दी में मौलिक पुस्तक-लेखन।

कार्यक्रम को शीघ्रतापूर्वक क्रियान्वित करने में मुख्य कठिनाइयां हैं : (क) तकनीकी विषय-विशेषज्ञों का अभाव जिन्हें उन दोनों भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान हो जिसमें तथा जिससे पुस्तक का अनुवाद किया जाना है, (ख) पूर्ण-कालिक अनुसंधान या अध्यापन-स्टाफ को अनुवाद कार्य करने के लिए समय का अभाव, (ग) वस्तुगत सुविधाओं, यथा संदर्भ पुस्तकें, आशुलिपिक अथवा डिक्टाफोन, टंकक आदि का अभाव, और (घ) संगठन का अभाव।

उपरोक्त कार्यक्रम को तेजी से क्रियान्वित करने के लिए

यहाँ एक स्वयंपूर्ण 'अनुवाद और प्रकाशन निदेशालय' स्थापित किया गया है जिसके कर्मचारियों की सूची आगे तालिका में दी गयी है।

इस विश्वविद्यालय ने कृषि के विभिन्न विषयों में निम्न पुस्तकें लिखने की योजना बनाई है :

1. कृषि ···38
2. पशु चिकित्सा ···15
3. मूलभूत विज्ञान और मानविकी की पुस्तकें जिनका कृषि में उपयोग होता है ···12

विश्वविद्यालय ने यह भी निश्चय किया है कि आरंभ में कृषि और पशु-चिकित्सा के सम्बन्ध में अनुवाद और लेखन का काम विश्वविद्यालय ही करे। इस विश्वविद्यालय का सुझाव है कि कृषि के अन्य विषयों के लिए इसी प्रकार के केन्द्र अन्य विश्वविद्यालयों में स्थापित किए जाएँ। प्रथम वर्ष में इस कार्यक्रम के लिए 24 लाख रुपए की व्यवस्था की गई है।

अनुवाद और प्रकाशन निदेशालय के प्रस्तावित कर्मचारियों की सूची निम्न प्रकार है :

पद	पद संख्या	वेतनमान
निदेशक	1	1100-1600 रु० और साथ में 250 रु० मासिक विशेष वेतन
सह निदेशक	2	750-1250 रु०
अनुवादक (प्रवर वेतनमान)	10	400-950 रु०
अनुवादक (अवर वेतनमान)	10	300-550 रु०
वरिष्ठ लेखा-लिपिक	1	200-400 रु०
हिन्दी आशु-लिपिक	13	160-320 रु०
हिन्दी टंकक	10	120-220 रु०
डाक-वाहक	2	60-80 रु०

इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित उच्चस्तरीय पुस्तकें

(क) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग से अनुवाद के लिए विश्वविद्यालय के तदर्थ अनुवाद ब्यूरो को निम्नांकित पुस्तकें प्राप्त हुई, जो तैयार हो चुकी हैं :

	पुस्तक	लेखक	अनुवादक
1.	Principles of Electricity	Page & Adam	Dr. H.C. Khare
2.	Historical Geography of Ancient India	Dr. B. C. Law	Shri R. K. Dwivedi
3.	A Treatise of Differential Equations	A. R. Forsyth	Shri R. C. Gupta
4.	An Introduction to Remannian Geometry and Tensor Calculus	Weatherburn	Dr. R. S. Misra
5.	Theory of Legislation	J. Bentham	Sri B. N. Mani

(ख) **शिक्षा विभाग :**

निम्नांकित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और स्नातक-पूर्व कक्षाओं के लिए उनकी सिफारिश की गई है :

1. भारतीय शिक्षा सिद्धान्त ··· डा० एम० बी० अडवाल
2. महान पाश्चात्य शिक्षा-शास्त्री ··· डा० एस० के पाल
3. भारतीय शिक्षा दार्शनिक ··· डा० के० डी० सेठ

4. शिक्षा के सिद्धान्त और आधार ... श्री एल० एन० गुप्त
5. महान भारतीय शिक्षा शास्त्री ... ,,
5. महान पाश्चात्य शिक्षा-शास्त्री ... ,,
7. शिक्षा-शास्त्री ... ,,

(ग) दर्शन विभाग :

इस विभाग के प्राध्यापकों ने अपने व्यक्तिगत परिश्रम से निम्नलिखित विषयों पर स्नातक-स्तर की पुस्तकें प्रकाशित की हैं :

1. पाश्चात्य दर्शन
2. नीति शास्त्र
3. भारतीय दर्शन
4. दर्शन की सामान्य पुस्तकें

(घ) संस्कृत विभाग :

इस विभाग के तत्वावधान में नीचे दिए हुए ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद/मौलिक ग्रंथ प्रकाशित किए जा चुके हैं :

अनूदित पुस्तकें

	पुस्तक	लेखक	अनुवादक
1.	History of the Dharmashastra	P.V. Kane	Arjun Chaube
2.	History of Sanskrit Literature	A.B. Keith	Mangal Deo Shastri
3.	Sanskrit Drama	—do—	Dr. Udai Bhan Singh
4.	History of Indian Literature Vol. 1	M. Winternitz	L. Rai
5.	History of Sanskrit Literature	A.A. Macdonell	Charu Chandra Shastri
6.	Vedic Religion and Mythology	A.B. Keith	Dr. Surya Kanta
7.	Vedic Mythology	A.A. Macdonell	—do—
8.	Vedic Index	Macdonell and Keith	Ramkumar Rai
9.	Sanskrit Language	T. Burron	Dr. B.S. Vyas
10.	Original Sanskrit Texts	J. Muir	R. K. Rai
11.	A Concise History of Sanskrit Literature	G.N. Shastri	—do—
12.	Indian Philosophy	Radhakrishnan	Dr. H.C. Joshi
13.	Grammar of Prakrits	Pischel	Dr. I.C. Shastri
14.	History of Sanskrit Poetics	P.V. Kane	Dr. Bhatt and Chaudhury
15.	Indian Philosophy	Hiriyanna	Dr. Ram Kumar
16.	Indian Wisdom	M. Williams	Dr. Ram Kumar
17.	A New History of Sanskrit Literature	Krishna Chaitanya	V. K. Rai
18.	Comparative Philology	Dr. P.D. Guna	Dr. B. N. Tiwari
19.	Higher Sanskrit Grammar	Kale	Dr. K. D. Dwivedi
20.	Linguistic Survey	George Grierson	Dr. U.N. Tiwari
21.	Guide to Sanskrit Composition	Apte	R.K. Shukla

मौलिक रचनाएँ

1. भारतीय दर्शन ... कृष्ण चैतन्य
2. सामान्य भाषा-विज्ञान ... डा० बाबूराम सक्सेना
3. अर्थ-विज्ञान ... डा० बाबूराम सक्सेना
4. सांख्य-दर्शन की ऐतिहासिक परम्परा ... डा० ए० पी० मिश्र

5. भारतीय साहित्य शास्त्र ... डा० जी० डी० देशपांडे
6. भारतीय साहित्य शास्त्र ... प्रो० बलदेव उपाध्याय
7. संस्कृत आलोचना ... प्रो० बलदेव उपाध्याय
8. आयुर्वेद का इतिहास ... अत्रिदेव विद्यालंकार
9. पालि साहित्य का इतिहास ... भरत सिंह उपाध्याय
10. प्राकृत साहित्य का इतिहास ... डा० जे० सी० जैन
11. व्याकरण शास्त्र का इतिहास ... युधिष्ठिर मीमांसक
12. बुद्धदर्शन मीमांसा ... प्रो० बलदेव उपाध्याय
13. बुद्धदर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन ... डा० पी० सिंह
14. रस सिद्धान्त ... डा० नगेन्द्र
15. ध्वनि सिद्धान्त ... डा० बी० एस० व्यास
16. संस्कृत सुकवि शिक्षा ... प्रो० बलदेव उपाध्याय
17. पालि महा व्याकरण ... भिक्षु जगदीश कश्यप
18. सांख्य-दर्शन का इतिहास ... उदयवीर शास्त्री
19. सांख्य-योग धारणा का जीर्णोद्धार ... एच० एस० जोशी
20. योग वाशिष्ठ और उसके सिद्धान्त ... बी० एल० अत्रे
21. चार्वाक् दर्शन की समीक्षा ... डा० एस० एन० पाठक
22. पुराण विमर्श ... प्रो० बलदेव उपाध्याय
23. अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन ... डा० के० डी० द्विवेदी
24. भारतीय दर्शनशास्त्र ... डा० देवराज
25. भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान ... डा० एच० एल० जैन
26. भारतीय संस्कृति का विकास ... डा० एम० डी० शास्त्री
27. भाषा तत्व और वाक्यपदीय ... डा० एस० के० वर्मा
28. संस्कृत के संदेश काव्य ... डा० आर० के० आचार्य
29. संस्कृत नीति कथा का उद्गम और विकास ... डा० पी० एन० कवेथकर
30. आचार्य दंडी ... डा० जे० एस० त्रिपाठी
31. रस सिद्धान्त और सौंदर्य-शास्त्र ... निर्मल जैन
32. संस्कृत साहित्य का इतिहास ... वी० गैरोला
33. वैदिक योगसूत्र ... एच० एस० जोशी
34. वैदिक साहित्य और संस्कृति ... प्रो० बलदेव उपाध्याय
35. श्री शंकराचार्य ... प्रो० बलदेव उपाध्याय
36. संस्कृत के गीतिकाव्य का विकास ... पी० एन० शास्त्री
37. भारतीय संस्कृति और साधना ... म० गोपीनाथ कविराज

(च) प्राचीन इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग :

यह विभाग प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हिन्दी में अध्यापन और उच्च कोटि का अनुसंधान कार्य कर रहा है। जिन शाखाओं में विभाग ने विशेष कार्य किया है वे इस प्रकार हैं —प्रागितिहास,

मूल इतिहास (proto history), पुरातन लिपि, सिक्काशास्त्र, वास्तुकला, शिल्पकला, मूर्तिकला, चित्रकला, बृहत्तर भारत, प्राचीन राजनीतिक सिद्धांत और संस्थाएँ, धर्म और दर्शन, प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्राचीन जगत की प्रमुख संस्कृतियाँ आदि।

इस विभाग के कार्यकर्त्ता सदस्यों में उपर्युक्त शाखाओं के ऐसे विशेषज्ञ विद्वान उपलब्ध हैं जो हिन्दी भाषा में मानक ग्रंथों के निर्माण के लिए निर्धारित कार्यक्रम के अन्तर्गत अभीष्ट प्रायोजनाओं का कार्य अपने हाथ में ले सकते हैं।

विभाग के सदस्यों के कुछ उपयोगी हिन्दी प्रकाशन नीचे दिए जा रहे हैं :—

1. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास	गोविन्द चन्द पांडे (इस समय राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में इतिहास और भारतीय संस्कृति के प्रोफेसर हैं)
2. प्राचीन भारत में नगर तथा नगर-जीवन	डा० उदयनारायण राय
3. हमारे पुराने नगर	डा० उदयनारायण राय
4. विश्व सभ्यता का इतिहास (323 ई० पू० से 476 ई० तक)	(उक्तकालीन विस्तृत विवरण दिया गया है)
5. भारतीय संस्कृति	डा० बी० एन० एस० यादव तथा डा० लल्लनजी गोपाल
6. पौराणिक धर्म एवं समाज	डा० एस० एन० राय
7. प्राचीन भारतीय भूगोल	डा० बी० सी० लॉ की प्रसिद्ध पुस्तक Ancient Indian Geography का यह हिन्दी अनुवाद श्री आर० के० द्विवेदी ने किया है

पिछले कुछ वर्षों में इस विभाग के निम्नलिखित विद्वानों ने हिन्दी भाषा में लिखे अपने शोध-प्रबन्धों पर इस विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि प्राप्त की :

1. डा० रणजीत सिंह	(शोध-प्रबंध : धर्म की हिन्दू अवधारणा)
2. डा० (कु०) गीता देवी	(शोध-प्रबंध : उत्तरी भारत में शिक्षा पद्धति-600 ई० से 1200 ई० तक)
3. डा० राजछत्र मिश्र	(शोध-प्रबंध : अथर्ववेदकालीन संस्कृति)

विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम के लिए नीति-निर्देश

[विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन के लिए भारत सरकार ने सभी राज्यों के मार्ग-दर्शन के लिए टिप्पणी के रूप में नीति-निर्देशक सुझाव तैयार किये हैं। यह मार्ग निर्देशक टिप्पणी केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार मण्डल ने 11 अक्तूबर 1968 को अपनी 34वीं बैठक में स्वीकार कर ली है। इस टिप्पणी में यह सूचित किया गया है कि अनुदान का 10-12% भारतीय भाषाओं के माध्यम से अध्यापन के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण पर व्यय किया जाना चाहिए और इस राशि का 3 से 5% तक भारतीय भाषाओं में शब्दावली के अनुकूलनार्थ रखा जाना चाहिए। इस मार्ग-निर्देशक नोट में पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन के बारे में विशद रूप से चर्चा की गई है और विभिन्न राज्य सरकारें पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन के कार्यक्रमों को बनाने में आधारभूत सामग्री के रूप में इस टिप्पणी की सहायता ले रही हैं। मार्ग-निर्देशक टिप्पणी में शिक्षा-माध्यम को भारतीय भाषाओं में परिवर्तित करने के लिए जो कार्यक्रम सामने रखे गए हैं उनमें से मुख्य हैं: पुस्तक-निर्माण, शिक्षक-अभिविन्यास तथा शब्दावली को अन्तिम रूप देना। पाठकों के लाभ के लिए इस टिप्पणी की सूचना संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत की जा रही है—सं०]

माध्यम-परिवर्तन के लिए सभी भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का निर्माण और प्रकाशन करने के लिए 18 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। इस काम के लिए भारत सरकार प्रत्येक राज्य सरकार को एक-एक करोड़ रुपये का अनुदान दे रही है। अनुदान देने की शर्त यह है कि पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन कार्यक्रम के लिए राज्य सरकारें 25% अंशदान करें और 75% अनुदान भारत सरकार दे। अनुदान प्राप्त करने के लिए भारत सरकार को अब तक राज्य सरकारों से जो प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं वे केवल पुस्तकों के अनुवाद एवं ग्रन्थ-रचना के सम्बन्ध में ही हैं। इन प्रस्तावों में शब्दावली अनुकूलन अथवा शिक्षकों के अभिविन्यास के लिए कोई

व्यवस्था नहीं सुझाई गई है। नीति-निर्देशक टिप्पणी में यह सुझाव दिया गया है कि इस कार्यक्रम के अधीन होने वाले व्यय का 85 प्रतिशत पुस्तक-निर्माण एवं अनुवाद कार्य के लिए रखा जाए, 10 से 12 प्रतिशत तक अध्यापकों के प्रशिक्षण एवं अभिविन्यास के लिए तथा 3 से 5 प्रतिशत तक भारतीय भाषाओं में शब्दावली अनुकूलन के लिए रखा जाए। जहां तक हिन्दी-भाषी राज्यों का सम्बन्ध है उन्हें शब्दावली के लिए कुछ भी खर्च नहीं करना है क्योंकि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली को वे उसी रूप में ग्रहण कर सकते हैं। इस प्रकार हिन्दीभाषा-भाषी राज्यों में उपलब्ध निधियों में से लगभग 85 प्रतिशत राशि हिन्दी में मानक ग्रन्थों के निर्माण, अनुवाद और प्रकाशन कार्य में और शेष 15 प्रतिशत राशि अध्यापकों के प्रशिक्षण और अभिविन्यास सम्बन्धी योजना पर व्यय की जा सकती है।

इस टिप्पणी में यह सुझाव दिया गया है कि अपनी पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन योजनाओं में जिन राज्यों ने शब्दावली को अन्तिम रूप देने तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं अभिविन्यास के लिए व्यवस्था नहीं की है वे अपनी योजनाओं को इस दिशा में उचित रूप में संशोधित कर लेंगे तथा जो राज्य अभी योजनाएं तैयार कर रहे हैं वे भी इन दोनों प्रयोजनों के लिए उपयुक्त व्यवस्था करेंगे।

कार्यक्रम के क्रियान्वयन की व्यवस्था

यद्यपि वर्तमान योजना मुख्य रूप से विश्वविद्यालयों एवं उच्चतर शिक्षा के संस्थानों द्वारा ही क्रियान्वित की जाएगी, तथापि यह निर्णय किया गया है कि कार्यक्रम के अधीन दी जाने वाली सहायता राज्य सरकारों के माध्यम से ही दी जाएगी। इसलिए अपने क्षेत्राधिकार के विश्वविद्यालयों एवं कार्यक्रम में भाग लेने वाले संस्थानों के बीच निधियों के वितरण की प्रक्रिया राज्य सरकारों द्वारा ही निर्धारित की जाएगी।

प्रत्येक राज्य सरकार इस कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था करेगी। यह निर्णय राज्य सरकारों को ही करना है कि ऐसी व्यवस्था का भार किसी राज्य संगठन के हाथ में दिया जाए अथवा किसी स्वशासी निकाय को सौंपा जाए? केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय की इच्छा है कि इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन की व्यवस्था किसी गैर-सरकारी स्वशासी संगठन के हाथ में हो; क्योंकि विश्वविद्यालयों के साथ, समन्वयन का कार्य गैर-सरकारी स्वशासी संगठन ही अच्छी प्रकार कर सकते हैं।

इस प्रकार के संगठन को आवश्यकतानुसार अधिक से अधिक सलाहकार समूहों और समितियों (इसमें विषय नामिकाएं भी सम्मिलित हैं) की सलाह से काम करना चाहिए।

राज्य सरकारों द्वारा स्थापित ऐसे संगठनों के लिए आवश्यकतानुसार कर्मचारी-वर्ग की व्यवस्था भी करनी होगी। चूंकि वर्तमान कार्यक्रम अस्थायी है और भारत सरकार द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय-स्तरीय साहित्य के अभाव की पूर्ति के लिए यह संचालित किया जा रहा है इसलिए यह आवश्यक है कि कर्मचारी वर्ग में कम से कम किन्तु सक्षम व्यक्ति रखे जाएं। इस संगठन की कार्य-प्रणाली भी व्यावहारिक होनी चाहिए। विभिन्न राज्यों से प्राप्त प्रस्तावों की जांच करने के बाद, केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय का यह विचार बना है कि इस प्रकार के संगठन का प्रशासन-व्यय किसी भी दशा में योजना के अधीन होने वाले कुल व्यय के 5 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।

विषयवार एकक एवं उनके पृथक्-पृथक् कार्य

महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि अनुवाद और चुनी हुई पुस्तकों के लेखन का कार्य कौन करेगा? कुछ राज्य सरकारों ने विषय एककों (प्रत्येक एकक में दो लेक्चरर, एक रीडर और एक भाषाविद्) की स्थापना का सुझाव दिया है। केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय इस कार्य प्रणाली को न तो व्यावहारिक मानता है और न ही इसे मितव्ययी समझता है। प्रथम तो, हमारे विश्वविद्यालयों में सक्षम अध्यापकों की पहले से ही कमी है और इस प्रकार

बहुसंख्यक अध्यापकों को अपने सामान्य कर्तव्य से विलग करने से शिक्षा के स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा । दूसरे, यह कार्य अस्थायी किस्म का होने के कारण इस के लिए विशिष्ट सेलों व एककों में बहुत-सी नियुक्तियों की व्यवस्था करने से निहित स्वार्थ एवं अन्य प्रशासकीय समस्याएं उत्पन्न हो जाएंगी । इस सम्बन्ध में शिक्षा मन्त्रालय का सुविचारित मत यह है कि अनुवाद और लेखन-कार्य के लिए पारिश्रमिक की अनुमोदित दरों के आधार पर चुने हुए विश्वविद्यालयों के अध्यापकों की वैयक्तिक अथवा सामूहिक सेवाएं प्राप्त की जाएं । इस प्रकार के पारिश्रमिक की दरें उन-उन राज्यों अथवा विश्वविद्यालयों में लागू वर्तमान दरों के समतुल्य होनी चाहिए । स्वाभाविक रूप से ये दरें भिन्न-भिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न होंगी । मन्त्रालय यह भी समझता है कि ऐसी स्थिति में जहां कार्य कठिन हो, और उसके निष्पादन में विशिष्ट अनुभव की अपेक्षा हो, पारिश्रमिक की दरों को आकर्षक बनाने की आवश्यता होगी । ऐसे मामलो में लेखकों और अनुवादकों को उदारता के साथ अच्छा पारिश्रमिक देने की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए । जहां आवश्यक हो, इस कार्य के लिए चुने हुए अध्यापकों को छुट्टी आदि की सुविधाएं भी दी जानी चाहिए ।

राज्य संस्था के सम्बन्ध में उपर्युक्त चर्चा मुख्य रूप से अनुवाद और विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण को दृष्टि में रख कर की गई है । किन्तु मन्त्रालय का विश्वास है कि जहां स्वतन्त्र अथवा अधिक उपयुक्त संगठन पहले से विद्यमान न हों, वहां राज्य की भाषा में मानक शब्दावली को अन्तिम रूप देने तथा हिन्दी-माध्यम द्वारा पढ़ाने के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण और अभिविन्यास का कार्य भी इसी संगठन को सौंपना हितकर होगा ।

राज्य भाषा संस्थान

कुछ राज्य सरकारों ने यह विचार व्यक्त किया है कि वे विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण का कार्य अपने भाषा-संस्थानों को देना चाहते हैं । जहाँ व्यवस्था पूर्ण सन्तोषजनक हो, वहाँ इस प्रस्ताव के विरुद्ध शिक्षा-मंत्रालय को निश्चित ही कोई आपत्ति नहीं होगी । किन्तु यह स्मरणीय है कि राज्य भाषा संस्थानों की योजना, राज्य का अपना क्षेत्रीय कार्यक्रम है, अत: केन्द्र से उसे केवल 40 प्रतिशत सहायता ही मिल सकती है । इसके विपरीत, वर्तमान योजना केन्द्र-संचालित कार्यक्रम के अन्तर्गत है, अत: इसको 75 प्रतिशत सहायता दी जा सकती है । यदि वर्तमान कार्यक्रम को क्रियान्वित करने का उत्तरदायित्व राज्य भाषा संस्थान को सौंपा जाएगा तो वर्तमान कार्यक्रम के लिए सारा हिसाब-किताब अलग रखना आवश्यक होगा ।

पुस्तकों का मुद्रण, प्रकाशन और विक्रय

प्रत्येक राज्य संगठन चुनी हुई पुस्तकों को सरकारी या निजी प्रेसों में छपाकर प्रकाशित करेगा । ऐसे प्रेसों का चुनाव उनकी इस प्रकार के कार्य करने की क्षमता एवं दरों की तुलनात्मकता के आधार पर किया जाना चाहिए । जहाँ इस प्रकार का कार्य करने वाली कोई सहकारी संस्था हो (उदाहरणार्थ, मैसूर राज्य में इस प्रकार की एक संस्था मौजूद है), वहाँ यह कार्य उसके द्वारा करवाया जा सकता है ।

किसी पुस्तक के प्रत्येक संस्करण की कितनी प्रतियां छपाई जायें इसका निश्चय कम से कम आगामी 4-5 वर्षों की माँग को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिए । जहाँ तक किसी हिन्दी-भाषी राज्य का संबंध है उसे अन्य हिन्दी-भाषी राज्यों की माँग को दृष्टि में रखते हुए ही इस संख्या का फैसला करना होगा । इसका अर्थ है कि कुछ स्थितियों में न्यूनतम मुद्रणादेश संख्या 10,000 या उससे भी अधिक हो सकती है । ऐसी प्रत्येक पुस्तक के शीर्षक के नीचे वर्तमान योजना का नाम स्पष्ट रूप से उल्लिखित होना चाहिए । इन पुस्तकों का मूल्य भी, 'न-लाभ न-हानि' अथवा अल्प-लाभ के आधार पर, उचित रखा जाना चाहिए ।

जहाँ तक संभव हो, राज्य सरकारों और इस प्रयोजन के लिए राज्यों द्वारा स्थापित इन संगठनों को पुस्तकों के

विक्रय और वितरण का कार्य सीधे अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए। अतीत में इस प्रकार की व्यवस्था प्रायः असफल रही है। पुस्तकों के विक्रय और वितरण का कार्य यदि निजी प्रकाशकों को उचित शर्तों पर दे दिया जाए तो यह अधिक मितव्ययी और प्रभावशाली होगा। किन्तु जहाँ समुन्नत सरकारी अथवा अर्ध-सरकारी विक्रय-एजेंसियां मौजूद हों और संतोषजनक रीति से कार्य कर रही हों तो उन्हें यह काम सौंपा जा सकता है।

आवर्तक निधि की स्थापना

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण शर्त यह है कि सम्बद्ध विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम के अधीन निर्मित पुस्तकों को अपने पाठ्यक्रम के अन्तर्गत निर्धारित करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं। इससे इन पुस्तकों की बिक्री सुनिश्चित हो जाएगी। ऐसी स्थिति में 'न-लाभ न-हानि' के आधार पर यदि इन पुस्तकों का मूल्य रखा जाए तो भी, सम्पूर्ण व्यय-राशि न सही, उसका एक अच्छा-खासा अंश कालान्तर में वसूल होने की आशा की जा सकती है। अगर 10 प्रतिशत तक का अल्पलाभ उपार्जित करना स्वीकार किया जाए तो भी वर्ष-प्रति-वर्ष यह प्राप्ति थोड़ी-थोड़ी करके बढ़ती रहेगी। इस दृष्टि से प्रत्येक राज्य सरकार एक आवर्तक निधि की स्थापना करें ताकि वर्तमान की ही नहीं अपितु भावी आवश्यकताओं की पूर्ति भी इस प्रारंभिक निवेश से ही हो सके। इस प्रसंग में आन्ध्र प्रदेश का उल्लेख किया जा सकता है जिसने इस प्रकार की आवर्तक निधि की स्थापना कर ली है।

पुस्तक-निर्माण कार्यक्रमों का समन्वयन

इस निवेश से उत्तमोत्तम परिणाम प्राप्त करने के उद्देश्य से विभिन्न राज्यों के कार्यक्रमों में तालमेल लाना आवश्यक होगा। इस उत्तरदायित्व को मुख्य रूप से शिक्षा मंत्रालय स्वयं वहन करेगा।

शिक्षा मंत्रालय समय-समय पर विभिन्न राज्यों में हुई प्रगति की सूचना को एकत्र करके सभी के मार्ग-दर्शन के लिए प्रस्तुत किया करेगा।

जहाँ तक हिन्दी भाषी राज्यों का प्रश्न है अलग से एक समन्वय समिति इस काम के लिए बना दी गई है। इसमें हिन्दी भाषी राज्यों के शिक्षा विभागों और विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि भी शामिल हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग इस समिति के सचिवालय के रूप में काम कर रहा है। हिन्दी भाषी राज्यों और उनमें स्थित विश्वविद्यालयों को यह सलाह दी जाती है कि वे समन्वय समिति से बराबर सम्पर्क रखें।

केन्द्र से वर्तमान योजना के अन्तर्गत सहायता और अनुदान मांगते समय राज्यों के प्रस्तावों में निम्नलिखित सूचना होनी आवश्यक है :

(1) योजना को क्रियान्वित करने के लिए प्रस्तावित संगठन के बारे में विस्तृत जानकारी।

(2) प्रशासनीय कर्मचारियों की विस्तृत जानकारी (इस बारे में पूरी सावधानी बरती जाए कि प्रशासन पर कुल खर्च का 5 प्रतिशत से अधिक खर्च न हो)।

(3) लेखकों, अनुवादकों और पुनरीक्षकों के पारिश्रमिक की दरें।

(4) मौलिक रूप से लिखी जाने वाली अथवा अनूदित होने वाली पुस्तकों के निर्माण की विस्तृत जानकारी और उनके अनुमान।

(5) सम्बन्धित भाषा में वैज्ञानिक, तकनीकी तथा दूसरे विषय की मानक शब्दावली को अन्तिम रूप से तैयार करने के लिए उठाए गए आवश्यक कदमों की विस्तृत जानकारी और अनुमान (शब्दावली को अंतिम रूप से तैयार करने का समय 9-12 महीने से अधिक नहीं होना चाहिए, नहीं तो साहित्य-निर्माण का पूरा काम रुक जाएगा)।

(6) अध्यापकों के प्रशिक्षण और अभिविन्यास के कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी और अनुमान।

(7) स्वीकृत पुस्तकों के प्रकाशन, विक्रय और वितरण से संबंधित विस्तृत जानकारी।

(8) आवर्त्तक निधि के लिए उठाये गये कदम।

(9) कार्यक्रम के अन्तर्गत निर्मित पुस्तकों को विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्वीकृति/मान्यता प्राप्त करने के लिये उठाये गये आवश्यक कदम ।

(10) किसी राज्य सरकार द्वारा अन्य कोई प्रस्ताव जिसके बारे में केन्द्रीय सरकार से मार्ग-दर्शन प्राप्त करना है ।*

---

* नीति-निर्देश टिप्पणी की विस्तृत जानकारी के लिए संलग्न परिशिष्ट 'क' देखें ।

Guidelines for the formulation of State Programmes for the production of University level books in different Indian Languages

(This is a note prepared by the Ministry of Education for providing guidelines, under the centrally sponsored scheme "Production of literature in Indian languages as media of instruction at university stage" in the Fourth Five Year Plan).

THE Education Commission (1964-66) recommended that the Indian languages should be adopted as media of education at the university stage. This recommendation was successively approved by the State Education Minister's Conference (April, 1967), Members of Parliament Committee on Education (July, 1967) and Vice-Chancellors' Conference (September, 1967). The National Policy on Education (1968) also emphasises the need for adopting Indian languages as the media of education at the university stage. To quote from the Resolution: "The regional languages are already in use as media of education at the primary and secondary stages. Urgent steps should now be taken to adopt them as media of education at the university stage."

2. In order to implement the policy decision to change from English to the Indian languages as the media of education at the university stage, the Government of India have decided to assist the State Governments to the extent of one crore of rupees each during the five year period beginning from 1968-69. Under this scheme, assistance will be given to the State Governments on the basis of 75 per cent of approved expenditure, the remaining 25 per cent being the responsibility of the State Governments. It will thus be open to a State Government to incur a total expenditure of Rs. 1.33 crores—1 crore to be contributed by the Centre and 33 lakhs by the State Government—for this purpose during the five year period in question.

Effective Implementation of the Programme

3. The effective implementation of the programme to change-over to Indian languages will depend principally upon the following four conditions:

(a) A sufficient number of standard books and other reference literature must be available in the Indian languages as early as possible. The programme should cover not only translation of standard works but also original writing of books. In fact the emphasis should be on original writing.

(b) The production of standard books and other reference literature will, in turn, depend upon the finalisation of standard terminology in different languages in scientific, technical and other subjects. A review of the present position of terminology in different languages was made at a recent meeting of the State Language Officers (see Annexure 'B' on page 36). It transpired that many states have not so far taken concretesteps to adopt/adapt the terminology evolved by the Commission for Scientific and Technical Terminology. This should be done immediately so that writers and translators do not find it difficult to complete their assignments for want of standard terminology.

(c) To ensure effective use of books and literature to be produced under the scheme, it is necessary that the concerned universities prescribe them for approved courses at the undergraduate and post-graduate levels.

(d) Since the success of the entire programme for effecting the proposed change-over to the Indian languages will depend on the support and cooperation of the teachers, it is necessary to make adequate arrangements for their training and orientation for this purpose.

Expenditure on Book Production, Teachers' Orientation and Finalisation of Terminology

4. So far, the proposals received from

the State Governments have only been in terms of translation or original writing of books. No provision has been suggested either for the finalisation of terminology or for the training and orientation of teachers. It is suggested that of the total expenditure to be incurred under this programme, some 85% may be set apart for translation and production of books ; 10 to 12 per cent for the training and orientation of teachers ; and 3 to 5 per cent for the finalisation of terminology in the language concerned. In the case of Hindi-speaking States, no expenditure need be incurred on terminology, for they can readily adopt the terms evolved by the Commission for Scientific and Technical Terminology. In their cases, therefore, some 85 per cent of the funds might go into the production and translation of standard books in Hindi and the remaining 15 per cent or so into the training and orientation of teachers.

5. It is hoped that states which have not so far provided for the finalisation of terminology, training and orientation of teachers will revise their proposals suitably. The other states which have yet to formulate their proposals may wish to make suitable provision for these two purposes.

Machinery for implementing the Programme

6. Although the main implementing agencies of the present scheme will be the universities and other institutions of higher learning, it has been decided that assistance under the programme will be channelled through the State Governments. It will be for the State Governments to lay down suitable procedures for making funds available to the universities and other participating institutions within their jurisdiction.

7. Each State Government will have to set up a suitable machinery for implementing the scheme. Whether the required machinery should be a Government organisation or an autonomous body is a matter primarily for each State Government to decide. Ministry's own preference is for non-government autonomous organisations. A non-government organisation will, among other things, be more suitable for coordinating work with the universities which are autonomous organisations.

8. As an example of the kind of organisation to be considered, mention may be made of the autonomous organisation called "Rajasthan Gyan Vigyan Hindi Rachana Sansthan" set up by the Government of Rajasthan. The organisation has a Board of Management of 17 members of which the State Education Minister is the Chairman. There is a 5 member executive committee to attend to the day to day work of the organisation. For the technical guidance of the organisation, the State Government has proposed five specialist committees. (The details of the scheme are given on page 35 at Annexure A.)

9. Another example of an autonomous organisation is provided by the Maharashtra Government which has established the Maharashtra Universities' Book Production Board to consist of the following :—

1. Vice-Chancellor, Bombay
2. Vice-Chancellor, Nagpur
3. Vice-Chancellor, SNDT
4. Vice-Chancellor, Poona
5. Vice-Chancellor, Marathwada
6. Vice-Chancellor, Shivaji (Kolhapur)
7. Vice-Chancellor, Krishi Vidyapeeth (Bombay)
8. A representative of the Department of Education, Maharashtra State.
9. A representative of the Ministry of Education, Government of India.

10. The organisation should have available to it the advice of as many advisory groups or committees including subject penels as may be found necessary.

11. The organisation to be set up by a State Government will have to be given necessary administrative staff. Since the present programme is of a temporary nature and is being sponsored by the Central Government only to fill the existing gaps in the university level literature in different languages, it is necessary that the staff to be appointed should be *competent* and *minimum*. The approach here has to be functional. A good example of this approach is provided by the proposal of the Maharashtra Government. To quote from a communication from that Government : "The office of the Bureau should have the necessary administrative staff comprising of one office Superintendent in the grade of

Rs. 300-20-500 and one accounts Clerk, one Senior Clerk, and one Typist-clerk.

Suitable provision will also have to be made for contingent expenditure and for travelling and other allowances of the administrative staff.

12. On a careful examination of the proposals received from the different States so far the Ministry is of the view that expenditure on administration should in no case exceed 5 per cent of the total expenditure under the scheme.

Separate Subject cells or individual job assignments

13. An important question is : Who will translate or write the selected books ? Some State Governments have suggested the establishment of subject cells, each cell to consist of, say, two Lecturers, one Reader and a Linguist. The Ministry does not consider this approach to be functional or economical. In the first place, our universities and institutions are already short of competent teachers and to displace a large body of teachers from their normal teaching responsibilities will adversely affect instructional standards. Secondly, since this work is of a temporary nature, to create a large number of positions in special cells or units for the purpose, may create vested interests and other administrative problems later. Ministry's considered view is that it would be far better to farm out translation and writing assignments individually or jointly to selected university teachers on the basis of approved rates of remuneration. These rates in each State should be in conformity with the prevailing rates of that State or of its universities. Naturally the rates will vary from State to State. However, the Ministry does foresee the need to make the prevailing rates more attractive in those cases where the assignment is extremely difficult and may require the services of teachers or scholars with special experience. In such cases it should be possible to remunerate the authors or translators on a more liberal basis. Also where necessary, leave or any other special facilities required by the selected teachers should be granted to them.

14. The foregoing discussion of this State machinery is principally from the point of translation and production of university level original books. But the Ministry believes that where independent or more suitable organisations are not already in existence, the responsibilities for the finalisation of standard terminology in the language of the State and for the training and orientation of teachers to teach in the language of the State could also be entrusted to this machinery.

State Language Institutes

15. Some State Governments have suggested that they would prefer to entrust the production of university level books to their Language Institutes. Where this is considered to be the most satisfactory arrangement, the Ministry would surely have no objection to such a proposal. However, it should be recalled that the scheme of State Institutes of Languages is in the State Sector and is eligible only for 40 per cent assistance from the Centre. The present scheme, however, is in the centrally sponsored sector and is eligible for 75 per cent assistance. In case the responsibilities for implementing the present programme are entrusted to the State Language Institute, it will be necessary to maintain separate accounts for the present programme.

Publication and Sales of Books

16. Each State machinery will publish selected books by assigning the job to Government or private presses. Presses should be selected for their suitability for the job and for the competitiveness of their rates. Preference in job assignment may be given to a cooperative society where such an organisation exists, as in Mysore.

17. For each edition of a book, the number of copies should be determined after taking into consideration the demand for at least a period of 4-5 years. A Hindi State will have to be guided by the requirements of the other Hindi States in addition to those of its own. This means that in some cases the minimum print order may be 10,000 or more. Under the title of each book there should be a clear inscription of the name of the present scheme under which it is brought out. The books should be reasonably priced on a no-profit-no-loss basis or with a marginal profit only.

18. As far as possible, the State Governments or the organisations to be set up for the purpose are advised not to undertake the responsibility of sales and distribution of books directly. Such arrangements have rarely succeeded in the past. It would be far more economical and effective to associate private publishers on suitable terms with the sales and distribution of books. However, where well-developed Government or semi-government sales agencies are already in existence and are functioning satisfactorily, these could certainly be associated.

Creation of a Revolving Fund

19. One of the conditions mentioned above for the success of the entire programme is that the concerned universities will take steps to prescribe the books produced under this programme. This will guarantee sales. Even if the books are priced on a no-profit-no-loss basis, a good part of it, if not the entire expenditure, can be expected to be recovered in due course. If a little profit of say 10% is allowed, the receipt should increase little from year to year. Each Government should, therefore, take steps to create a revolving fund out of the receipt so that not only their current but future needs as well can be met out of the initial investment. Mention might be made of the Andhra State Government which has already decided to create a revolving fund as proposed.

Coordination of the book production programmes of different states

20. In order to get the best results from this investment, it will be necessary to coordinate the programmes of the different states. This responsibility will be primarily borne by the Ministry of Education.

The Ministry will collect information of the progress of the programme in different States from time to time and make it available for their guidance.

21. In so far as the Hindi States are concerned, a separate coordination committee has already been set up for the purpose. It includes representatives of universities and State Education Departments from these States. The Commission for Scientific and Technical Terminology is functioning as the Secretariat of this Committee. The Hindi States and their universities will do well to be in touch with the work of the coordination committee in the Commission.

Summary

22. Briefly the proposals of a State Government for assistance from the Centre under the present scheme should inter-alia give the following information :

(*i*) Nature and details of the machinery proposed to be set up for implementing the scheme.

(*ii*) Details of the administrative staff (care being taken to limit expenditure on administration to a maximum of 5 per cent of the total expenditure).

(*iii*) Rates of remuneration to be given to authors, translators and vettors.

(*iv*) Details and estimates of books and other literature to be produced or translated.

(*v*) Details and estimates of measures necessary to finalise a standard terminology in scientific, technical and other subjects in the language concerned. (The finalisation of a terminology should not extend beyond a period of 9 months to a year, otherwise the entire programme of book production may get held up).

(*vi*) Details of estimates of suitably phased programmes of training and orientation of teachers to teach in the language of the State.

(*vii*) Nature of arrangements for publishing the approved books and for their sales and distribution.

(*viii*) Steps proposed for creating Revolving Fund.

(*ix*) Steps contemplated to ensure that the books produced under the programme will be actually prescribed by the concerned universities.

(*x*) Indication of any further assistance/guidance that a State Government might wish to seek from the Centre.

Annexure 'A'

Some details of the Autonomous Organisation set up by the Rajasthan Government for the production of University level books

Name of the Organisation.

The State level organisation for producing technical literature in Hindi may be named as "Rajasthan Gyan Vigyan Hindi Rachna Sansthan".

Area of Operation

The proposed unit would work in active collaboration with the other States and the Central Government which are involved in producing literature in Hindi. Within the State it will work as an autonomous organisation and enlist cooperation of the three universities in the State, the B.I.S.T. and the Colleges imparting higher education.

Board of Management.

It is suggested that an autonomous Board be set up with all financial and executive powers under the general guidance of the State Government. The Board will consist of the following :—

1. State Education Minister......Chairman
2. Vice-Chancellor, University of Rajasthan. Jaipur.
3. Vice-Chancellor, University of Udaipur, Udaipur.
4. Vice-Chancellor, University of Jodhpur, Jodhpur.
5. Financial Commissioner.
6. Education Secretary.
7. Bhasha Sachiva, Director Bhasha Vibhag,
8. Director of Education.
9. Additional Director of Education.
10. Director, B.I.S.T.
11. Director of Technical Education.
12. Deans of Agriculture, Medical & Veterinary Sciences.
13. Five experts belonging to different areas ·
14. A publisher to be nominated by the State Govt. Two eminent persons to be nominated by the Govt. interested in the work.
15. Representative of the Ministry of Education.
16. The Chairman, Board of Secondary Education, Rajasthan.
17. Secretary of the Sansthan.

The Board would meet at least once a year to lay down policies, to approve the budget and to assess the progress of work from time to time.

Executive Committee.

An Executive Committee consisting of the following may be appointed to look after the actual management of the Sansthan :

1. One of the Vice-Chancellors-Chairman.
2. Finance Secretary to the State Govt.
3. Education Secretary to the State Govt.
4. Five experts belonging to different areas or groups of subjects.
5. Secretary of the Sansthan.

It may be desirable to appoint one of the five expert members as Working Chairman who would preside over the meetings of the Executive Committee in the absence of the Chairman (One of the Vice-Chancellors) and also be available for guidance to the Secretary of the Sansthan as and when needed.

Areawise Specialist Committee

Five committees may be set up to deal with different areas or groups of subjects viz. General Works, Humanities, Social Sciences, Natural Sciences and Applied Sciences. On these committees there will be experts in each of the subjects. The conveners of these Committees would be members of the Executive Committee as also of the Board of Management.

Annexure 'B'

Minutes of the Conference of the State Officers, Incharge of Development of Indian Languages held in New Delhi on 9th September, 1968

A meeting of the State Officers, incharge of Development of Indian Languages was held at New Delhi under the Chairmanship of Dr. B.R. Saksena, Chairman, Commission for Scientific and Technical Terminology. Union Education Minister, Dr. Triguna Sen also graced the Conference by his presence for some time. The following were present :—

1. Andhra—Dr. P.S.R. Apparao, Officer Incharge, Telugu Development.
2. Assam—Dr. B.K. Tamuli, General Secretary, Assam Science Society.
3. Gujarat—Dr. I. J. Patel, Vice Chancellor, Sardar Patel University.
4. Maharashtra—Dr. W. N. Pandit, Director of Languages.
5. Orissa—Shri B. Das, Director of Public Instruction.
6. Punjab—S. Tara Singh & S. Pritam Singh, Assistant Directors, Languages.
7. Tamilnad—Shri M. R. Perumal Mudaliar, Director of Tamil Development.
8. West Bengal—Shri G.C. Malik, Deputy Secretary, Education.

Ministry of Education

1. Dr. P.D. Shukla, Joint Educational Advisor (Languages).
2. Shri Veda Prakash, Dy. Educational Advisor (Languages).

C.H.D.

1. Prof. A. Chandrahasan, Director.

C.S.T.T.

1. Dr. S. Balasubramaniam, Member.
2. Dr. S.N. Prasad, Principal Production Officer.
3. Prof. G.J. Somayaji, Principal Research Officer (L-1).
4. Dr. R. Prasad, Principal Research Officer (Medicine)
5. Dr. O.P. Sharma, Principal Publication Officer.
6. Shri R.N. Dwivedi, Principal Research Officer (L-2).

Opening the discussion, Dr. B.R. Saksena referred to the Government's decision to change-over from English to Indian languages as media of education at the university stage as a momentous national decision. But he pointed out that this switch-over could not be possible until suitable scientific and technical terminology was available in the different languages.

He commended the glossaries published by the Commission for Scientific and Technical Terminology as a basis for finalising the scientific and technical terminology in different Indian languages. The Commission's terminology was available for adoption/adaptation in different languages according to their special idiom and genius. He traced the history of the evolution of terminology in this country and stressed the pan-Indian nature of the terminology evolved by the Commission. Particular attention was drawn to the following principles followed by the Commission in its terminological work :

(i) so far as scientific terms were concerned 'International terms' were adopted in their current English form ;

(ii) conceptual terms were generally translated and the equivalents so evolved were either based on Sanskrit or were those common to a number of Indian languages.

The Commission also made every attempt to —

(*a*) appoint a good number of the members of the Commission and the staff from non-Hindi speaking regions ;

(*b*) have all-India representation on the Commission's subject Expert Advisory Committees ;

(*c*) hold all-India seminars for finalising the terminology and to the coopt professors and experts from various regions in these seminars ;

(*d*) organise a larger number of such seminars in the non-Hindi speaking regions so that a larger number of local experts from non-Hindi areas could be conveniently coopted in these seminars; and

(*e*) adopt a regional term already prevelent for a particular concept in one or more regional languages, where no such term was available in Hindi/Sanskrit and to avoid a fresh coinage in such cases.

Participating in the discussion, Union Education Minister, Dr. Triguna Sen said that the Government of India was keen that all the Indian languages were developed as early as possible so that all types of books including books for children could be brought out in them. He emphasized that the adopting of Indian languages as media of education at the university level would require much hard work on the part of teachers.

Dr. P.D. Shukla, Joint Educational Advisor, Union Ministry of Education referred to the decision of the Government of India to provide financial support to the states towards the production of university level books in different subjects during the fourth plan. He clarified that this assistance would be available to the States on a 75%-25% basis. He also made a mention of the scheme of State Institutes of Languages and pointed out that the scheme was now in the State sector but that Central assistance to the extent of 40% was available for the purpose.

The agenda items were then taken up for discussion.

Item No. 3

Adoption/Adaptation of Terminology prepared by the C.S.T.T. in the various Indian languages—problems in specific languages and their solution.

A general discussion on the subject was held in which State representatives detailed the position in their respective states.

Shri I.J. Patel stated that in Gujarat, the Gujarat Vidyapeeth was working in the field of terminology for high school textbooks and the Gujarat University was dealing with the collegiate terminology. Some glossaries have also been brought out. He informed the Conference that the Government of Gujarat had appointed a Board which would review the work done so far and take up further work in the field of terminology. He assured the Conference that the scientific and technical terminology evolved by the Commission will be favourably considered as far as possible for adoption/adaptation in Gujarati.

Shri G.C. Malik Dy. Secretary, Education Department of West Bengal stated that the State Government has recently appointed a Committee under the Chairmanship of Dr. S.N. Bose, National Professor, for finalising scientific, technical and other terminology in Bengali. Mr. Malik agreed to furnish further report regarding the work, time-schedule and procedure of this Committee.

Sardar Tara Singh of the Department of Languages, Punjab, stated that his department has brought out more than a dozen glossaries in Punjabi using the glossaries of the Commission as a base. He said that in accordance with the genius of the Punjabi language a slightly greater percentage of words of Arabic and Persian origin has been accepted. 50 to 60% of the words in their terminology are Sanskrit based. He hoped that the terminological work in Punjabi language is likely to be finished within a year and a half. He further informed the Conference that the State Department of Languages has published 235 books so far. The university level books in Punjabi are being produced by the Punjabi University.

Shri B. Dass, D.P.I., Orissa informed the Conference that his Government has taken a decision to introduce Oriya upto pre-university level by 1970. He also referred to the decision

of his Government to establish an Institute of Oriya Language which would take up the work of terminology and book production. He said that since Oriya language was derived from Sanskrit, there would be no difficulty in accepting Sanskrit-based terminology in Oriya with marginal variations.

Dr. W.N. Pandit, Director of Languages, Maharashtra informed the Conference that his Directorate which was established in 1960 has already produced a glossary of administrative terms. He hoped that if money was found they would be able to finish the work of terminology within no time. He assured the Conference that the terminology produced by the Commission would be the basis for Marathi terminology. He further informed the Conference that there was a Board in Maharashtra in which every university of the State was represented. This Board would supervise the work of the book production, while the terminology will be supplied by the Language Directorate.

Dr. P.S.R. Apparao, Officer Incharge of the Telugu Development of the Andhra Pradesh Government stated that his Government had decided to introduce Telugu as medium of instruction upto PUC/Intermediate by July, 1969. He also assured that the terminological work of the Commission would be fully consulted and taken into account in evolving Telugu terminology. He hoped that the work of the Telugu Academy which has already been set up, will come into full swing in a month or two. The Academy will function as the State Language Institute and would be a link between the universities and the Government.

Shri B.K. Tamuli, General Secretary, Assam Science Society invited attention to the Assamiya-Shastriya-Paribhasha—a glossary prepared with assistance from the State Government.

With regard to the production of university level books in Assamese, he said that one Committee was functioning at the Gauhati university and another at Dibrugarh University with respective Vice-Chancellors as Chairman. A State Committee with the Education Minister as Chairman has also been constituted recently to coordinate the work. He thought that the Commission's glossaries would serve as a useful basis for evolving Assamese terminology.

Shri M.R. Perumal Mudaliar, Director of Tamil Development stated that the problem is most urgent in Madras since the State has already switched over to Tamil as the medium of instruction at the university stage. There are very few Tamil books available for the pre-university level. He mentioned that there is the likelihood of the Madras Government establishing a Commission for Scientific and Technical Terminology in Tamil.

He also referred to the work already done by the Tamil Academy which has produced a Tamil Encyclopaedia and evolved some 19,000 terms. The College Tamil Committee in Madras has evolved 10,000 terms and produced some 35 books. The Bureau of Tamil Publications established in 1962, has been engaged in the production of books for the colleges. This Bureau has to-date produced some 160 books. However, these books have not been selling as there was no change in the medium. The decision of the State Government to change-over to Tamil upto the B.A./B.Sc. level within the next five years makes the situation most favourable, Commenting on the question of Tamil Terminology, he drew attention to the fact that since Tamil has been the medium of education upto secondary level for a long period, the basic terms were already available. He felt that they would not like to waste time in compiling a new terminology and would take many words directly from international usage and from the terminology prepared by the Commission. He was afraid that Tamil could not have many Sanskrit terms, though the position with regard to other South Indian languages was different. He also called attention to the interest now being shown in his State on reforming the Tamil Script as it does not have symbols to denote certain sounds.

Prof. A. Chandrahasan informed the Conference that in Malaylam 60 to 70% words are in Tatsama Sanskrit form and as such there should be no difficulty in adopting/adapting Commission's terminology in Malayalam. He informed the Conference that a Language Institute is already functioning in Kerala.

Summing by the discussion on this item Shri Veda Prakasha, Deputy Educational Adviser, Ministry of Education, drew attention to the urgent need of finalising the work pertaining to terminology in the various Indian languages. Unless this work was completed soon, the progress of the programme of book production would suffer.

Item No. 4

Evolving an acceptable procedure by which adoption/adaptation of terminology could be expedited.

Shri Veda Prakasha suggested that each state should name the organisation which would undertake the work of adoption/ adaptation of terminology and indicate the time by which the work would be finished. If for this purpose, the State needed any financial assistance the Ministry would be willing to consider the matter further, after receiving concrete proposal in this behalf.

Item No. 5

Assessment of literature in various subjects already available in Indian languages and to identify the gaps so that efforts may be concentrated on removing these gaps.

The State Representatives were requested to undertake this work in consultation with various universities in their respective States. The Conference was of the view that in the interest of mobility on the part of teachers and students and that of higher research, throughout the country, it is necessary that as far as possible the terminology to be adopted in the Indian languages, particularly for science and technology should be uniform. For this purpose, the terminology evolved by the C.S.T.T. could serve as a basis for adoption/ adaptation.

The Conference ended with a vote of thanks to the Chair.

शिक्षा का राष्ट्रीय कार्यक्रम

(पृष्ठ 11 का शेष)

राष्ट्रीय एकता

राष्ट्रीय एकता तीसरा महत्वपूर्ण कार्य है। राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन ने श्रीनगर-सम्मेलन में जून, 1968 में इसके लिए अनेक महत्वपूर्ण सिफारिशें रखी हैं। एक महत्वपूर्ण सिफारिश यह है कि प्राथमिक स्तर से स्नातकोत्तर स्तर तक की समस्त शिक्षा प्रणाली का इस प्रकार पुनर्नवीनीकरण किया जाए कि इससे छात्रों में भारतीयता, एकता और अखंडता की भावना उत्पन्न हो। भारतीय गणतन्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों में निष्ठा जागे और राष्ट्र को अभिनव समाज गढ़ने में सहायता मिले। राष्ट्रीय एकता समिति ने एक और महत्वपूर्ण सिफारिश की है कि देश के किसी भी भाग में, किसी भी संस्था में, प्रवेश के लिए छात्र से आवास-प्रमाणपत्र की माँग नहीं की जाए। यह बहुत महत्वपूर्ण सुधार है और समस्त राज्य-सरकारों को इसे लागू कर देना चाहिए। जून, 1969 के आगामी शिक्षा-सत्र से इसे कार्यान्वित किया जा सकता है।

समिति ने क्षेत्रीय विषमता को कम करने पर बल दिया है। जहाँ तक राज्य-स्तर पर शैक्षणिक-विकास की विषमताओं का प्रश्न है, भारत सरकार ने समस्त पिछड़े राज्यों को विशेष सहायता-अनुदान देने का निश्चय किया है। व्यवहार रूप में, केन्द्रीय सहायता का 10 प्रतिशत भाग समान आधार निश्चित कर ऐसे राज्यों में बाँट दिया जाएगा जिनकी प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से कम होगी। इससे सारी आवश्यकता तो पूरी नहीं होगी मगर इसे शुभ आरम्भ माना जा सकता है। राज्य-सरकारों को भी जिला-स्तर पर की विषमता और शहरी और ग्राम्य क्षेत्रों तथा विभिन्न सामाजिक-समूहों की विषमता दूर करनी होगी। ऐसा समुचित कार्यक्रम चतुर्थ योजना में सम्मिलित किया जाएगा।

समिति ने यह भी सुझाव दिया है कि शिक्षकों और छात्रों के पारस्परिक विनिमय को बढ़ावा दिया जाए और ऐसी योजनाएँ बनाई जाएँ जिससे देश के एक भाग के छात्र दूसरे भाग में किसी लाभदायक कार्यक्रम में अपना अवकाश का समय बितायें। भारत-सरकार ऐसी योजनाओं में सहायता देगी, लेकिन मुख्यतः ऐसी योजनाओं को लागू करना राज्य-सरकारों और विश्वविद्यालयों के ऊपर ही निर्भर है।
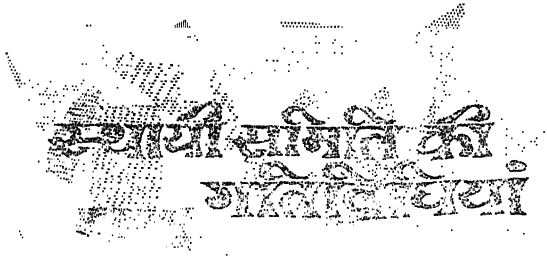
कुलपति-सम्मेलन और उसकी स्थायी समिति

11-13 सितम्बर 1967 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में देश के सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें उच्च शिक्षा में क्षेत्रीय भाषाओं की उपयोगिता के प्रश्न पर विचार किया गया और इस धारणा पर बल दिया गया कि उच्च शिक्षा तथा राष्ट्रीय संस्कृति की उन्नति के लिए सभी भारतीय भाषाओं और साहित्यों का शक्तिशाली विकास अत्यावश्यक है। यह सम्मेलन शिक्षा-माध्यम में परिवर्तन के संबंध में शिक्षा आयोग की सिफारिश से पूरी तरह सहमत था। इसने स्वीकार किया कि शिक्षा-माध्यम का सुनियोजित परिवर्तन उच्च शिक्षा के सुधार तथा हमारी अपनी भूमि में इसकी जड़ों को मजबूत बनाने की ओर बहुत बड़ा कदम होगा। इसने अनुरोध किया कि यह कार्यक्रम सुनियोजित तथा सुसंबद्ध रूप में कार्यान्वित किया जाना चाहिए।

भारत सरकार ने हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए विश्वविद्यालय स्तर के पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता देने के निश्चय की उससे कुछ समय पूर्व ही घोषणा की थी। भारत सरकार ने प्रत्येक राज्य को इस कार्य के लिए 1 करोड़ रुपये की धन-राशि इस शर्त पर देना स्वीकार किया कि वह राज्य भी इस राशि में 25 प्रतिशत अंशदान अपने साधनों से करेगा।

इस प्रकार प्रत्येक राज्य के पास विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन के लिए 1 करोड़ 33 लाख रुपए की राशि हो जाएगी जिसे 5 वर्षों में खर्च किया जाना है और जिसकी सहायता से ऐसा साहित्य प्रकाशित हो जाना चाहिए जिसकी विश्वविद्यालयों के विभिन्न विषयों में तुरन्त अनिवार्य आवश्यकता है। पांचों हिन्दी राज्यों की

इस संदर्भ में विशेष स्थिति है। पांचों राज्यों को मिलाकर यह अनुदान 6 करोड़ 65 लाख रुपये के लगभग होता है।

इस उद्देश्य को मूर्त रूप देने के लिए हिन्दी भाषी राज्यों के लगभग 35 विश्वविद्यालयों के कुलपतियों और शिक्षा सचिवों का एक सम्मेलन 1-2 फरवरी, 1968 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य इस बात पर विचार करना था कि माध्यम-परिवर्तन को शीघ्र से शीघ्र क्रियान्वित करने के लिए क्या कदम उठाये जाने चाहिए।

6.65 करोड़ रु० का उपयोग समन्वित रूप से हो सके और इन राज्यों का पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन कार्य पुनरावृत्ति और दोहरेपन के दोषों से बच सके, इसके लिए कुलपति सम्मेलन ने यह निश्चय किया कि समन्वय के लिए एक स्थायी समिति बनाई जानी चाहिए जो हिन्दी भाषी विभिन्न राज्यों में स्थित विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षण संस्थानों में हो रहे और होने वाले पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन योजनाओं में न केवल समन्वय स्थापित करे, वरन् इस कार्य को उचित दिशा प्रदान करने के लिए इन प्रदेशों तथा भारत के अन्य प्रदेशों के विद्वानों, विषय-विशेषज्ञों और इन क्षेत्रों के अनुभवी लोगों का मार्ग-दर्शन प्राप्त करे। कुलपतियों और शिक्षा सचिवों के इस सम्मेलन ने स्थायी समिति के संगठन के प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार कर लिया। स्थायी समिति का गठन इस प्रकार किया गया ताकि इसमें न केवल प्रत्येक हिन्दी भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व हो, वरन् विषय के विशेषज्ञ भी उसमें आ सकें। इस दृष्टि से स्थायी समिति में दो वर्ष की प्रथम अवधि के लिए निम्न सात कुलपति रखे गए :

(1) प्रो० ए० सी० जोशी, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, अध्यक्ष, स्थायी समिति।

(2) डा० बिश्वेश्वर प्रसाद, भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर।

(3) डा० आर० सी० मेहहोत्रा (प्रो० एम० वी० माथुर के स्थान पर जो पहले राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति थे) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

(4) डा० डी० पी० वर्मा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

(5) प्रो० के० एल० जोशी, इन्दौर विश्वविद्यालय, इन्दौर।

(6) श्री डी० पी० सिंह, उत्तर प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तर प्रदेश।

(7) डा० अब्दुल अलीम, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

स्थायी समिति में राज्यों का प्रतिनिधित्व करने के लिए वहाँ के शिक्षा-सचिव पदेन नियुक्त किये गये।

भारत सरकार ने पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन के लिए स्वायत्त संस्थाएं बनाने पर जोर दिया है और इन सभी राज्यों में इस काम के लिए स्वायत्त संस्थाएं या तो बन गई हैं या बन रही हैं। इन स्वायत्त संस्थाओं के अध्यक्ष भी स्थायी समिति के सदस्य हैं। इनके अतिरिक्त शिक्षा-मंत्रालय, भारत सरकार के एक प्रतिनिधि, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष, राजभाषा विधायी आयोग के अध्यक्ष या उनके प्रतिनिधि तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रतिनिधि स्थायी समिति के सदस्य हैं। इस प्रकार समिति में कुल 21 सदस्य हैं।

कुलपति सम्मेलन ने विभिन्न विषयों में पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन के लिए 10 कार्यकारी दल उसी समय नियुक्त किये और इन सभी दलों का लगभग एक मत से यह निर्णय था कि पुस्तक-निर्माण और अनुवाद का कार्य हाथ में लेने से पहले यह जान लेना उचित है कि विभिन्न विषयों में जो साहित्य उपलब्ध है उसमें से कौन-सा ऐसा है जिससे फिलहाल काम चलाया जा सकता है, किन-किन विषयों की किन-किन शाखाओं में ऐसे कौन-कौन से क्षेत्र हैं जिनमें हिन्दी माध्यम के द्वारा पढ़ाने के लिए कोई भी साहित्य उपलब्ध नहीं है और ऐसा साहित्य अनुवाद एवं मौलिक लेखन द्वारा किस प्रकार यथासंभव उपलब्ध कराया जा सकता है। इस काम के लिए स्थायी समिति ने अपनी पहली बैठक में, जो 24-25 मई, 1968 को नई दिल्ली में हुई थी, यह निश्चय किया कि विषय

विशेषज्ञों की नामिकाएं गठित की जानी चाहिए और इस बारे में उनका मार्गदर्शन और परामर्श प्राप्त करना चाहिए। इसके फलस्वरूप स्थायी समिति की दूसरी बैठक से पहले 28-29 अक्तूबर, 1968 को पटना में एक बैठक हुई जिसमें स्थायी समिति के कुलपतियों की समिति ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और शब्दावली आयोग के अध्यक्ष की सहायता से 25 विषय-नामिकाओं का गठन किया और स्थायी समिति ने 30 अक्तूबर, 1968 को पटना में हुई अपनी बैठक में उन्हें स्वीकृति प्रदान की। इन विषय-नामिकाओं को गठित करते समय यह बात ध्यान में रखी गई कि जहाँ तक सम्भव हो प्रत्येक विषय-नामिका में प्रत्येक हिन्दी प्रदेश का एक-एक उच्च कोटि का विषय-विशेषज्ञ आ जाए। यदि संभव हो तो इस विषय में उच्च कोटि के भारतीय विशेषज्ञ, भले ही वे अ-हिन्दी प्रदेश से प्राप्त हों, ले लिये जाएं। इस प्रकार प्रत्येक विषय-नामिका में 7 सदस्य रखे गये (जिन में एक अध्यक्ष भी शामिल है) इन विषय-नामिकाओं की बैठक 26 नवम्बर, 1968 से 13 जनवरी, 1969 तक नई दिल्ली में हुई और उनकी सिफारिश 'विश्वविद्यालय वाङ्मय' के इसी अंक में प्रकाशित की गई हैं। स्थायी समिति के अध्यक्ष ने यह निश्चय किया है कि विषय-नामिकाओं के अध्यक्षों की एक बैठक तुरन्त ही बुला ली जाए जिसमें विभिन्न विषयों में अनुवाद और मौलिक लेखन के लिए सिफारिश की गई पुस्तकों का एक बार फिर पुनर्विलोकन कर लिया जाए। इसके साथ ही यदि यह सूचना भी उपलब्ध हो जाए कि हिन्दी भाषी राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के विभिन्न विषयों में कौन-कौन से अनुभवी लेखक और अनुवादक उपलब्ध हैं तो राज्यों के शिक्षा सचिवों, स्वायत्त संस्थाओं के अध्यक्षों, विश्वविद्यालयों के कुलपतियों तथा विषय-नामिकाओं के अध्यक्षों की सहायता से अनुवाद और मौलिक लेखन के काम का भी श्री गणेश हो जाए। आशा है कि स्थायी समिति की तीसरी बैठक और कुलपति-सम्मेलन के दूसरे अधिवेशन में जो अभी हाल में जयपुर में होने जा रहा है, इस काम को भी अन्तिम रूप दिया जा सकेगा।

स्थायी समिति : प्रथम बैठक की संक्षिप्त कार्यवाही

हिन्दी में विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण के कुलपति-सम्मेलन की स्थायी समिति की पहली बैठक 24 और 25 मई, 1968 को शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली में हुई और इसकी अध्यक्षता स्थायी समिति के अध्यक्ष प्रो० ए० सी० जोशी ने की। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री प्रो० शेर सिंह और स्थायी समिति के निम्नांकित सदस्यों ने बैठक में भाग लिया :

1. डा० ए० अलीम, कुलपति, अलीगढ़ विश्वविद्यालय।
2. डा० के० एल० जोशी, कुलपति, इन्दौर विश्वविद्यालय।
3. डा० बी० प्रसाद, कुलपति, भागलपुर विश्वविद्यालय।
4. प्रो० एम० वी० माथुर, कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय।
5. डा० डी० पी० वर्मा, कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय।
6. श्री आर० के० तलवार, शिक्षा सचिव, उत्तर प्रदेश।
7. श्री एम० आलम, शिक्षा सचिव, बिहार।
8. श्री जगदीश चन्द्र, उप सचिव, शिक्षा विभाग, हरियाणा।
9. श्री बी० पी० सेठ, उप सचिव, शिक्षा विभाग, म० प्र०।
10. श्री टी० बी मुकर्जी, सचिव, बिहार राज्य विश्वविद्यालय आयोग, पटना।
11. श्री जी० पी० पांडे, संयुक्त सचिव, शिक्षा मंत्रालय।
12. डा० बाबूराम सक्सेना, अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय।
13. डा० टी० एन० हजेला, शिक्षा अधिकारी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली।

आमंत्रित किये गये विशिष्ट अतिथियों के रूप में निम्नलिखित व्यक्तियों ने भाग लिया —

1. श्री वेद प्रकाश, उप शिक्षा सलाहकार, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
2. डा० बालसुब्रह्मयण्म, सदस्य, वै० त० श० आयोग

3. डा० एच० एच० पवार, सहा० शिक्षा सलाहकार शिक्षा मंत्रालय ।
4. डा० ओम् प्रकाश शर्मा, प्रधान प्रकाशन अधिकारी, वै० त० श० आयोग ।
5. डा० वी० के० सोन, डीन पशु-चिकित्सा संकाय, उ० प्र० कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर ।
6. श्री राजेन्द्र वर्मा, संयुक्त निदेशक, शिक्षा-कालेज, म०प्र० ।

विषय क्रम 1 : कार्य-सूची

स्थायी समिति ने निम्नलिखित कार्य-सूची अपनाने का संकल्प किया—

1. कार्य-सूची की स्वीकृति ।
2. अध्यक्ष द्वारा पृष्ठभूमि का परिचय ।
3. राज्य शिक्षा मंत्री, भारत सरकार, प्रो० शेरसिंह का प्रारम्भिक वक्तव्य ।
4. राज्य प्रतिनिधियों की रिपोर्ट ।
5. स्थायी समिति के सचिवालय का गठन और निधि की व्यवस्था ।
6. विभिन्न कार्यकारी दलों की सिफारिशों की समीक्षा ।
7. विषय-नामिकाओं के गठन पर विचार-विनिमय ।
8. मानक ग्रन्थों के अनुवाद की बिहार की योजना पर विचार ।
9. उ०प्र० कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर का नोट ।
10. अध्यक्ष की अनुमति से अन्य विषयों पर विचार ।

विषय क्रम 2 : अध्यक्ष द्वारा पृष्ठभूमि का परिचय

अध्यक्ष महोदय ने स्थायी समिति के सदस्यों को अब तक की पृष्ठभूमि बताते हुये कहा कि 1 व 2 फरवरी, 1968 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुए ग्रन्थ-निर्माण संबंधी कुलपति सम्मेलन से आशाप्रद भविष्य का सहज ही अनुमान किया जा सकता है । उन्होंने बताया कि इस सम्मेलन में प्रो० शेरसिंह, केन्द्रीय राज्य शिक्षामंत्री के अलावा हिन्दी भाषी राज्यों के सचिवों, शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त सचिव, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक तथा शिक्षा मंत्रालय के अन्य अधिकारियों एवं 25 विशिष्ट अतिथियों ने भाग लिया था । सम्मेलन के 10 कार्यकारी दलों के निर्णयों को स्थायी समिति की रिपोर्ट में शामिल कर लिया गया है । सम्मेलन की कार्यवाही शब्दावली पत्रिका के परिशिष्ट—विशेषांक के प्रकाशन में डा० ओम प्रकाश शर्मा, प्र० प्र० अ० के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्होंने सम्मेलन में रुचि लेने के लिए संयुक्त सचिव श्री जी० पी० पांडे और प्रो० शेरसिंह के प्रति आभार व्यक्त किया ।

अध्यक्ष ने बताया कि स्थायी समिति के सामने सबसे महत्त्वपूर्ण काम सम्मेलन के लिए प्रशासन-तंत्र स्थापित करना और उसके लिए निधि की व्यवस्था करना है ।

विषय क्रम 3 : प्रो० शेरसिंह का प्रारम्भिक वक्तव्य

प्रो० शेरसिंह ने फरवरी 1968 को हुए कुलपति सम्मेलन के कार्य पर प्रकाश डालते हुये उच्च स्तरीय पुस्तक-निर्माण के लिए तेजी से काम करने की प्रेरणा दी ।

विषय क्रम 4 : सरकारी प्रतिनिधियों के विचार

इसके पश्चात् अध्यक्ष ने राज्यों के प्रतिनिधियों से इस क्षेत्र में हुई प्रगति से अवगत कराने की प्रार्थना की ।

मध्य प्रदेश के शिक्षा विभागीय उपसचिव ने बताया कि उनके यहाँ एक पाठ्य-पुस्तक निगम स्थापित करके पुस्तक-निर्माण संबंधी प्रारंभिक काम का श्रीगणेश कर दिया गया है । उन्होंने कहा कि निधि के अभाव में इस कार्यक्रम को क्रियान्वित नहीं किया जा सकता । उन्होंने आशा व्यक्त की कि निधि की व्यवस्था केन्द्रीय सरकार द्वारा शीघ्र की जाएगी ।

शिक्षा सचिव, उत्तर प्रदेश ने कहा कि उ० प्र० सरकार विश्वविद्यालय पाठ्यपुस्तक-निर्माण ब्यूरो की स्थापना संबंधी प्रारंभिक कार्य पूरा कर चुकी है तथा निधि उपलब्ध होते ही इसका पंजीकरण करा लिया जायेगा । उन्होंने केन्द्रीय सरकार से तुरंत अनुदान देने की मांग की । शिक्षा सचिव, बिहार ने भी ऐसा ही विचार व्यक्त किया और कहा कि निधि के अभाव में इस योजना को अब तक कार्य रूप नहीं दिया जा सका है । उप शिक्षा सचिव, हरियाणा का भी यही विचार था ।

इस चर्चा के दौरान शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त सचिव

ने बताया कि भारत सरकार ने प्रत्येक राज्य को एक-एक करोड़ रुपये देने का निश्चय कर लिया है। किन्तु राज्यों से इस दिशा में कोई ठोस योजना प्राप्त न होने के कारण यह अनुदान अभी नहीं दिया गया है। उन्होंने बताया कि वित्त मंत्रालय का सुझाव है कि राज्य अपना काम यह मानकर प्रारम्भ कर दें कि जो कुछ खर्च आयेगा, केन्द्रीय सरकार उसे देगी।

राज्यों के शिक्षा सचिवों ने बताया कि राज्यों को यह स्थिति मान्य नहीं है।

विचार-विनिमय करने के बाद स्थायी समिति भी इस निष्कर्ष पर पहुँची कि निधि के बिना काम प्रारम्भ करना सम्भव नहीं होगा। अतः उसने निम्न संकल्प स्वीकार किया :

"स्थायी समिति को यह ज्ञात हुआ है कि हालांकि राज्य सरकारों ने हिन्दी पुस्तकों और उच्च शिक्षा के अन्य साहित्य के प्रकाशन सम्बन्धी प्रारम्भिक कदम उठाये हैं किन्तु केन्द्रीय सरकार द्वारा घोषित अनुदान प्राप्त न होने के कारण अब तक काम शुरू नहीं किया जा सका है। इसलिए समिति सिफारिश करती है कि राज्यों को प्रकाशन कार्यक्रम के लिए उपयुक्त अभिकरणों की स्थापना के हेतु तथा विश्वविद्यालयों द्वारा काम प्रारम्भ कराने के लिए समुचित कुछ अनुदान प्रदान करने के लिए उपयुक्त तदर्थ अनुदान (Adhoc grant on account) दिया जाये।"

विषय क्रम 5 : सचिवालय का गठन और निधि की व्यवस्था

यह निर्णय किया गया कि कुलपति सम्मेलन विश्वविद्यालयों और राज्य निकायों के बीच समन्वय का काम करे और इसके लिए सम्मेलन की स्थायी समिति द्वारा एक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित की जाए। इस पत्रिका में विभिन्न विश्वविद्यालयों व राज्यों में हो रहे हिन्दी पुस्तक-निर्माण सम्बन्धी काम की सूचना, पुस्तक-समीक्षा, स्थायी समिति के क्रिया-कलाप, विभिन्न विषय-नामिकाओं और कुलपति-सम्मेलन की बैठकों की कार्यवाही आदि प्रकाशित हों। हिन्दी की उच्च शिक्षा की पुस्तकों के निर्माण और प्रकाशन में सहायक अन्य साधन सामग्री पर भी प्रकाश डाला जाए। इस पत्रिका के माध्यम से विषय-विशेषज्ञ अपने-अपने क्षेत्र में उपलब्ध हिन्दी की पुस्तकों की समीक्षा कर सकेंगे।

यह निश्चय किया गया कि स्थायी समिति का दूसरा मुख्य कार्य विभिन्न विषयों में समीक्षा-पत्रिकाएं प्रकाशित करना भी होगा। समिति यह काम विश्वविद्यालयों के विषय-विशेषज्ञों द्वारा करायेगी। इन पत्रिकाओं का सम्पादन अवैतनिक सम्पादक करेंगे। सम्पादकों की सहायतार्थ एक सलाहकार बोर्ड बनाया जायेगा। पत्रिकाओं के संकलन, मुद्रण और अनुवाद के काम के लिए कुछ कर्मचारियों को नियुक्त किया जायेगा। जिन संदर्भ पुस्तकों के निर्माण में राज्य और उनके अन्तर्गत विश्वविद्यालय अरुचि प्रगट करेंगे, उनके निर्माण का उत्तरदायित्व भी सम्मेलन ही वहन करेगा।

विषय-क्रम 6: कार्यकारी दलों की रिपोर्टों की समीक्षा

सम्मेलन के निर्णयों को क्रियान्वित करने वाले कार्यकारी दलों की रिपोर्ट सामान्य सहमति से ज्यों की त्यों स्वीकार कर ली गई। किन्तु पुस्तक-निर्माण से पांडुलिपि-स्तर तक के कार्यकारी दल की रिपोर्ट को स्वीकार नहीं किया गया क्योंकि उसमें पूर्वोक्त लक्ष्यों से असहमति व्यक्त की गई थी।

लेखकों के लिए पारिश्रमिक के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा हुई। शिक्षा मन्त्रालय के संयुक्त सचिव ने सुझाव दिया कि बिहार राज्य की पुस्तक-निर्माण योजना को अन्य राज्यों के मार्गदर्शन हेतु भेजा जाये। अध्यक्ष ने कहा कि लेखकों को इस ओर प्रेरित करने के लिए उन्हें आवश्यक सुविधाएं दी जानी चाहिएं। अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कुलपति ने बताया कि उस्मानिया विश्वविद्यालय में 1930 में अनुवाद के लिए दस रु० प्रति पृष्ठ निश्चित किया गया था। किन्तु फिर भी प्रोफेसरों ने स्वयं अनुवाद न करके प्राध्यापकों द्वारा आंशिक पारिश्रमिक पर अनुवाद करवाया। अतः यह प्रश्न सर्वथा विचारणीय

है। उन्होंने सुझाव दिया कि लेखकों को 15 प्रतिशत रायल्टी दी जानी चाहिये।

अध्यक्ष महोदय ने सुझाव दिया कि अगले 10 वर्षों में लेखकों को आवश्यकतानुसार शैक्षणिक मान्यता, एक मुश्त भुगतान, रायल्टी तथा पुस्तक लेखन संबंधी अग्रिम सहायता आदि विविध रूप में प्रोत्साहन दिए जाने चाहिए।

पांडुलिपि-पश्चीय स्तर (post mss stage) के बाद की पुस्तक-निर्माण संबंधी क्रिया-विधि के कार्य-दल की रिपोर्ट को प्रायः सभी ने स्वीकार कर लिया। यह विचार व्यक्त किया गया कि प्राइवेट प्रकाशकों का सहयोग ग्रहण किया जाए।

वै. त. श. आयोग के अध्यक्ष ने विचार व्यक्त किया कि इस काम के लिए सभी संभव प्रसाधनों का उपयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने पुस्तकों का मूल्य कम रखने पर बल दिया और कहा कि विक्रय का काम प्रकाशक-समुदाय द्वारा अधिक अच्छी तरह किया जा सकता है।

मानविकी और सामाजिक विज्ञान के कार्यकारी दल की रिपोर्ट के बारे में समिति सामान्यतः सहमत थी और निर्णय किया गया कि कार्यकारी दलों की सिफारिशों से सभी सम्बद्ध व्यक्तियों को अवगत करा दिया जाये।

समिति ने विज्ञान तथा गणित के कार्यकारी दल की रिपोर्ट को भी स्वीकृति दे दी। रिपोर्ट के मद 14 के बारे में समिति का विचार था कि ग्रीष्मकालीन संस्थान द्वारा अध्यापकों को हिन्दी में पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए जिसकी व्यवस्था विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा की जाये।

कृषि, इंजीनियरी और आयुर्विज्ञान के कार्यकारी दलों की रिपोर्ट के सम्बन्ध में कुछ सदस्यों द्वारा यह विचार व्यक्त किया गया कि इन विषयों को अभी हिन्दी में पढ़ाना कठिन है। अध्यक्ष महोदय ने बताया कि समिति का गठन माध्यम बदलने के लिए हिन्दी में पुस्तकों का निर्माण करने में समन्वय बनाये रखने के लिए किया गया है और इसका काम है कि 1973 तक हिन्दी में पुस्तकें उपलब्ध हो जाएँ। इस सम्बन्ध में अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने बताया कि आयोग में एक इंजीनियरी एकक है। इंजीनियरी की पुस्तकों का अनुवाद हो रहा है और कुछ पुस्तकों का प्रकाशन भी हो चुका है।

वाणिज्य और व्यवसाय प्रबन्ध के कार्यकारी दल की रिपोर्ट ज्यों की त्यों स्वीकार कर ली गई। विधि के कार्यकारी दल की रिपोर्ट पर विचार-विनिमय के दौरान अध्यक्ष ने बताया कि विधि मंत्रालय भी विधि साहित्य को हिन्दी में तैयार करना चाहता है।

विषय क्रम 7 : विषय-नामिकाओं का गठन और उनके उत्तरदायित्व

अध्यक्ष ने कहा कि विषय-नामिकाओं के कार्य का ब्यौरा मद सं० 5 में दिया गया है। इस पर सहमति प्रकट की गई कि विषय-नामिकाओं को अन्तिम रूप स्थायी समिति के सात कुलपति की समिति वै० त० श० आयोग के अध्यक्ष की सलाह से दे।

विषय क्रम 8 : मानक ग्रन्थों के अनुवाद की बिहार सरकार की योजना

बिहार योजना का सभी ने स्वागत किया। फिर भी कुछ फेर बदल करने के सुझाव दिये गये। मौलिक लेखन पर भी बल दिया गया।

समिति के सभी सदस्यों ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष का यह सुझाव स्वीकार कर लिया कि आयोग द्वारा प्रकाशित पुस्तकों को विश्वविद्यालयों में मान्यता दी जाए।

विषय क्रम 9 : उ० प्र० कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर का नोट

यह अनुभव किया गया कि सभी कृषि विद्यालयों को हिन्दी पुस्तक-निर्माण में सहयोग देना चाहिए।

स्थायी समिति : दूसरी बैठक की संक्षिप्त कार्यवाही

हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर के ग्रन्थ-निर्माण के लिए कुलपति सम्मेलन की स्थायी समिति की दूसरी बैठक 30 अक्तूबर, 1968 को न्यू लाइब्रेरी बिल्डिंग, पटना विश्वविद्यालय, पटना में स्थायी समिति के अध्यक्ष प्रो० ए० सी० जोशी की अध्यक्षता में हुई। श्री भागवत झा आजाद, राज्य मंत्री, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार तथा स्थायी समिति के निम्नलिखित सदस्यों ने इसमें भाग लिया :

1. प्रो० ए० सी० जोशी —अध्यक्ष
   कुलपति,
   बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
2. डा० बिश्वेश्वर प्रसाद,
   कुलपति,
   भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर।
3. डा० आर० सी० मेहरोत्रा,
   कुलपति,
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
4. डा० बाबूराम सक्सेना,
   अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली।
5. श्री आर० एन० शर्मा,
   अध्यक्ष, विधायी राजभाषा आयोग,
   विधि मंत्रालय, नई दिल्ली।
6. श्री वेद प्रकाश,
   उप-शिक्षा सलाहकार,
   शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
7. श्री वाई० डी० शर्मा,
   शिक्षा अधिकारी,
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
   नई दिल्ली।
8. श्री एम० आलम,
   शिक्षा सचिव, बिहार।
9. श्री बी० एल० आहूजा,
   शिक्षा सचिव, हरियाणा, चंडीगढ़।
10. डा० राजेन्द्र वर्मा,
   कालेज-शिक्षा संयुक्त निदेशक,
   मध्यप्रदेश सरकार, भोपाल।
11. श्री टी० बी० मुकर्जी,
   सचिव, बिहार राज्य विश्वविद्यालय आयोग, पटना।

निम्नलिखित विशिष्ट आमंत्रित व्यक्ति इस बैठक में उपस्थित थे—

1. डा० एस० बालसुब्रह्मण्यम्,
   सदस्य, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली
   आयोग, नई दिल्ली ।
2. डा० रामधारी सिंह 'दिनकर',
   भारत सरकार, के हिन्दी सलाहकार, गृह मंत्रालय,
   नई दिल्ली ।
3. डा० के० के० दत्त,
   कुलपति, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
4. श्री एम० एल० कपूर,
   सहायक शिक्षा सलाहकार,
   शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली ।
5. डा० डी० एन० शर्मा,
   अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय ।
6. डा० आर० पी० राय,
   अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग,
   पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
7. डा० सुरेश केशव,
   अध्यक्ष, प्राणि-विज्ञान विभाग,
   पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
8. डा० वी० श्रीवास्तव,
   भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर ।
9. डा० जी० आचार्य,
   प्रिंसिपल, पी० डब्ल्यू० मेडीकल कालेज,
   पटना ।
10. डा० एस० एन० प्रसाद,
    प्रधान ग्रन्थ-निर्माण अधिकारी,
    वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
    नई दिल्ली ।
11. श्री एस० के० वर्मा,
    और
12. श्री जे० सी० वर्मा,
    वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी,
    वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
    नई दिल्ली ।
13. डा० ओमप्रकाश शर्मा,
    सचिव, स्थायी समिति,
    वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
    नई दिल्ली ।

अध्यक्ष महोदय द्वारा पृष्ठभूमि का परिचय

अध्यक्ष महोदय ने, स्थायी समिति की 24 और 25 मई, 1968 को हुई पहली बैठक में लिए गए निर्णयों के संदर्भ में सदस्यों का ध्यान, हिन्दी में विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तकों के निर्माण के लिए हिन्दी भाषी राज्यों के शिक्षा मंत्रियों की 13 जुलाई, 1968 को नई दिल्ली में हुई बैठक की ओर आकर्षित किया । इस बैठक में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में एक और दो फरवरी, 1968 को कुलपति-सम्मेलन की विभिन्न सिफ़ारिशों पर विचार किया गया । बैठक का एक निर्णय यह था कि समिति का सचिवालय दिल्ली में होना चाहिए । यह भी निर्णय लिया गया कि स्थायी समिति के सचिवालय की सेवा-व्यवस्था के लिए आवश्यक धन का प्रवन्ध केन्द्र द्वारा किया जाए । शिक्षा मंत्रालय ने यह निर्णय लिया कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ही स्थायी समिति के सचिवालय का कार्य करे और डा० ओमप्रकाश शर्मा, प्रधान प्रकाशन अधिकारी को स्थायी समिति का सचिव नियुक्त किया गया । तदनुसार आयोग ने 3 सितम्बर, 1968 से यह कार्य आरम्भ कर दिया है ।

अध्यक्ष महोदय ने स्थायी समिति के सदस्य प्रो० एम० वी० माथुर द्वारा कुलपति सम्मेलन और स्थायी समिति के लिए की गई अमूल्य सेवाओं की चर्चा की । उन्होंने सूचना दी कि कुलपति-सम्मेलन में लिए गए इस निर्णय के अनुसार कि स्थायी समिति में हुए रिक्त स्थान अध्यक्ष महोदय द्वारा भरे जा सकते हैं, उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के वर्तमान कुलपति श्री आर० सी० मेहरोत्रा को प्रो० एम० वी० माथुर के स्थान पर नियुक्त किया है । उन्होंने श्री मेहरोत्रा का सदस्यों से परिचय कराया और स्थायी समिति के सदस्य के रूप में उनका स्वागत किया ।

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री भागवत झा आजाद का उद्घाटन-भाषण

अध्यक्ष महोदय ने श्री भागवत झा आजाद, केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री, का स्वागत करते हुए कहा कि श्री आजाद पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम में अत्यधिक दिलचस्पी ले रहे हैं। उन्होंने श्री आजाद से अनुरोध किया कि वे समिति को इस बारे में अपने विचारों से अवगत करायें।

शिक्षा राज्य-मंत्री श्री भागवत झा आजाद ने अपने उद्घाटन-भाषण में इस बात पर बल दिया कि इस काम को तेजी से पूरा किया जाना चाहिए। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम से सम्बन्धित कार्य और समन्वय कार्य शीघ्रता से पूरे किए जाएं। उन्होंने स्थायी समिति को यह आश्वासन दिया कि काम के सभी सोपानों पर धनाभाव को बाधा नहीं बनने दिया जाएगा। (श्री आजाद का भाषण परिशिष्ट-1 में दिया गया है)

कार्य-सूची की स्वीकृति

स्थायी समिति ने निम्न कार्य-सूची स्वीकार करने का संकल्प किया :

कार्य-सूची

1. केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री भागवत झा आजाद का प्रारम्भिक वक्तव्य।
2. दूसरी बैठक की कार्य-सूची की स्वीकृति।
3. स्थायी समिति की दिनांक 24 और 25 मई, 1968 को नई दिल्ली में हुई पहली बैठक की कार्यवाही की स्वीकृति।
4. हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर के ग्रन्थों के निर्माण के लिए राज्य शिक्षा-मंत्रियों की, 13 जुलाई, 1968 को नई दिल्ली में हुई बैठक की कार्यवाही स्थायी समिति के समक्ष सूचनार्थ प्रस्तुत।
5. स्थायी समिति की 24-25 मई, 1968 को हुई पहली बैठक के संकल्पों को कार्यान्वित करने की दिशा में अब तक की प्रगति की रिपोर्ट।
6. ग्रन्थ-निर्माण कार्यक्रम में हुई प्रगति के संबंध में राज्य सरकारों की रिपोर्ट।
7. कुलपति-समिति द्वारा गठित विभिन्न विषय-नामिकाओं और विषयवार शोध पत्रिकाओं के लिए अवैतनिक प्रधान सम्पादक और सम्पादकीय सलाहकार मंडल आदि स्वीकृति के लिए प्रस्तुत।
8. (क) केन्द्रीय सरकार द्वारा राज्यों को अनुदान देकर पुस्तक-निर्माण योजना के संदर्भ में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अधीन, हिन्दी भाषी राज्यों में ग्रन्थ-निर्माण के लिए पूर्णकालिक एककों और अनुवाद एजेंसियों की स्थिति पर विचार।
   (ख) दिल्ली विश्वविद्यालय में स्थापित ग्रन्थ-निर्माण के पूर्णकालिक एकक की विशेष समस्या पर विचार।
9. कुलपति सम्मेलन की अगली बैठक के लिए स्थान और समय निश्चित करने पर विचार।
10. अध्यक्ष की अनुमति से अन्य विषयों पर विचार।

विषय क्रम 3 : स्थायी समिति की 24 और 25 मई, 1968 को नई दिल्ली में हुई प्रथम बैठक की कार्यवाही की पुष्टि

प्रथम बैठक की कार्यवाही की पुष्टि की गई।

विषय क्रम 4 : हिन्दी में विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तकों के निर्माण के लिए राज्यों के शिक्षा-मंत्रियों की 13 जुलाई, 68 को हुई बैठक की कार्यवाही सूचनार्थ प्रस्तुत

यह संकल्प किया गया कि कार्यवाही (परिशिष्ट-2) रिकार्ड कर ली जाए। अध्यक्ष ने यह आशा व्यक्त की है कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग को इस स्थायी समिति का सचिवालय बना दिये जाने से अनेक समस्याएं—विशेषतया स्थायी समिति के लिए स्टाफ़ भरती करने की समस्या—हल हो गई है। आयोग के विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तकों के निर्माण, अनुवाद और प्रकाशन के अनुभव का लाभ भी स्थायी समिति को उपलब्ध हो सकेगा।

विषय क्रम 5 : स्थायी समिति की प्रथम बैठक (24-25 मई, 1968) के निर्णयों को क्रियान्वित करने की दिशा में हुई प्रगति की रिपोर्ट

अध्यक्ष ने स्थायी समिति की प्रथम बैठक में लिए गये विभिन्न निर्णयों के संबंध में की गई कार्रवाई की रिपोर्ट स्थायी समिति के समक्ष रखते हुए यह कहा कि शिक्षा मन्त्रालय ने पहले से ही राजस्थान और बिहार सरकार के लिए तदर्थ अनुदानों की अनुमति दे दी है। उन्होंने अन्य हिन्दी भाषी राज्यों के प्रतिनिधियों से यह अनुरोध किया कि वे अपने प्रस्तावों को शीघ्र भेजें ताकि उन्हें भी आवश्यक तदर्थ अनुदान दिए जा सकें। इस संबंध में उन्होंने चौथी पंचवर्षीय योजना में विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा-माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं में साहित्य-निर्माण के संबंध में मार्गदर्शन के लिए शिक्षा-मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत योजना की ओर संकेत किया जो केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड द्वारा अनुमोदित की जा चुकी है।

अध्यक्ष महोदय ने इस योजना की मोटे रूप से सदस्यों को जानकारी दी। स्थायी समिति ने सामान्यतया, इस योजना में दी गई सिफारिशों का अनुमोदन किया।

अध्यक्ष महोदय ने बताया कि स्थायी समिति की ओर से प्रकाशित त्रैमासिक के लिए 'विश्वविद्यालय वांङ्मय' शीर्षक सुझाया गया है। स्थायी समिति ने इसके शीर्षक तथा उद्देश्यों का भी अनुमोदन किया।

स्थायी समिति का मत था कि 'विश्वविद्यालय वाङ्मय' का प्रथम अंक जनवरी, 1969 में प्रकाशित हो जाना चाहिए और इसके लिए राज्य-सरकार और विश्व-विद्यालयों के प्रतिनिधियों से आवश्यक सूचना उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया।

अध्यक्ष महोदय ने बताया कि जिन संदर्भ ग्रंथों का प्रकाशन राज्य-सरकार और विश्वविद्यालय नहीं करना चाहते, उनको स्थायी समिति द्वारा प्रकाशित किया जा सकता है। यह भी निर्णय लिया गया कि चूंकि वैज्ञानिक तथातकनीकी शब्दावली आयोग को इस क्षेत्र में काफी अनुभव है और वह स्थायी समिति के सचिवालय के रूप में भी कार्य कर रहा है, इसलिए संदर्भ पुस्तकों के निर्माण, अनुवाद तथा प्रकाशन का काम स्थायी समिति के लिए आयोग द्वारा ही किया जाए।

विधि-साहित्य के निर्माण के प्रश्न पर विस्तृत चर्चा हुई। भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार डा० रामधारी सिंह दिनकर ने समिति को बताया कि छः माह पूर्व हिन्दी सलाहकार समिति ने विधि मंत्रालय को एक नोट भेजा है जिसमें उनसे विधि साहित्य के निर्माण का अनुरोध किया गया है। श्री भागवत झा आजाद ने सुझाव दिया कि विधि मंत्रालय से इस बारे में सम्पर्क स्थापित किया जाए और यदि वह इस काम को न करना चाहे तो केन्द्र के पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्व-विद्यालयों और राज्य सरकारों से यह काम कराया जाए।

अध्यक्ष महोदय ने बताया कि विधि की विषय-नामिका को बनाते समय भी इस बात का ध्यान रखा गया था। उन्होंने बताया कि चूँकि विधि की विषय-नामिका के अध्यक्ष विधायी राज-भाषा आयोग के अध्यक्ष हैं, अतः उनसे विधि मंत्रालय से सम्पर्क स्थापित करने का अनुरोध किया जा सकता है। श्री राजनाथ शर्मा, अध्यक्ष, विधायी राज-भाषा आयोग ने बताया कि इस पर विषय-नामिका की पहली बैठक में विचार कर लिया जायेगा। स्थायी समिति ने इस विचार को अनुमोदित कर दिया।

स्थायी समिति ने यह भी निश्चय किया कि इस संदर्भ में विषय-नामिका के अध्यक्ष विधि की विषय-नामिका का जैसा उपयोग करना चाहें कर लें।

अध्यक्ष ने सदस्यों का ध्यान शिक्षकों के अभिविन्यास की ओर आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि इस संबंध में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को भी लिखा गया है। उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षकों को हिन्दी में पढ़ाने हेतु सक्षम बनाने के लिए ग्रीष्मकालीन संस्थानों की व्यवस्था की जाए। शिक्षा-मंत्रालय के नीति-निर्देशक सुझावों में इस बात की सिफारिश की गई है कि अनुदान का 12 प्रतिशत अंश (15 प्रतिशत हिन्दी भाषी राज्यों के लिए) शिक्षकों के अभिविन्यास के लिए निर्दिष्ट किया जा

सकता है। अध्यक्ष महोदय ने आशा प्रगट की कि अगले ग्रीष्म से प्रत्येक विश्वविद्यालय में ग्रीष्मकालीन संस्थानों की व्यवस्था का काम शुरू किया जा सकता है।

विषय क्रम 6 : पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम की प्रगति संबंधी राज्य सरकारों का प्रतिवेदन

बिहार राज्य में पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम में हुई प्रगति के बारे में बिहार के शिक्षा सचिव श्री एम० आलम ने स्थायी समिति को बताया कि हिन्दी में पुस्तक-निर्माण के क्षेत्र में बिहार राज्य विश्वविद्यालय आयोग ने काफी प्रगति की है। स्थायी समिति के सदस्यों को इस बारे में एक नोट पहले ही दिया जा चुका है।

इसके बाद समिति ने बिहार-योजना के अन्तर्गत मानक-ग्रंथों के अनुवाद वाली उपयोजना पर चर्चा की। चर्चा में इस बात का उल्लेख किया गया कि जहाँ तक हो सके अनुवाद का काम अध्यापकों से मानदेय/रायल्टी के आधार पर कराया जाए (इसके लिए पूर्णकालिक एककों का गठन अपवादस्वरूप ही किया जाए)। आमतौर पर विचार यह था कि अध्यापकों को पूर्णकालिक आधार पर काम देकर विश्वविद्यालयों में विभिन्न विषयों के अन्तर्गत विशेषज्ञों की सेवाओं से हाथ धोना पड़ेगा और फलस्वरूप अध्यापन-स्तर नीचे गिर जाएगा। यह भी अनुभव किया गया कि इस व्यवस्था से अतिव्ययिता बढ़ेगी।

भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डा० बिश्वेश्वर प्रसाद ने स्थायी समिति से निवेदन किया कि कम से कम बिहार में विश्वविद्यालयों को मौलिक लेखन का कार्य शुरु करने की अनुमति मिल जानी चाहिए। स्थायी समिति ने बिहार सरकार से प्रार्थना की कि वह राज्य के सभी विश्वविद्यालयों से मौलिक पुस्तकों के लिखने का कार्यक्रम आरम्भ करने के लिये आवश्यक आदेश दे दे। यह भी निश्चय हुआ कि विषय-नामिकाओं द्वारा अनुवाद-योग्य पुस्तकों का अंतिम रूप से चयन करने के बाद ही अनुवाद कार्य शुरू किया जाए।

हरियाणा सरकार के शिक्षा सचिव श्री आहूजा ने सूचित किया कि उनके राज्य में हिन्दी में पुस्तक-निर्माण के सम्बन्ध में प्रारम्भिक कार्य हाथ में ले लिया गया है। विस्तृत योजना अंतिम रूप देकर केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय को भेजी जा चुकी है ताकि तदर्थ अनुदान शीघ्र प्राप्त हो सके।

मध्य प्रदेश सरकार के कालेज-शिक्षा के संयुक्त निदेशक डाक्टर वर्मा ने स्थायी समिति को बताया कि उनके यहाँ विश्वविद्यालय-स्तरीय साहित्य के निर्माण के सम्बन्ध में काफी काम हो चुका है और सदस्यों को इस बारे में एक नोट वितरित किया जा चुका है। वै० त० श० आयोग के अध्यक्ष डा० बाबूराम सक्सेना ने संकेत किया कि उक्त नोट में उल्लिखित कार्य वह है जो शब्दावली आयोग ने मध्य प्रदेश के विश्वविद्यालयों को दे रखा है।

डा० वर्मा ने स्थायी समिति को सूचना दी कि तदर्थ अनुदान प्राप्त करने के लिए शिक्षा-मन्त्रालय को प्रस्तुत की जाने वाली योजना को अन्तिम रूप दिया जा चुका है और वह राज्य सरकार के वित्त मन्त्रालय को स्वीकारार्थ भेजी जा चुकी है। जैसे ही वित्त मन्त्रालय इसे अनुमोदन प्रदान कर देगा, वह शिक्षा मन्त्रालय को भेज दी जाएगी।

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के कार्यवाहक कुलपति डा० आर० सी० मेहरोत्रा ने सूचना दी कि यद्यपि राजस्थान सरकार का शिक्षा विभाग इस बैठक में अपना कोई प्रतिनिधि नहीं भेज सका है, तो भी राजस्थान सरकार ने उन्हें यह सूचित करने का अधिकार दिया है कि पुस्तक-निर्माण हेतु एक स्वायत्त संस्था की स्थापना के सम्बन्ध में आवश्यक कार्य पूरा हो चुका है तथा मौलिक लेखन के लिए आवश्यक कदम उठाये जा चुके हैं।

इस बैठक में उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग का कोई प्रतिनिधि उपस्थित न हो सका। वहाँ से यह सूचना प्राप्त हुई कि राज्य सरकार ने हिन्दी में विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण के हेतु एक स्वायत्त निगम के गठन का प्रस्ताव शिक्षा-मन्त्रालय को भेज दिया है। जैसे ही भारत सरकार इस प्रस्ताव को अन्तिम मंजूरी प्रदान कर देगी, निगम की स्थापना कर दी जाएगी।

डा० आर० सी० मेहरोत्रा ने सुझाव दिया कि जो भी राज्य सरकारें पुस्तक-निर्माण का वास्तविक कार्य पहले प्रारम्भ कर दें और अनुदान का पूरा उपयोग कर लें उन्हें प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। केन्द्रीय शिक्षा राज्य-मंत्री श्री भागवत झा आज़ाद ने भारत सरकार की ओर से आश्वासन दिया कि धनाभाव के कारण कार्य रुकने नहीं दिया जाएगा।

विषय क्रम 7 : विषय-नामिकाओं के गठन और विषय-वार समीक्षा-पत्रिकाओं के अवैतनिक प्रधान सम्पादक और सम्पादकीय सलाहकार मंडलों के नाम की कार्यवाही स्वीकृति के लिए प्रस्तुत

अध्यक्ष ने सूचना दी कि स्थायी समिति के विषय-नामिकाओं के गठन के बारे में निर्णय को कार्यान्वित करने के लिए 'कुलपति-समिति' की पहली बैठक पटना विश्वविद्यालय के नवीन पुस्तकालय भवन में 28 व 29 अक्टूबर, 1968 को हुई। अध्यक्ष महोदय ने बताया कि विषय-नामिकाओं का गठन करते समय यह ध्यान रखा गया है कि इन विषय-नामिकाओं में सभी हिन्दी भाषी राज्यों का यथेष्ट प्रतिनिधित्व हो और विभिन्न विषयों में सभी शाखाओं का यथासंभव अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व हो। उन्होंने कहा कि इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह निश्चय किया गया है कि प्रत्येक नामिका में छः सदस्य तथा एक अध्यक्ष रखा जाए।

इसके पश्चात् अध्यक्ष महोदय ने इस प्रयोजन के लिए गठित 'कुलपति-समिति' द्वारा सिफारिश की गई विषय-नामिकाओं की सूची स्थायी समिति के समक्ष प्रस्तुत की। स्थायी समिति ने सभी 26 विषय-नामिकाओं का अनुमोदन किया और निर्णय लिया कि इन नामिकाओं की पहली बैठक दिल्ली में नवम्बर के तीसरे या चौथे सप्ताह में आयोजित की जाए। (स्थायी समिति द्वारा अनुमोदित विषय-नामिकाएँ इसी अंक में पृष्ठ 67 पर देखें।) यह भी निश्चय किया गया कि जहाँ भी अध्यक्षता अथवा सदस्यता स्वीकार न की जाए, वहाँ अध्यक्ष को विषय-नामिकाओं के अध्यक्ष और सदस्य नियुक्त करने का अधिकार हो।

नामिकाओं के कार्य-क्षेत्र के सँबंध में विचार-विमर्श किया गया। अनुवाद कार्य को विभिन्न राज्यों और विश्व-विद्यालयों में किस प्रकार वितरित किया जाए, इस विषय में परस्पर काफी मतभेद रहा। पूर्ण विचार-विमर्श के पश्चात यह निर्णय किया गया कि चूँकि विषय-नामिकाओं में सभी राज्यों के वरिष्ठ प्रोफ़ेसर लिए गए हैं, इसलिए यह अच्छा रहेगा कि वे अनुवाद कार्य के वितरण के बारे में भी अपने सुझाव दें। इससे दोहरे कार्य और पुनरावृत्ति से बचा जा सकेगा।

विषय-नामिकाओं का निम्नलिखित-कार्य क्षेत्र स्वीकार किया गया :

1. (क) संगत विषय के सभी विशेष क्षेत्रों में हिन्दी में उपलब्ध साहित्य की समीक्षा।
   (ख) समीक्षित पुस्तकों में से ऐसी उच्च कोटि की पुस्तकों का चयन, जो स्नातक और स्नात-कोत्तर कक्षाओं के अध्ययन के लिए उपयुक्त हों।
   (ग) समीक्षित पुस्तकों में से ऐसी पुस्तकों का चयन जो समुचित संशोधन के बाद पाठ्य-पुस्तकों के रूप में प्रयोग की जा सकती हों।
2. संगत विषय में आवश्यक साहित्य के अभाव का पता लगा कर मौलिक लेखन/अनुवाद कार्य द्वारा उसकी पूर्ति।
3. संगत विषय की ऐसी उत्तम अंग्रेजी पुस्तकों के चयन और हिन्दी अनुवाद के लिए निर्देश देना जो स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों के लिए उपयोगी हों।
4. अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद कार्य को विश्व-विद्यालयों के बीच वितरण के लिए सुझाव देना।
5. इस कार्यक्रम के अधीन समय-समय पर प्रका-शित पुस्तकों की समीक्षा करना।

इसके बाद अध्यक्ष ने स्थायी समिति का ध्यान इस प्रयोजन के लिए गठित 'कुलपति-समिति' के उस निर्णय

की ओर आकर्षित किया जिसके अनुसार ये नामिकाएँ ही इन विषयों की 'समीक्षा एवं अनुसंधान पत्रिकाओं' के सम्पादकीय सलाहकार मंडल के रूप में कार्य करेंगी। स्थायी समिति ने यह भी निर्णय किया कि प्रथमतः निम्न 14 विषयों में 'समीक्षा एवं अनुसंधान पत्रिकाएं' प्रारम्भ कर दी जाएँ :

1. भौतिकी समीक्षा
2. रसायन समीक्षा
3. प्राणि-विज्ञान समीक्षा
4. वनस्पति विज्ञान समीक्षा
5. भूगोल समीक्षा
6. आयुर्विज्ञान समीक्षा
7. भू-विज्ञान समीक्षा
8. इंजीनियरी समीक्षा
9. कृषि विज्ञान समीक्षा
10. अर्थशास्त्र-समीक्षा
11. राजनीति-विज्ञान समीक्षा
12. समाज-विज्ञान समीक्षा
13. इतिहास समीक्षा
14. गणित समीक्षा

भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार डा० रामधारी सिंह दिनकर के परामर्शानुसार विचार-विमर्श के बाद पत्रिकाओं के उपर्युक्त नाम और उनके उद्देश्य स्वीकार कर लिए गए। यह भी निश्चय किया गया कि प्रत्येक पत्रिका के प्रधान सम्पादक का चुनाव विषय-नामिका ही करेंगी। स्थायी समिति का विचार था कि इन पत्रिकाओं के प्रथम अंक यथासंभव मार्च 1969 तक निकाल दिए जाएं।

विषय क्रम 8

(क) हिन्दी-भाषी राज्यों में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अधीन पुस्तक-निर्माण के पूर्ण-कालिक एककों और अनुवादकारी संस्थाओं की स्थिति पर विचार।

(ख) दिल्ली विश्वविद्यालय में स्थित पुस्तक-निर्माण के पूर्ण-कालिक एकक की विशिष्ट समस्या।

उपर्युक्त विषय में विस्तृत चर्चा हुई और विभिन्न मत व्यक्त किये गए। इस प्रमुख प्रश्न पर कोई मतभेद नहीं था कि हिन्दी-भाषी राज्यों में सभी विश्वविद्यालयों के सहयोग से राज्य सरकारों के द्वारा किए जाने वाले इस पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम के संदर्भ में, जिसके लिए अधिकांश वित्तीय सहायता केन्द्र ने दी है, इन एककों (cells) और एजेन्सियों को जारी रखने का कोई औचित्य नहीं है; क्योंकि ये एकक (cells) अधिकतर विश्वविद्यालयों में ही स्थित हैं। लेकिन इस बात पर भी सहमति व्यक्त की गई कि विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में निर्धारित जो पुस्तकें विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों के मत में उच्चकोटि की है यदि उन पर अनुवाद। मौलिक लेखन का काम पहले ही शुरू किया जा चुका है और विभिन्न चरणों में प्रगति पर है, तो उसे पूरा किया जाना चाहिए। सभी इस बारे में एक मत थे कि ग्रंथ-निर्माण के मद में जिन पर कुछ भी खर्च हो चुका है उनको पूरा करना आवश्यक है।

अनुवादकारी संस्थाओं के बारे में यह विचार व्यक्त किया गया कि राज्य सरकारें इन्हें अपने अधीन ले लें और उनसे शेष काम को पूरा कराएँ। शिक्षा-मन्त्रालय और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्रवाई करेंगे। जहाँ तक एककों (cells) का प्रश्न है, समिति का विचार था कि इनमें काफी वेतनभोगी कर्मचारी काम करते हैं और क्योंकि पुस्तक-निर्माण के लिए अब इन सेलों को बनाए रखने में कोई औचित्य नहीं है, इनके बारे में शिक्षा-मन्त्रालय और वै० त० श० आयोग मिलकर विचार करें और कोई उपयुक्त समाधान खोजें। अन्य सेलों के बारे में लिए गए निर्णय के अनुसार ही दिल्ली सेल के प्रश्न को भी हल किया जाए।

विषय-क्रम 9 : **कुलपति-सम्मेलन की अगली बैठक का स्थान**

अध्यक्ष महोदय ने स्थायी समिति को सूचित किया कि बनारस में 1-2 फरवरी, 1968 को हुए कुलपति सम्मेलन के अधिवेशन में सम्मेलन ने निर्णय लिया था कि विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति का अवलोकन तथा हिन्दी में आवश्यक साहित्य के अभाव की पूर्ति के लिए उपायों के बारे

में सुझाव देने के लिए वर्ष में कम से कम सम्मेलन का एक अधिवेशन अवश्य होना चाहिए। उन्होंने आगे सूचित किया कि राजस्थान के शिक्षा मन्त्री ने सम्मेलन का अगला अधिवेशन जयपुर में आयोजित करने के लिए आमन्त्रित किया है। अतः निश्चय हुआ कि सम्मेलन का दूसरा अधिवेशन फरवरी 1969 में जयपुर में किया जाए। यह भी निश्चय हुआ कि स्थायी समिति की बैठक भी कुलपति सम्मेलन से एक दिन पूर्व जयपुर में ही की जाए। राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति डा० आर० सी० मेहरोत्रा ने कुलपति सम्मेलन और स्थायी समिति की बैठकों के लिए राजस्थान सरकार के साथ विचार-विमर्श करके तारीख निश्चित करने के लिए अपनी सहमति व्यक्त की।

अध्यक्ष ने इस बैठक के आयोजन और आतिथ्य आदि की सुव्यवस्था के लिए बिहार शिक्षा-विभाग, बिहार राज्य विश्वविद्यालय आयोग और पटना विश्वविद्यालय को धन्यवाद दिया।

परिशिष्ट-1

विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण के समन्वय के लिए कुलपति सम्मेलन की स्थायी समिति की दूसरी बैठक में केंद्रीय शिक्षा राज्य-मंत्री श्री भागवत झा आजाद का उद्घाटन-भाषण

डा० जोशी और साथियो,

मैं शिक्षा मंत्रालय और अपनी ओर से आपका स्वागत करता हूं। हम सब डा० जोशी के आभारी हैं जो अत्यधिक व्यस्त होने के बावजूद स्थायी समिति का मार्गदर्शन कर रहे हैं। मैं बिहार सरकार को धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने इस बैठक और हम सब लोगों के ठहरने के प्रबन्ध का भार उठाया।

इस अवसर पर मैं यह आवश्यक नहीं समझता कि विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं को अपनाने की वकालत की जाए, क्योंकि हम सभी न केवल इस कदम को उठाने की वांछनीयता पर सहमत हैं, वरन् उसको मूर्त रूप देने के लिये दृढ़ संकल्प भी हैं। हम सबकी यह हार्दिक इच्छा है कि योजनाबद्ध रूप से माध्यम-परिवर्तन कम से कम समय में सम्पन्न हो जाए। हिन्दी भाषा-भाषी राज्यों के शिक्षा मंत्रियों का एक सम्मेलन 13 जुलाई, 1968 को दिल्ली में हुआ था। उसमें यह निर्णय लिया गया था कि दिल्ली में स्थित वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ही स्थायी समिति के सचिवालय के रूप में कार्य करे। इस सिफारिश पर पिछले महीने से अमल शुरू हो गया है। राज्य सरकारों और विश्वविद्यालयों द्वारा, स्थायी समिति के माध्यम से, जो भी निर्णय समय-समय पर लिए जाएंगे उनको क्रियान्वित करने में यह सचिवालय अपनी पूरी चेष्टा करेगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि स्थायी समिति ने विषय-नामिकाओं को अन्तिम रूप देने के लिए सात कुलपतियों की जो समिति नियुक्त की थी, वह भी इस अवसर पर अपनी सिफारिशें पेश करेगी। विषय-नामिकाओं का गठन पुस्तक-निर्माण की दिशा में एक आवश्यक कदम है। ये नामिकाएं उपलब्ध पुस्तकों की समीक्षा करके और विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखते हुये यह निश्चय करेंगी कि किन ग्रन्थों का अनुवाद किया जाए और किन पर मौलिक रूप से ग्रंथ लिखवाए जाएं। विषय-नामिकाएं विश्वविद्यालयों द्वारा निर्मित पुस्तकों की समीक्षा का काम भी करेंगी। मैं चाहूंगा कि स्थायी समिति की इस बैठक के बाद ये विषय-नामिकाएं अपना काम तुरन्त आरम्भ कर दें, क्योंकि तभी विभिन्न राज्यों की पुस्तक-निर्माण योजनाओं से पुनरावृत्ति के दोष को रोककर धन और समय के अपव्यय को बचाया जा सकता है, और हिन्दी-भाषा-भाषी

क्षेत्रों में पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन के कार्यक्रम को समन्वित ढंग से चलाया जा सकता है।

इस बात से आप सहमत होंगे कि विदेशों से पुस्तकों के अनुवाद-अधिकार प्राप्त करने का काम केन्द्रीय सरकार द्वारा ही किया जाना चाहिये। इससे न केवल पुनरावृत्ति और अनावश्यक दोहरे प्रयत्नों से बचा जा सकेगा, वरन् काम में भी तेजी आएगी। जैसे ही स्थायी समिति की सिफारिशों की पृष्ठभूमि में राज्य सरकारों द्वारा इस बात का निर्णय ले लिया जाएगा कि किन-किन विषयों की कौन-कौन सी पुस्तकों का अनुवाद करना है, उनके अनुवाद-अधिकार प्राप्त करने के लिए भारत सरकार तुरन्त कार्यवाही आरम्भ करेगी। सम्भवतः आप जानते हैं कि शब्दावली आयोग के तत्वावधान में विभिन्न विषयों की लगभग 1800 पुस्तकों की अनुवाद के लिए सिफारिश की गई है। इनके अनुवाद-अधिकार प्राप्त करने के लिये औपचारिक कार्यवाही आरम्भ भी हो चुकी है। अपनी संस्तुतियां पेश करते समय विषय-नामिकाएं अनुवाद-अधिकार प्राप्ति के क्षेत्र में आयोग द्वारा किये गये कार्य को ध्यान में रख सकती हैं।

मुझे खुशी है कि हिन्दी भाषी राज्यों में विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण के कार्यक्रमों में अब प्रगति हो रही है। सभी राज्यों में या तो राज्य स्तर पर स्वायत्त संगठन बना लिये गये हैं अथवा बनाये जाने वाले हैं। राजस्थान और बिहार सरकार दोनों को पांच-पांच लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत हो चुका है। उत्तर प्रदेश और हरियाणा की योजनाओं पर विचार हो रहा है। आशा है इन पर अन्तिम निर्णय शीघ्र ही ले लिया जाएगा। हां, मध्य प्रदेश की योजना अभी प्राप्त नहीं हुई है। किन्तु हमें आशा है कि यह भी शीघ्र विचारार्थ प्राप्त हो सकेगी।

शिक्षा मंत्रालय ने भारतीय भाषाओं में पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन कार्यक्रमों को मार्ग-दर्शन देने के लिये कुछ सुझाव तैयार किए हैं, जो केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार मंडल की चौंतीसवीं बैठक में अभी हाल में स्वीकृत हो चुके हैं। मैं आपका ध्यान इनमें से कुछ महत्वपूर्ण सुझावों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं।

पुस्तक-निर्माण का कार्यक्रम आरम्भ करने के लिये आवश्यक पारिभाषिक शब्दावली का उपलब्ध होना जरूरी है। हिन्दी को छोड़ कर अधिकांश भारतीय भाषाओं में यह शब्दावली उपलब्ध नहीं है। शब्दावली आयोग के प्रयत्नों से ऐसी शब्दावली का निर्माण हो गया है, जिसको सरलता से अन्य भारतीय भाषाओं में उनके स्वभाव और व्याकरणी विशिष्टताओं के अनुसार आवश्यक परिवर्तन करके अपनाया जा सकता है। शिक्षा मंत्रालय की इस योजना में राज्य सरकारों को यह सलाह दी गई है कि पुस्तक-निर्माण के लिए अनुदान का 3-5 प्रतिशत भाग संबंधित भाषा की शब्दावली बनाने में खर्च किया जा सकता है। यह सुझाव केवल अहिन्दी भाषी राज्यों के लिए है। जहां तक हिन्दी भाषी राज्यों का संबंध है, वे तो आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली का सीधा उपयोग कर सकते हैं।

माध्यम-परिवर्तन में सबसे बड़ी कठिनाई शिक्षक वर्ग की है। जब तक अध्यापक वर्ग अपने को भारतीय भाषाओं में पढ़ाने में सक्षम नहीं समझेगा, तब तक माध्यम-परिवर्तन सम्भव नहीं हो सकेगा। स्थायी समिति की पहली बैठक में इस बात की सिफारिश भी की गई थी कि स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के अध्यापकों को हिन्दी माध्यम से पढ़ाने में प्रशिक्षित करने के लिए ग्रीष्मकालीन गोष्ठियों और संस्थानों का आयोजन होना चाहिये। मुझे बताया गया है कि इस संबंध में स्थायी समिति ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का ध्यान आकर्षित भी किया है। शिक्षा-मन्त्रालय की उपर्युक्त योजना में भी इस बात की ओर राज्य सरकारों का ध्यान दिलाया गया है और उनको परामर्श दिया गया है कि पुस्तक-निर्माण के लिए नियत अनुदान का 10-12 प्रतिशत भाग शिक्षकों को भारतीय भाषाओं में पढ़ाने की उचित क्षमता प्रदान करवाने के लिये खर्च किया जाना चाहिये।

शिक्षा मंत्रालय ने इस योजना में राज्य सरकारों को यह भी सलाह दी है कि पुस्तक-निर्माण के काम में प्रशासन पर कम से कम खर्च होना चाहिये। विभिन्न

राज्य सरकारों के प्रस्तावों की जांच करने के बाद शिक्षा-मंत्रालय इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि प्रशासन-संबंधी खर्च पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम पर होने वाले कुल खर्च का 5 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिये। इस संबंध में हमें इस बात पर विशेष ध्यान रखना है कि अनुदान का अधिकांश भाग सीधे पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन पर खर्च होना चाहिये। खर्च होने वाली राशि का प्रत्यक्ष संबंध ग्रन्थ-निर्माण के विभिन्न चरणों से जोड़ने पर ही इस कार्यक्रम को आशातीत सफलता मिल सकती है। मेरा निवेदन है कि सभी राज्य सरकारों और विश्वविद्यालयों को इस सिफारिश को ध्यान में रखना चाहिये।

एक सुझाव यह है कि इन पुस्तकों का विक्रय-मूल्य कम से कम होना चाहिये और इससे कोई मुनाफा नहीं कमाया जाना चाहिये। यह इसलिये आवश्यक है कि अन्यथा साधारण स्थिति का विद्यार्थी इन पुस्तकों को नहीं खरीद सकेगा। किन्तु सबसे महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि इस कार्यक्रम के अन्तर्गत तैयार की जाने वाली पुस्तकों को अनिवार्य रूप से राज्य के विश्वविद्यालयों द्वारा मान्यता मिलनी चाहिये, वरना इन पुस्तकों की बिक्री नहीं होगी। जहां तक हिन्दी भाषी राज्यों का प्रश्न है इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाली पुस्तकों को पांचों हिन्दी राज्यों के विश्वविद्यालयों द्वारा तो स्वीकृति और मान्यता मिलनी ही चाहिये। ऐसा होने पर प्रत्येक पुस्तक की कम से कम 10-12 हजार प्रतियों की खपत आसानी से हो सकेगी और पुस्तकों का मूल्य भी काफी कम हो जाएगा।

एक बार जब इन पुस्तकों को विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा मान्यता मिल जाएगी तो इनके बेचने का काम भी काफी सरल हो जाएगा। शिक्षा-मंत्रालय की उपर्युक्त योजना में राज्य सरकारों को यह सलाह दी गई है कि जहां तक हो सके इन पुस्तकों की बिक्री की जिम्मेदारी प्रकाशन-व्यवसाय को सौंप देनी चाहिए। प्रकाशक पुस्तकों की बिक्री व्यापारिक दृष्टि से करते हैं, जो आमतौर पर स्वायत्त संस्थाएं नहीं कर सकतीं। प्रकाशक लोग बिक्री से सम्बन्धित प्रबन्ध करने की अधिक क्षमता रखते हैं और वे इस काम के लिए सभी उपलब्ध साधनों को काम में ला सकते हैं। हां, जिन राज्यों में इस कार्य को करने के लिए पहले से ही उचित और विकसित संगठन मौजूद हैं, उनका सहयोग इस काम में अवश्य ही प्राप्त किया जा सकता है।

हम सभी के सामने प्रमुख समस्या यह है कि इस काम को किस प्रकार तेजी से पूरा करें। कुलपति सम्मेलन ने वाराणसी में फरवरी, 1968 में यह निर्णय लिया था कि शिक्षा के समस्त निकायों में सभी स्तरों पर और व्यवसायी शिक्षा, जैसे इंजीनियरी, विधि और कृषि निकायों में भी डिग्री कोर्स में शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बनाना 1973 तक तो अवश्य ही सम्भव होना चाहिये। मैं आशा करता हूं कि आप इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए पुस्तक-निर्माण का कार्य इस प्रकार समन्वित ढंग से आयोजित करेंगे कि माध्यम-परिवर्तन पुस्तकों के अभाव के कारण रुका न रहे। विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण के कार्यक्रम को पूरी तरह से सफल बनाने के लिए भारत सरकार दृढ़-प्रतिज्ञ है। स्थायी समिति के महत्वपूर्ण कार्य के प्रति शिक्षा-मंत्रालय पूरी तरह जागरूक है और मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इस काम के सभी सोपानों पर साधनों के अभाव को रुकावट नहीं बनने दिया जाएगा।

हिन्दी-भाषी राज्यों के शिक्षा-मन्त्रियों की 13 जुलाई, 1968 की बैठक का संक्षिप्त इतिवृत्त

हिन्दी-भाषी राज्यों के शिक्षा-मन्त्रियों की एक बैठक केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री डाक्टर त्रिगुण सेन की अध्यक्षता में 13 जुलाई, 1968 को नई दिल्ली में विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण और प्रकाशन के सम्बन्ध में हुई। इसमें निम्नलिखित उपस्थित थे :

1. श्री नित्यानन्द कानूनगो, राज्यपाल, बिहार।
2. प्रो० शेरसिंह, केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय में राज्य-मन्त्री।
3. श्री भागवत झा आजाद, केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय में राज्य मन्त्री।
4. श्री एस० सी० माथुर, शिक्षा मन्त्री, राजस्थान।
5. श्री राव धीरसिंह, उप शिक्षा मन्त्री, राजस्थान।
6. श्री एच० आर० दुबे, उप शिक्षा मन्त्री, मध्य प्रदेश।
7. श्री जी० के० चन्दिरामानी, सचिव, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार।
8. प्रो० ए० सी० जोशी, कुलपति, बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय।
9. श्री आर० के० तलवार, शिक्षा सचिव, उत्तर प्रदेश।
10. श्री एम० आलम, शिक्षा सचिव, बिहार।
11. श्री बी० एल० आहूजा, शिक्षा सचिव, हरियाणा।
12. श्री जे० एस० मेहता, शिक्षा सचिव, राजस्थान।
13. श्री जी० पी० पाण्डे, संयुक्त सचिव, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार।
14. डा० बाबूराम सक्सेना, अध्यक्ष, वै० त० श० आयोग
15. उपसचिव, मध्य प्रदेश।
16. उपसचिव, उत्तर प्रदेश।
17. श्री टी० बी० मुकर्जी, सचिव, बिहार राज्य विश्व-विद्यालय आयोग, पटना।

इस बैठक का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री ने बैठक में विचारणीय विषयों की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा निम्न बातों पर विशेष बल दिया :

(i) चूँकि हिन्दी-भाषी राज्यों में देश की कुल जन-संख्या का एक तिहाई से अधिक भाग सम्मिलित है, अतः यह आवश्यक है कि हिन्दी में पुस्तक-निर्माण के लिए समन्वित प्रयास किए जाएं। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में फरवरी, 1968 में हुए कुलपति-सम्मेलन ने इस सम्बन्ध में पहले ही कार्य शुरू कर दिया है और तत्पश्चात् इस सम्मेलन द्वारा नियुक्त स्थायी समिति ने, जिसकी बैठक 24-25 मई, 1968 को नई दिल्ली में हुई, कुछ निर्णय लिए हैं। इन निर्णयों को कार्यान्वित करने के लिए संगठित प्रयत्न और नियोजित कार्रवाई की आवश्यकता है।

(ii) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने विश्वविद्यालय स्तर की हिन्दी में लगभग 150 और अन्य भाषाओं में भी कुछ पुस्तकें प्रकाशित की हैं। पर इन पुस्तकों का यथेष्ट प्रचलन अभी नहीं हुआ है। इन पुस्तकों का पूर्ण उपयोग होना चाहिए।

विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों ने भी इस सन्दर्भ में

अपने विचार व्यक्त किए जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

बिहार के राज्यपाल श्री नित्यानन्द कानूनगो ने सभी हिन्दी-भाषी राज्यों में पुस्तक-निर्माण कार्य के समन्वयन के हेतु स्थायी समिति की स्थापना की आवश्यकता बताई और कहा कि ऐसा होने से कार्य के दोहरेपन और पुनरावृत्ति से बचा जा सकेगा। उन्होंने सूचना दी कि उनके राज्य में पुस्तक-निर्माण की योजना तैयार है और केन्द्र की स्वीकृति मिलते ही कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति प्रोफेसर ए० सी० जोशी ने बताया कि स्थायी समिति हिन्दी में उपलब्ध विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तकों के सम्बन्ध में सूचना-केन्द्र के रूप में कार्य करेगी तथा पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम को तेजी से आगे बढ़ाने में आवश्यक योग देगी। उन्होंने बताया कि इसी उद्देश्य से एक त्रैमासिक बुलेटिन निकालने का भी विचार है जिसमें उपलब्ध उच्च-स्तरीय हिन्दी पुस्तकों की सूचना देने एवं उनके सही मूल्यांकन करने की व्यवस्था की जाएगी।

श्री भागवत झा आजाद ने कुलपति-सम्मेलन के उस निर्णय की ओर संकेत किया जिसके अनुसार भारतीय भाषाएं 1973 तक सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम बन जानी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि यह परिवर्तन विद्यार्थियों और अध्यापकों की तात्विक कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए हिन्दी-भाषी राज्यों के शिक्षा अधिकारियों, विश्वविद्यालयों के कुलपतियों एवं विभिन्न राज्यों की पारस्परिक सद्भावना और सहमति से इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वह सभी को स्वीकार्य हो और सर्वत्र तुरन्त लागू हो जाए। इसके लिए समन्वित प्रयत्न की आवश्यकता है।

श्री एस० सी० माथुर ने सुझाव दिया कि स्थायी समिति का सचिवालय दिल्ली में होना चाहिए ताकि समय-समय पर अध्यक्ष के परिवर्तन के साथ-साथ सचिवालय के स्थान का परिवर्तन न हो। उन्होंने यह भी कहा कि पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकें विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत की जानी चाहिए।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष, डाक्टर बाबूराम सक्सेना ने प्रोफेसर एस० सी० माथुर के इस सुझाव का समर्थन किया कि स्थायी समिति का कार्यालय दिल्ली में होना चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि स्थायी समिति का सचिवालय यदि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग में रख दिया जाए तो बिना किसी कठिनाई के कम खर्च में इसकी शीघ्र स्थापना की जा सकती है। उन्होंने सुझाव दिया कि स्थायी समिति के अध्यक्ष के साथ एक अधिकारी और एक स्टेनोग्राफर की व्यवस्था करके सचिवालय और स्थायी समिति के अध्यक्ष के बीच सतत सम्पर्क कायम रखा जा सकता है।

अन्त में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री ने सभी के विचारों को सुनने के पश्चात् कहा कि "स्थायी समिति का सचिवालय दिल्ली में रहेगा तथा उसके गठन, स्टाफ और वित्त आदि की व्यवस्था शिक्षा-मन्त्रालय करेगा।"

उन्होंने आगे निम्न महत्वपूर्ण घोषणा की :

"विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में निर्मित पुस्तकों में से सर्वोत्तम पुस्तकें चुन ली जाएंगी और उन्हें राष्ट्रीय पुस्तकों के रूप में मान्यता दी जाएगी। सर्वोत्तम पुस्तकों का अन्य सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराया जाएगा और इनके प्रकाशन के लिए केन्द्रीय सरकार वित्तीय सहायता देगी ताकि ऐसी पुस्तकों का मूल्य न्यूनतम हो और सभी भाषाओं के विद्यार्थी उनको आसानी से खरीद सकें।"

सभी ने केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री की इस घोषणा का स्वागत किया और इसके लिए उन्हें बधाई दी।*

---

* इस बैठक की पूरी कार्यवाही संलग्न परिशिष्ट 'ख' में देखें।

Annexure 'A'

Proceedings of the meeting of the Education Ministers (Hindi-Speaking States) for Production of University Level Books in Hindi held on 13th July, 1968 at New Delhi

THE meeting of the Education Ministers of States for production of university level books in Hindi was held at 10.00 A.M. on 13th July, 1968 at New Delhi. The Union Education Minister, Dr. Triguna Sen presided over the meeting. Others who attended the meeting were :

1. Shri Nityanand Kanungo, Governor of Bihar.
2. Prof. Sher Singh, Minister of State in the Ministry of Education.
3. Shri Bhagwat Jha Azad, Minister of State in the Ministry of Education.
4. Shri S. C. Mathur, Education Minister, Rajasthan.
5. Shri Rao Dheer Singh, Deputy Education Minister, Rajasthan.
6. Shri H. R. Dubey, Deputy Education Minister, Madhya Pradesh.
7. Shri G. K. Chandiramani, Secretary, Ministry of Education.
8. Prof. A. C. Joshi, Vice-Chancellor, Banaras Hindu University.
9. Shri R. K. Talwar, Education Secretary, Uttar Pradesh.
10. Shri M. Alam, Education Secretary, Bihar.
11. Shri B.L. Ahuja, Education Secretary, Haryana.
12. Shri J.S. Mehta, Education Secretary, Rajasthan.
13. Shri G. P. Pandey, Joint Secretary, Ministry of Education.
14. Dr. B.R. Saksena, Chairman, C.S.T.T.
15. Deputy Secretary, Madhya Pradesh.
16. Deputy Secretary, Uttar Pradesh.
17. Shri T. B. Mukerjee, Secretary, Bihar State University Commission.

2. In his opening address, the Union Education Minister, *Dr. Triguna Sen*, outlined the important issues which required consideration at the meeting. Some of the important points stressed by him were as follows :

(i) There is need for coordinated action for the production of Hindi books as five Hindi-speaking States covering more than one-third of the population were involved. The Vice-Chancellors' Conference held at Banaras Hindu University in February, 1968 has already initiated action in the matter. Subsequently, the Standing Committee appointed by this Conference which met at Delhi in May, 1968 took certain decisions. These decisions to be implemented required concerted efforts and planning.

(ii) The Commission for Scientific and Technical Terminology has produced about 150 standard books of university level in Hindi, and some books in other languages. These books were not getting the desired currency. These should be fully utilised.

3. *Prof. Sher Singh*, Minister for Education, gave observations to the meeting with regard to the steps so far taken for production of university level books in Hindi.

4. With regard to the financial assistance to be given to the State Governments for the implementation of the Scheme, Prof. Sher Singh observed that he had taken up releasing on-account grants to the State Governments. The Ministry of Finance have since agreed to release on-account grants to the State Governments, but for this the State Governments have to send their complete schemes for the approval of the Ministries of Education and Finance for the release of on-

account grants. He further observed that in regard to the Rajasthan Government, the Ministry of Finance have already agreed to the release of an on-account grant of Rs. 5 lakhs. As soon as the Schemes from the other State Governments were received, similar on-account grants could be released.

5. The Governor of Bihar observed that while the idea of a Standing Committee co-ordinating the work of book production programmes in all the Hindi-speaking States to avoid duplication and waste was good, such a Committee could be an impediment in the progress of work at the State end. In Bihar, for instance, their scheme was ready, and what they required to get the scheme going was advance grants under the scheme by the Centre. If the State Government had to await clearance from the Standing Committee of taking up particular books, this would delay matters. He further said that there would be no harm, even if in the beginning more than one book was written on the same subject, there was bound to be some duplication and waste in the beginning.

6. This idea was further discussed. It was felt that production of books would fall in two categories: (a) translation of books from foreign languages and (b) original books. In the matter of production of original books, in the present stage, each State should be free to plan and produce its books. In the matter of translation, particularly, where royalty had to be paid for copyright, there should not be more than two translations of one book. It was also viewed that the Commission for Scientific and Technical Terminology could be used for the bulk of the translation work.

7. *Prof. A. C. Joshi*, Vice-Chancellor, Banaras Hindu University, stated the idea which weighed with the Vice-Chancellors' Conference in setting up a Standing Committee for co-ordination was for speeding up of this programme and to assist the State Governments and not to impede the programme in any way. It was essential to function as a clearing house for Hindi books for higher education. He referred to the recommendations of the first meeting of the Standing Committee. One was that a quarterly bulletin would be brought out reviewing the availability of books on different subjects and pointing out the gaps. The journal would give a factual evaluation of books brought out in different subjects. This would benefit the participating States. This concept of the function of the Standing Committee was generally endorsed by the Committee.

8. *Shri Bhagwat Jha Azad*, Minister of State for Education referred to the decision of the Vice-Chancellors' Conference at Banaras Hindu University in which 1973 has been suggested as the date-line for changing over the medium of instruction in all subjects to Hindi. He said that this date-line did not fully take into account the feeling of the student community and the ideas with which they were pulsating. Giving his impression of the reaction of the student community in general not only here but in Yugoslavia and the East European countries from where he was returning, Shri Azad suggested that there should be a more realistic appraisal of the date-line by which instruction in the medium of Hindi was to be introduced and correspondingly a greater acceleration of the production programme of books in Hindi which would facilitate this change-over. He referred to the discussions on this matter at the State Education Ministers' Conference in April, 1967, wherein a period of five years had been suggested for the change-over. The Committee of Members of Parliament which met later had also endorsed this recommendation that the period of change-over should be about five years. Later, however, at the Conference of Vice-Chancellors which met in September, 1967, the decision was that the date and time of the change-over of the medium of instruction was to be left to each university. He endorsed the necessity of keeping some early date as the date-line and persuading the universities in different States, particularly in the Hindi speaking States, to effect the changeover of the medium of instruction and some sort of broad coordination in the date among all the Hindi-speaking States. The State Governments, he suggested, should also take up the matter with the Vice-Chancellors of the universities and to persuade them to move much faster in the matter.

9. *Shri S.C. Mathur*, Education Minister,

Rajasthan, gave a resume of the salient points of the scheme for production of books in Hindi as it had been developed in Rajasthan. With regard to original writings he felt that there should be full freedom to the States and there was not much need for coordination at the level of the Standing Committee. With regard to translation, particularly of books of which copyrights have to be obtained he agreed with the view expressed earlier in the meeting that there should be a greater coordination and that it was not necessary to have more than one translation of one foreign book. With regard to the membership of the coordinating body, he suggsted that, if possible, there may be a smaller executive committee of the Standing Committee so that it could meet frequently. With regard to the secretariat of the Standing Committee, he pleaded that it would be convenient to all the participating States if the Secretariat of the Standing Committee was located at Delhi and not at any other place. The Chairmanship of the Committee may change from time to time. It would, therefore, not be practicable to get the office of the Standing Committee also changing with the incumbent of the post. With regard to the financing of the Coordination Committee he pressed that it should be financed from the Centre because it would not be feasible for the participating States to make contributions towards the provision of the Secretariat of the Coordinating Committee. He further pleaded that, apart from the programme of production of books, it was equally, if not more, necessary to ensure that the books produced under the programme were adopted by the universities along with the change in the medium of instruction. Otherwise, as in the past, these books would merely accumulate and would not sell. He agreed with the view expressed by Shri Bhagwat Jha Azad that in the matter of change-over in the medium of instruction things should not be taken in a leisurely way and urgency in the atmosphere all-round should be taken into account by all concerned including the universities.

10. *Shri R. K. Talwar*, Education Secretary, U.P. agreed to the view expressed by the Education Minister, Rajasthan, that it would not be feasible for the States to contribute for the provision of finances for running the Secretariat of the Standing Committee and that the finances should be provided by the Centre.

11. *Shri Alam, Education Secretary*, Bihar, raised a point whether the Standing Committee should be called Standing Commitee of the Conference or whether it should be called the Standing Committee for co-ordination of the work relating to the programme of production of books in Hindi, in which case the complexion of the Standing Committee may change. Education Minister, Rajasthan, intervened to say that in his view the Conference of Vice-Chancellors has met and has dispersed. The Standing Committee should, therefore, be treated as a Committee of Secretaries and Vice-Chancellors for coordination of the production programme of books in Hindi.

12. *Dr. Babu Ram Saksena*, Chairman of the Commission for Scientific and Technical Terminology, agreed with the view taken that the Secretariat of the Standing Committee should be located at Delhi. With a view to economise the expenditure as also quickness in the setting up of the Secretariat, he suggested that the Secretariat of the Standing Committee could be lodged in the CSTT and that a small complement of one officer with a stenographer could be attached to the Chairman to serve as a liaison between the office at Delhi and the Chairman.

13. The Union Education Minister, *Dr. Triguna Sen*, observed that he had listened to all the points of view which had been stated with regard to the functioning of the Standing Committee for coordination and the question of provision of finances for the Secretariat of the Standing Committee. He had come to the conclusion that considering the necessity of provision of such a secretariat as also the difficulty in asking the States to make contribution in men and money for such a secretariat, the servicing of the Secretariat of the Standing Committee should be done by providing necessary finances for the purpose from the Centre. He also indicated his agreement with the view of the Education Minister, Rajasthan, that the Secretariat should be located at Delhi. As regards the organisation in which the Secretariat should be lodged and the complement of staff which is to work

personally with the Chairman of the Standing Committee, Education Minister observed that these details should be worked out by the Education Ministry.

14. Concluding the discussions, Union Education Minister said that he wanted to announce another important decision which has been taken with regard to the production of university level books in Indian languages. The decision was that the best books which are produced in the different regional languages in different disciplines will be selected. These books will be treated as national books. After a book had been so selected, translations of these books will be arranged in the other Indian languages. Subsidy will be given from the Centre for reducing the cost of this book to the States which would be translating the book in the other Indian languages. Thus the best book will be made available at comparatively cheap rates to the students in the different languages all over India. The Education Minister, Rajasthan, and the Deputy Education Minister, Madhya Pradesh, congratulated the Union Education Minister on the excellence of this idea and said that they were convinced that this would give a very strong fillip to production of books of excellence in Indian languages. The Education Minister, Rajasthan, however, wanted to know the arrangements by which selections will be made from the different books for being brought out in the Indian languages and whether the translations in Indian languages other than the one in which these books have been produced would be done centrally or at the State level. The Union Education Minister clarified that these were matters of detail which would have to be worked out later, but it was quite clear to him that the translation in the Indian languages other than the one in which the books have been originally written could not be centrally undertaken and would have to be entrusted to the State organizations which would be organising the production of university level books under the programme.

The meeting concluded with the thanks of the Union Education Minister to the participating State Education Ministers and the State representatives.

विषय-नामिकाओं के उद्देश्य और गठन

विश्वविद्यालय-स्तरीय पुस्तक-निर्माण कार्यक्रम के समन्वय के लिए कुलपति-सम्मेलन की स्थायी समिति ने 26 विषयों की विषय-नामिकाओं (विवरण आगे देखें) का निम्न प्रयोजनों के लिए गठन किया :

(1) उपलब्ध प्रकाशित साहित्य का सर्वेक्षण इस दृष्टि से करना कि विश्वविद्यालय स्तर पर फिलहाल काम चलाने के लिए कितनी पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनको जैसे का तैसा इस्तेमाल किया जा सकता है अथवा जिन्हें संशोधित करके काम में लाया जा सकता है ।

(2) माध्यम-परिवर्तन के लिए कम से कम कितनी पुस्तकें और चाहिए जिनका अनुवाद करवाना है अथवा जिन्हें मौलिक रूप से लिखवाना है ।

(3) अनुमोदित और मौलिक रूप से लिखे जाने वाली पुस्तकों को लिखवाने के बारे में विषय-नामिकाओं के क्या सुझाव हैं ।

26 नवम्बर, 1968 से 2 फरवरी, 1969 तक विषय-नामिकाओं की बैठकें शास्त्री भवन, नई दिल्ली में हुईं । कुछ विषय नामिकाओं को काम पूरा करने के लिए दो बैठकें करनी पड़ीं । कुछ विषय-नामिकाओं ने अपने को अनेक उप-नामिकाओं में विभाजित किया । इन उप-नामिकाओं की बैठकें अभी भी चल रही हैं ।

विषय-नामिकाओं ने अनुवाद और मौलिक लेखन के लिए जिन पुस्तकों की सिफारिश की है वे विषय-नामिका की सिफारिश के साथ आगे दी जा रही हैं ।

स्थायी समिति के अध्यक्ष महोदय ने यह निर्णय लिया है कि इन सिफारिशों को सभी विश्वविद्यालयों और स्नातकोत्तर कालेज के अध्यापकों के सूचनार्थ भेजा जाए । उनसे इनके बारे में सुझाव लिये जाएं और यह भी जाना जाए कि इन पुस्तकों को अनूदित करने के लिए अथवा मौलिक रूप से लिखने के लिए उनकी अपनी शिक्षण संस्थाओं में कौन-कौन योग्यतम व्यक्ति हैं, उनकी शैक्षणिक योग्यता क्या है और अध्यापन तथा अनुवाद/मौलिक लेखन के क्षेत्र में उन्हें कितना अनुभव है । इसी दृष्टि से ये सिफारिशें सभी शिक्षकों की सेवा में भेजी जा रही हैं ।

विश्वविद्यालय-स्तरीय ग्रंथ-निर्माण/अनुवाद के लिए स्थायी समिति द्वारा गठित

विषय-नामिकाओं की क्रम-सूची

1. अर्थशास्त्र
2. आयुर्विज्ञान (नैदानिक विषय)
3. भेषज विज्ञान
4. आयुर्विज्ञान (पूर्व-नैदानिक विषय)
5. आयुर्विज्ञान (परा-नैदानिक विषय)
6. इतिहास
7. इंजीनियरी
8. कृषि विज्ञान
9. गणित
10. दर्शन
11. नृ-विज्ञान
12. पशुपालन और पशु-चिकित्सा विज्ञान
13. प्राणि-विज्ञान
14. भाषा-विज्ञान
15. भूगोल
16. भू-विज्ञान
17. भौतिकी
18. मनोविज्ञान
19. रसायन-विज्ञान
20. राजनीति-विज्ञान
21. वनस्पति-विज्ञान
22. वाणिज्य
23. विधि
24. शिक्षा
25. समाज-विज्ञान
26. समालोचना

विषय-नामिकाओं की सदस्य-सूची

1. **अर्थशास्त्र :**

अध्यक्ष :

1. प्रो० एम० वी० माथुर,
निदेशक,
एशियन इन्स्टीट्यूट आफ प्लानिंग एन्ड एडमिनिस्ट्रेशन,
इन्द्रप्रस्थ स्टेट, नई दिल्ली ।

2. प्रो० एम० डी० जोशी,
अर्थशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ।

3. प्रो० के० एन० प्रसाद,
अर्थशास्त्र विभाग,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना ।

4. प्रो० राज कृष्ण,
अर्थशास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर ।

5. प्रो० एन० झा,
अर्थशास्त्र विभाग,
भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर ।

6. प्रो० आर० एन० भार्गव,
अर्थशास्त्र विभाग,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

7. प्रो० विकास मिश्र,
अर्थशास्त्र विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा) ।

2. आयुर्विज्ञान (नैदानिक विषय) :

अध्यक्ष : 1. डा० एस० बालसुब्रह्मण्यम,
सदस्य,
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
वेस्ट ब्लाक-7,
रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-22 ।

2. डा० जी० डी० सिंहल,
न्यू एफ/1, हैदराबाद कालोनी,
वाराणसी ।

3. डा० एस० एन० उपाध्याय,
मेडीकल कालिज, पटना ।

4. डा० एल० एस० एन० प्रसाद,
मेडीकल कालिज, पटना

5. डा० एम० पी० मिश्र,
मेडीकल कालिज, जबलपुर ।

6. डा० एल० एम० सिंघवी,
एस० एम० एस० मेडीकल कालिज,
जयपुर ।

7. डा० के० एन० माथुर
मेडीकल कालिज, कानपुर ।

3. **भेषज-विज्ञान :**

अध्यक्ष : 1. श्री एम० एल० श्रोफ,
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर, भेषज-विज्ञान
78, डा० सुन्दरी मोहन एवेन्यू,
कलकत्ता ।

2. डा० जी० पी० श्रीवास्तव,
फार्मेस्यूटिक्स
विभाग,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

3. डा० एस० एन० शर्मा,
सागर विश्वविद्यालय, सागर।

4. डा० सी० एस० शाह,
एल० एम० कालिज आफ फार्मेसी,
नवरंगपुरा, अहमदाबाद-9।

5. डा० बी० एम० मित्तल,
बिरला कालिज,
पिलानी (राजस्थान)।

4. आयुर्विज्ञान (पूर्व-नैदानिक विषय) :

अध्यक्ष : 1. डा० धर्मनारायण,
लखनऊ मेडीकल कालिज,
लखनऊ।

2. डा० इन्द्रजीत दीवान,
मेडीकल कालिज, रोहतक (हरियाणा)

3. डा० बी० पी० सिन्हा,
मौलाना आजाद मेडीकल कालिज,
नई दिल्ली-1।

4. डा० ए० सरन,
पी० डब्ल्यू० मेडीकल कालिज, पटना।

5. डा० चतुर्वेदी,
जयपुर मेडीकल कालिज,
जयपुर।

6. डा० एन० पी० बनवारी,
अतिरिक्त निदेशक,
स्वास्थ्य सेवा
(मेडीकल एडमिनिस्ट्रेशन)
मध्य प्रदेश, भोपाल।

7. डा० नाग चौधरी,
मेडीकल कालिज, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

5. आयुर्विज्ञान (परा-नैदानिक विषय) :

अध्यक्ष : 1. डा० पी० एन० वाही,
कुलपति,
आगरा विश्वविद्यालय,
आगरा ।

2. डा० एन० एल० मोदी,
मेडीकल कालिज, पटना ।

3. डा० के० पी० भार्गव,
मेडीकल कालिज, लखनऊ ।

4. डा० बी० एन० शर्मा,
जयपुर मेडीकल कालिज, जयपुर ।

5. डा० आई० एम० गुप्ता,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

6. डा० जे० बी० श्रीवास्तव,
अतिरिक्त महानिदेशक, स्वास्थ्य सेवा,
निर्माण भवन, नई दिल्ली ।

7. डा० एम० सी० मित्तल,
एम० जी० एम० मेडीकल कालिज,
इन्दौर (मध्य प्रदेश) ।

6. इतिहास :

अध्यक्ष : 1. प्रो० के० के० दत्त,
कुलपति,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना ।

2. डा० बिश्वेश्वर प्रसाद,
कुलपति,
भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर ।

3. डा० आर० बी० पांडे,
कुलपति,
जबलपुर विश्वविद्यालय,
जबलपुर ।

4. डा० नुरुल हसन,
इतिहास विभाग,
अलीगढ़ विश्वविद्यालय,
अलीगढ़ ।

5. डा० सतीशचन्द्र
इतिहास विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर ।

6. डा० आर० एस० शर्मा,
इतिहास विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

7. डा० बुध प्रकाश,
इतिहास विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ।

7. इंजीनियरी :

अध्यक्ष : 1. श्री एम० आर० चोपड़ा,
कुलपति,
रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की ।

2. डा० स्वामी शरण,
प्रिंसिपल,
रीजनल इंजीनियरी कालिज,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा) ।

3. डा० गोपाल त्रिपाठी,
निदेशक, इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नालॉजी,
वाराणसी ।

4. डा० जगदीश लाल,
इंजीनियरी कालिज,
इलाहाबाद ।

5. डा० डी० एन० प्रसाद,
निदेशक,
खनिज अनुसंधान संस्थान,
धनबाद ।

6. डा० अनन्तरमन,
इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नालॉजी,
वाराणसी ।

7. श्री एस० एस० बनर्जी,
इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नालॉजी
वाराणसी-5 ।

8. श्री एस० आर० बीडकर
डायरेक्टर ऑफ
टेक्नीकल एजुकेशन, एम० पी०
भोपाल ।

9. प्रो० आर० एम० अडवानी,
मालवीय रीजनल इंजीनियरी कालिज,
जयपुर ।

10. प्रो० एस० प्रसाद,
बिहार इंस्टीट्यूट ऑफ
टेक्नालॉजी, सिन्द्री, बिहार ।

8. कृषि विज्ञान :

अध्यक्ष :

1. डा० डी० पी० सिंह,
कुलपति ।
उ० प्र० कृषि विश्वविद्यालय,
पंतनगर, उ० प्र० ।

2. डा० आर० के० गुप्ता,
डीन, कृषि संकाय,
जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,
जबलपुर ।

3. डा० आर० एम० सिंह,
एसोसिएट डीन,
कालेज ऑफ एग्रीकल्चर,
जोबनेर, राजस्थान ।

4. डा० ओ० पी० गौतम,
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली ।

5. प्रो० आर० एस० चौधरी,
प्रोफेसर, कृषि,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

6. डा० चन्द्रकांत ठाकुर,
प्रधानाचार्य,
बिहार कृषि कालिज,
सबौर, भागलपुर ।

9. गणित :

अध्यक्ष : 1. डा० आर० एस० मिश्र,
प्रोफेसर, गणित,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी-5 ।

2. डा० आर एस० वर्मा,
प्रोफेसर, गणित,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

3. डा० डी० एन० मिश्र,
प्रोफेसर, गणित,
सागर विश्वविद्यालय,
सागर ।

4. डा० एस० डी० चोपड़ा,
प्रोफेसर, गणित,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र ।

5. प्रो० जे० एन० कपूर,
गणित विभाग,
इंडियन इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नालॉजी,
कानपुर ।

10. **दर्शन** :

अध्यक्ष :

1. प्रो० एच० एम० झा,
   दर्शन विभाग,
   पटना विश्वविद्यालय,
   पटना।
2. डा० बी० एल० आत्रेय,
   प्रोफेसर, दर्शन विभाग,
   आत्रेय निवास,
   पो०-बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
   वाराणसी-5।
3. डा० एन० के० देवराज,
   प्रोफेसर, दर्शन विभाग,
   बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
   वाराणसी।
4. डा० ए० के० सिन्हा,
   प्रोफेसर, दर्शन विभाग,
   कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
   कुरुक्षेत्र।
5. डा० सी० डी० शर्मा,
   प्रोफेसर, दर्शन विभाग,
   जबलपुर विश्वविद्यालय,
   जबलपुर।
6. डा० याकूब मसीह,
   प्रोफेसर, दर्शन विभाग,
   स्नातकोत्तर विभाग,
   मगध विश्वविद्यालय,
   गया (बिहार)।
7. डा० दयाकृष्ण,
   दर्शन विभाग,
   राजस्थान विश्वविद्यालय,
   जयपुर।

11. **नृ-विज्ञान** :

अध्यक्ष :

1. प्रो० डा० एस० सी० दूबे,
   नृविज्ञान विभाग,
   सागर विश्वविद्यालय,
   सागर।

2. प्रो० एल० पी० विद्यार्थी,
   राँची विश्वविद्यालय, राँची ।
3. प्रो० डा० के० एस० माथुर,
   नृ-विज्ञान विभागाध्यक्ष,
   लखनऊ विश्वविद्यालय,
   लखनऊ ।
4. डा० सच्चिदानन्द,
   नृ-विज्ञान प्रोफेसर,
   ए० एन० एस० इन्स्टीट्यूट
   ऑफ सोशल स्टडीज़,
   पटना ।

5-7. अध्यक्ष द्वारा नामित किये जाने हैं ।

12. **पशुपालन और पशुचिकित्सा विज्ञान** : इस नामिका का गठन अभी होना है ।

13. **प्राणि-विज्ञान** :

अध्यक्ष :

1. डा० एम० एल० रूनवाल,
   कुलपति,
   जोधपुर विश्वविद्यालय,
   जोधपुर ।
2. डा० सुरेश केशव,
   प्रोफेसर, प्राणि-विज्ञान,
   पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
3. डा० एस० एम० आलम,
   प्रोफेसर, प्राणि विज्ञान,
   अलीगढ़ विश्वविद्यालय,
   अलीगढ़ ।
4. डा० एच० एस० चौधरी,
   प्रोफेसर, प्राणिविज्ञान,
   गोरखपुर विश्वविद्यालय,
   गोरखपुर ।
5. डा० थापलियाल,
   रीडर, प्राणि-विज्ञान,
   बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
   वाराणसी ।

6. डा० एच० स्वरूप,
प्रोफेसर, प्राणिविज्ञान,
विक्रम विश्वविद्यालय,
उज्जैन, म० प्र०।

7. डा० पी० एन० श्रीवास्तव,
प्रोफेसर, प्राणि-विज्ञान,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर।

14. भाषा-विज्ञान :

अध्यक्ष :

1. डा० बी० आर० सक्सेना,
अध्यक्ष,
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
वेस्ट ब्लाक—7, आर० के० पुरम,
नई दिल्ली-22।

2. डा० यू० एन० तिवारी,
भाषा-विज्ञान विभाग,
जबलपुर विश्वविद्यालय,
जबलपुर।

3. डा० राम नाथ सहाय,
के० एम० इन्स्टीट्यूट आफ
हिन्दी स्टडीज़ एंड लिंगुस्टिक्स,
आगरा (उ० प्र०)।

4. डा० एस० एम० कत्रे,
निदेशक,
सेंटर ऑफ एडवांस्ड लिंगुस्टिक्स,
दक्कन कालेज,
पूना।

5. डा० वीरेन्द्र श्रीवास्तव,
भाषा-विज्ञान विभाग,
भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर।

6. प्रो० जी० जे० सोमयाजी,
प्रधान अनुसंधान अधिकारी (भाषा),
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
वेस्ट ब्लाक—7, आर० के० पुरम,
नई दिल्ली-22।

7. डा० धीरेन्द्र वर्मा,
13, बन्द रोड,
इलाहाबाद।

15. भूगोल :

अध्यक्ष :

1. डा० आर० एल० सिंह,
प्रोफेसर, भूगोल,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी।

2. डा० पी० दयाल,
प्रोफेसर, भूगोल,
पटना विश्वविद्यालय, पटना।

3. डा० वी० सी० मिश्र,
प्रोफेसर, भूगोल,
सागर विश्वविद्यालय,
सागर।

4. डा० ए० के० तिवारी,
प्रोफेसर, भूगोल,
जोधपुर विश्वविद्यालय,
जोधपुर।

5. डा० ई० अहमद,
प्रोफेसर, भूगोल,
राँची विश्वविद्यालय,
राँची।

6. डा० मुहम्मद शफी,
प्रोफेसर, भूगोल,
अलीगढ़ विश्वविद्यालय,
अलीगढ़।

16. भौतिकी :

अध्यक्ष :

1. डा० ए० आर० वर्मा,
निदेशक,
राष्ट्रीय भौतिक
अनुसन्धानशाला,
दिल्ली।

2. डा० नन्दलाल सिंह,
निदेशक,
हिन्दी प्रकाशन समिति,
भौतिकी कक्ष,
वाराणसी ।

3. डा० आर० एन० राय,
रीडर, भौतिकी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।

4. डा० बी० एन० सिंह,
प्रोफेसर, भौतिकी,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना ।

5. डा० एस० पी० सिन्हा,
प्रोफेसर, भौतिकी,
भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर ।

6. डा० कृष्ण जी,
प्रोफेसर, भौतिकी,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद ।

17. **भू-विज्ञान :**

अध्यक्ष : 1. डा० जी० झिंगरन,
प्रोफेसर, भू-विज्ञान,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

2. डा० आर० सी० मिश्र,
प्रोफेसर, भू-विज्ञान,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ ।

3. डा० आर० सी० सिन्हा,
प्रोफेसर, भू-विज्ञान,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना ।

4. प्रो० बी० एस० तिवारी,
भू-विज्ञान विभाग,
उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर ।

5. डा० हरि नारायण,
निदेशक,
एन० जी० आर० आई०,
हैदराबाद ।

6. डा० एस० सी० चटर्जी,
प्रोफेसर, भू-विज्ञान,
विक्रम विश्वविद्यालय,
उज्जैन ।

7. प्रो० एस० के० अग्रवाल,
भू-विज्ञान विभाग,
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5 ।

18. मनोविज्ञान :

अध्यक्ष :

1. डा० डी० सिन्हा,
प्रोफेसर, मनोविज्ञान,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद ।

2. डा० एच० एस० अस्थाना,
प्रोफेसर, मनोविज्ञान,
सागर विश्वविद्यालय,
सागर ।

3. डा० राज नारायण,
प्रोफेसर, मनोविज्ञान,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ ।

4. डा० एच० सी० गांगुली,
प्रोफेसर, मनोविज्ञान,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

5. डा० सच्चिदानन्द सिन्हा,
प्रोफेसर, मनोविज्ञान,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर ।

6. डा० एम० एम० सिन्हा,
प्रोफेसर, मनोविज्ञान,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

7. डा० एम० एम० मोहसीन,
प्रोफेसर, मनोविज्ञान,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना।

19. रसायन-विज्ञान:

अध्यक्ष :

1. डा० सत्य प्रकाश,
10, बेली एवेन्यू,
इलाहाबाद ।

2. डा० आर० सी० मेहरोत्रा,
कुलपति,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर ।

3. डा० एस० एस० निगम,
प्रोफेसर, रसायन,
सागर विश्वविद्यालय,
सागर ।

4. डा० वी० पी० ज्ञानी,
प्रोफेसर, रसायन,
राँची विश्वविद्यालय,
राँची ।

5. प्रो० आर० सी० पॉल,
रसायन विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़ ।

6. प्रो० जी० एस० सहारिया,
रसायन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।

20. **राजनीति विज्ञान :**

अध्यक्ष :

1. प्रो० ए० बी० लाल,
   कुलपति,
   इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
   इलाहाबाद।
2. डा० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा,
   प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
   पटना विश्वविद्यालय,
   पटना।
3. डा० एस० पी० वर्मा,
   प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
   राजस्थान विश्वविद्यालय,
   जयपुर।
4. डा० ए० अवस्थी,
   प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
   सागर विश्वविद्यालय,
   सागर।
5. डा० एस० एन० वर्मा,
   प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
   दिल्ली विश्वविद्यालय,
   दिल्ली।
6. डा० चेतकर झा,
   प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
   पटना विश्वविद्यालय,
   पटना।
7. डा० बी० एस० खन्ना,
   प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
   पंजाब विश्वविद्यालय,
   चन्डीगढ़।

21. **वनस्पति-विज्ञान :**

अध्यक्ष :

1. डा० आर० मिश्र,
   प्रोफेसर, वनस्पति-विज्ञान,
   बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
   वाराणसी।

2. डा० वी० पुरी,
प्रधानाचार्य,
मेरठ कालिज,
मेरठ।

3. डा० एस० बी० सक्सेना,
प्रोफेसर, वनस्पति-विज्ञान,
सागर विश्वविद्यालय,
सागर।

4. डा० आर० पी० राय
प्रोफेसर, वनस्पति-विज्ञान
पटना विश्वविद्यालय,
पटना।

5. डा० डी० डी० पन्त,
प्रोफेसर, वनस्पति-विज्ञान,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

6. डा० बी० त्यागी,
प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर।

22. वाणिज्य :

अध्यक्ष : 1. प्रो० के० सी० सरकार,
वाणिज्य विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ।

2. प्रो० डी० एन० एलहान्स,
वाणिज्य विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर,

3. प्रो० सी० डी० सिंह,
वाणिज्य विभाग,
भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर।

4. प्रो० डा० टी० एन० कपूर,
   वाणिज्य विभाग,
   पंजाब विश्वविद्यालय,
   चन्डीगढ़ ।
5. प्रो० ए० एन० अग्रवाल,
   वाणिज्य विभाग,
   इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
   इलाहाबाद ।
6. प्रो० एस० के० आर० भंडारी,
   वाणिज्य विभाग,
   बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
   वाराणसी ।
7. प्रो० पी० एन० शर्मा,
   वाणिज्य विभाग,
   पटना विश्वविद्यालय,
   पटना ।

23. विधि :

अध्यक्ष :

1. श्री आर० एन० शर्मा,
   अध्यक्ष,
   विधायी राजभाषा आयोग,
   विधि मन्त्रालय, भगवान दास रोड,
   नई दिल्ली ।
2. डा० आनन्द जी,
   प्रधानाचार्य,
   विधि कालेज,
   वाराणसी ।
3. डा० पी० के० त्रिपाठी,
   विधि विभाग,
   दिल्ली विश्वविद्यालय,
   दिल्ली ।
4. डा० वी० एम० शुक्ल,
   विधि विभाग,
   लखनऊ विश्वविद्यालय,
   लखनऊ ।

5. श्री बी० एन० श्रीवास्तव,
विधि विभाग,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना।

6. श्री जी० एस० शर्मा,
विधि विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर ।

7. डा० नरेन्द्र सिंह,
विधि विभाग,
जबलपुर विश्वविद्यालय,
जबलपुर ।

24. **शिक्षा :**

अध्यक्ष :

1. डा० एस० बी० अदावाल,
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद ।

2. डा० आत्मानंद,
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
सागर विश्वविद्यालय,
सागर ।

3. प्रो० उदयशंकर,
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र ।

4. प्रो० आर० पी० सिंह,
प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
मैसूर विश्वविद्यालय,
मानसागोतरी,
मैसूर।

5. प्रो० ए० मुजीब,
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
अलीगढ़ विश्वविद्यालय,
अलीगढ़ ।

6. डा० एम० वर्मा,
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर ।

7. श्री वेद प्रकाश,
एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर,
एशियन इन्स्टीट्यूट
ऑफ प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन,
इन्द्रप्रस्थ स्टेट, नई दिल्ली ।

25. **समाज-विज्ञान** :

अध्यक्ष : 1. डा० आर० एन० सक्सेना,
निदेशक,
सामाजिक विज्ञान संस्थान,
आगरा ।

2. डा० इन्द्र देव,
प्रोफेसर, समाज-विज्ञान,
जोधपुर विश्वविद्यालय,
जोधपुर ।

3. डा० प्रभात चन्द्र,
प्रोफेसर, समाज-विज्ञान,
जबलपुर विश्वविद्यालय,
जबलपुर ।

4. डा० एस० के० श्रीवास्तव,
प्रोफेसर, समाज-विज्ञान,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी ।

5. डा० एम० एन० श्रीनिवास,
प्रोफेसर समाज-विज्ञान,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली ।

6. डा० ए० सरन,
प्रोफेसर, समाज-विज्ञान,
राँची विश्वविद्यालय,
राँची।

7. डा० एस० सी० दुबे,
प्रोफेसर, समाज-विज्ञान,
सागर विश्वविद्यालय,
सागर।

26. समालोचना :

अध्यक्ष :

1. डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी।

2. डा० नगेन्द्र,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली।

3. प्रो० डी० एन० शर्मा,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना।

4. प्रो० मोहन लाल,
अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग,
सागर विश्वविद्यालय,
सागर।

5. डा० सत्येन्द्र,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर।

6. प्रो० प्रकाश चन्द्र गुप्त,
अंग्रेजी विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

7. डा० विनय मोहन शर्मा,
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र।

1. अर्थशास्त्र विषय-नामिका की सिफारिशें*

अर्थशास्त्र विषय-नामिका की दो बैठकें क्रमश: 26 नवम्बर और २३ दिसम्बर, 1968 को शास्त्री भवन, शिक्षा-मन्त्रालय, भारत सरकार नयी दिल्ली में हुई। दूसरी बैठक में नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. प्रो० एम० वी० माथुर·····अध्यक्ष
2. प्रो० एम० डी० जोशी······सदस्य
3. प्रो० के० एन० प्रसाद·········,,
4. प्रो० राजकिशन ··· ·········,,
5. प्रो० विकास मिश्र············,,

नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरन्त अनुवाद की सिफारिश की है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
	MICRO — ECONOMICS	
1.	Theory of Price	Stigler
2.	Economic Analysis	Boulding
3.	Price System and Resources	Liftwitch
4.	Economics—An Introductory Analysis	Samuelson
5.	Price Theory	Friedman
6.	Economic Theory and Operational Analysis	Boumel
7.	The nature of Price Theory	Lichbasky
8.	Positive Economics	Lipsy and Steiner
9.	Survey of Economic Theory (3 Vols)	

* सिफारिश की गई पुस्तक-शीर्षकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
	MACRO — ECONOMICS	
1.	Money, Income and the Price Level	M.J. Bailey
2.	Macro-Economic Theory	Gardner Ackley
3.	Outline of Monetary Economics	A.C.L. Dey
4.	Readings in Macro-Economics	M.G. Muellar
5.	Money in a Theory of Finance	Gurley and Shaw
6.	Monetary Theory	Halm
	ECONOMICS OF GROWTH	
1.	Development Planning	W. A. Lewis
2.	Economic Development, Problems, Principles and Policies (latest Edition)	Higgins
3.	Economic Development	Kindleberger
4.	Six Lectures on Economic Growth	Kuznets
5.	Economic Factors in Economic Growth	Hussain
6.	Economics of Under-Development	Agarwal and Singh
	INTERNATIONAL ECONOMICS	
1.	International Economics	Kindleberger
2.	International Economics	Ellsworth
3.	Trade and Economic Structure	H.E. Caves
4.	Economic Policies towards less developed countries	H.G. Johnson
	OTHER BOOKS	
1.	Public Finance	R.A. Musgrave
2.	On the Economic Theory of Socialism	Lange and Taylor
3.	Theory of wages (Latest revised edition)	Hicks
4.	An Introduction to the Theory of Employment	Robinson
5.	Economic Development	Kindleberger
6.	Economics of Control	Lerner
7.	Labour Problems in the Industrialisation of India	Charles A. Meyer
8.	Essay on Marxian Economics	John Robinson
9.	Keynesian Revolution	Klein
10.	Theory of Monopolistic Competition	Chamberlin
11.	Monetary Theory & Fiscal Policy	Hansen
12.	Welfare Economics	Hla Mynt

2. आयुर्विज्ञान (नैदानिक) विषय-नामिका की सिफारिशें*

आयुर्विज्ञान (नैदानिक) विषय-नामिका की प्रथम बैठक 17-12-68 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. डा० एस० बालसुब्रह्मण्यम्·········अध्यक्ष
2. डा० के० एन० माथुर·········सदस्य
3. डा० एम० पी० मिश्र············,,
4. डा० जी० डी० सिंहल·····,,

1. **उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण :**

नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इसमें से कोई भी पुस्तक विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त नहीं पाई गई।

2. नामिका ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावलीआयोग द्वारा निर्माणाधीन पुस्तकों को विश्वविद्यालय स्तर के लिए स्वीकृत किया।

3. **नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरत अनुवाद की सिफारिश की है—**

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	Textbook of Surgery	Farqualarson
2.	Textbook of Gynaecology	Wilferd Shaw
3,	Practical Nursing	Gorden Pugh
4.	Aids to Paediatric Nursing	M.A. Duncombe
5.	Aids to Tropical Hygiene and Nursing	W.M.C. Fream
6.	Aids to Anatomy Physiology	Katharine Armstron
7.	Aids to Medical Nursing	Marforia, Houghtong
8.	Surgical Nursing & After Treatment	Darling
9.	Surgical Nursing	Stewart
10.	Nutrition in tropical countries	Welborn, H.F.

---

* सिफारिश की गई पुस्तक-शीर्षकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
11.	Basic Nutrition & Diet therapy for Nurses	Mowry, L.
12.	Chemistry & Physics Manual	Sister Tutor, Delhi T.N.A.I.
13.	Public Health Manual	Bishop
14.	Textbook for Midwives	Margret Myles
15.	Laboratory Manual of Microbiology	Steward, H.M.
16.	Aids to Bacteriology for Nurses	E. Joan Bocock & K.F. Armstrong
17.	A new textbook of Medicine for Nurses	Gorden sears
18.	General textbook of Nursing	Evellyn Pearce
19.	Surgery for Nurses	Moroney
20.	Aids to Surgical Nursery	Katharine & Armstrong
21.	Textbook for Surgery (If the copyright is refused, an adaptation of the book may be prepared).	Baley & Love
22.	Clinical Methods in Surgery	Dr. Dass
23.	Textbook of Operative Surgery	Farqualarson
24.	Operative Surgery	Dr. Dass
25.	Textbook of Medicine	Davidson
26.	Textbook of Obstetrics	Mudaliar & Menon
27.	Textbook of Gynaecology	Masani
28.	Textbook of Obstetrics	Wilfred Shaw
29.	Notes on Leprosy	Dharmendra
30.	A system of Fractures & Orthopaedics	A. Grahm Apley
31.	Introduction to Anaesthesiology for Medicial students, & House-surgeons	V. Rajgopalan
32.	U.S.I.S. Air-force pamphlet on Blood-transfusion	
33.	Textbook of surgical Pathology	Illingworth & Dick.
34.	Physical Signs in clinical surgery	Hamilton Bailey
35.	An Aid to surgical Diagnosis	S.P. Shrivastava
36.	Surgical Handicraft	Pye
37.	Diseases of the Eye	May & Worth
38.	Clinical Methods	Rustam Jal Vakil
39.	Medical Jurisprudence & Toxicology	Modi
40.	Clinical Methods	Hutchinson
41.	Mechanical suture in vascular Surgery	Adrosov, P.
42.	Corneal transplantation in complicated Lukomas	Puchkouskaya, N.
43.	Rickets	Bessonova, M.
44.	Obstetrics & Gynaecology	Kapalan, A.
45.	Diseases of Thyroid gland	Khavkin & Nikolaev

क्रम सं०	पुस्तकें	लेखक
46.	Tuberculosis	Einis, Prof. U.L.
47.	Textbook of Surgery	Velikoretsky, A
48.	Infectious diseases	Bunn

(41-48 तक वे पुस्तकें हैं जो Indo-Soviet Textbook Board द्वारा भी स्वीकृत हैं)

4. नामिका ने निम्न पुस्तकों के बारे में यह सिफारिश की है कि ये पुस्तकें लेखक-मंडलों द्वारा अंग्रेजी में लिखाकर उनका हिन्दी में अनुवाद करवाया जाए।

1. Textbook of Medicine by Dr. S.S. Misra and Dr. N.N. Gupta of Medical College, Lucknow (manuscript ready)
2. Textbook of Medicine by Association of Physicians of India (under preparation)
3. Textbook of Medical treatment on the model of Dunlop
4. Textbook of Surgery
5. Emergency Surgery
6. Textbook of Orthopaedics
7. Textbook of Obstetrics & Gynaecology
8. A book on Anaesthesiology
9. Textbook of Radiology
10. Textbook of Radiotherapy
11. Textbook of ENT Surgery by Prof. Sinha, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi (manuscript ready)
12. Textbook on Dental Surgery
13. Textbook of History of Medicine

5. नामिका ने निम्न पुस्तकों को मौलिक रूप से लिखने की सिफारिश की है।

1. Textbook of Medicine
2. Clinical Methods
3. A book on Tuberculosis

6. List of M.B.B.S. level books under production in C.S.T.T.

1. Textbook of Surgery by Sangam Lal & Menon (In press)
2. Textbook of ophthalmology by Drs. Gokhle, Gupta & Sood (Original writing directly into Hindi)
3. Textbook of Obstetrics by Dr. (Miss) M. Mukerjee (Original writing directly into Hindi)
4. Clinical Anaesthesiology by Dr. Joshi (Original writing directly into Hindi)
5. Diseases of the Eye by Dr. S.P. Gupta (accepted for translation)
6. Practice of Dermatology by Dr. P.N. Behl
7. Manual of cutaneous medicine by Pilsbury
8. Practical paediatrics by Sley, Cannon & Kramer (Under translation in BHU Cell)
9. General Textbook of Nursing
10. Handbook of Midwifery
11. Clinical obstetrics by Menon & Mudaliar (Publisher's Scheme)
12. Medicine for Nurses (Publisher's Scheme)

3. भेषज-विज्ञान विषय-नामिका की सिफारिशें*

भेषज-विज्ञान विषय-नामिका की प्रथम बैठक 8-12-68 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. एम० एल० श्रोफ..............अध्यक्ष
2. डा० एस० एन० शर्मा............सदस्य
3. डा० बी० एम० मित्तल............,,
4. डा० जी० पी० श्रीवास्तव.........,,
5. डा० सी० एस० शाह..............,,

1. उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इसमें से कोई भी पुस्तक विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त नहीं पायी गई।

2. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरन्त अनुवाद/मौलिक लेखन की सिफारिश की—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
	(*a*) **Pharmaceutics**	
1.	Dispensing	Original writing
2.	Forensic Pharmacy	Mithal
3.	Pharm. Calculations	Schroff
4.	Microbiology	K. Pyatkin (Mir Pub., Moscow)
5.	Microbiology	Original writing (laying stress on sterilization, dis-infection, fermentation and preparation of immunological products)

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
	(*b*) **Pharm. Chemistry**	
1.	Pharm. Chemistry (5 vols.)	Schroff
2.	Quantitative Analysis	Vogel
3.	Quantitative Analysis (for reference purposes)	Alexeyev (Indo-Russia)
	(*c*) **Pharmacognosy**	
1.	Pharmacognosy	Claus and Tayler
2.	Pharmacognosy	Trease and Evans
3.	Practical Pharmacognosy	Original writing
	(*d*) **Pharmacology**	
1.	Applied Pharmacology	Clark
2.	Pharmacology	Lewis
	(*e*) **Physiology**	
1.	Human Anatomy & Physiology	V. Tatarinov
	(*f*) **Biochemistry**	
1.	Modern Biochemistry	Karlson
2.	Elementary Biochemistry	Mertz, E.T.
	(*g*) **Pharm. Engineering**	
1.	Unit Processes in Pharm. Engineering	Heinemann
	(*h*) **Drugs Marketing & Business Administration**	

इस विषय पर मौलिक पुस्तकें लिखी जानी चाहिए ।

4. आयुर्विज्ञान (पूर्व-नैदानिक) विषय-नामिका की सिफारिशें*

पूर्व-नैदानिक विषय-नामिका की प्रथम बैठक 9-12-68 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में हुई। इनमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. डा० धर्मनारायण············अध्यक्ष
2. डा० इन्द्रजीत दीवान·········सदस्य
3. डा० जे० नाग चौधरी··········,,
4. डा० ए० सरन················,,

1. नामिका ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के मुद्रणाधीन पुस्तकों को विश्वविद्यालय स्तर के लिए स्वीकृत किया।

2. **नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरन्त अनुवाद करने की सिफारिश की—**

(a) **Anatomy**

1. Gray's Anatomy
2. Cunningham's Manual of Practical Anatomy (Vols. I, II, III)
3. Histology by Hewer
4. Synopsis of Surgical Anatomy by McGregor
5. Radiology and Surface Anatomy

(b) **Physiology**

6. Translation of the book (nearing completion) by **Multiple Indian Authors**
7. Text book of Medical Physiology by **Gyton**
8. Living body by **Best and Taylor**
9. Text book of Physiology and Biochemistry by **Bell Davidson and Scorborough**
10. Applied Physiology by **Sampson Wright**
11. Physiology by **Bikov**

---

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

(c) Biochemistry

12. Physiological Chemistry by **Harper**
13. Biochemistry by Contro & Shepard
14. Micro-analysis in Medical Practice by (king) Wooten
15. Text Book of Physiology & Biochemistry by Bell, Davidson and Scorborough
16. Text Book of Biochemistry by Harrow & Mazur
17. Living Body by Best & Taylor
18. Biochemistry by Thorpe

3. नामिका ने सिफारिश की कि निम्न पुस्तकें लेखक मण्डल द्वादा अंग्रेजी में लिखाकर उनका हिन्दी में अनुवाद करवाया जाए—

1. A book on Embryology
2. A book on Dissection (if it is not possible to translate the Cunningham's Manual of Practical Anatomy, Vols. I, II, and III on account of the copyright or some other difficulty)
3. Practical Biochemistry
4. Text Book of Biochemistry

5. आयुर्विज्ञान (परा-नैदानिक) विषय-नामिका की सिफारिशें*

परा-नैदानिक विषय-नामिका की प्रथम बैठक 26-12-68 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. डा० पी० एन० वाही……अध्यक्ष
2. डा० आई० एम० गुप्त……सदस्य

1. उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तक डा० गर्ग द्वारा रचित मानव-व्याधिकी का सामान्य रूप से निरीक्षण किया और यह विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पायी गई। नामिका ने यह सुझाव दिया कि अगले संस्करण में इसके शीर्षक का उपयुक्त संशोधन किया जाए।

2. नामिका का यह विचार था कि निम्न पुस्तकें अनेक भारतीय लेखकों द्वारा अंग्रेजी में लिखी जाएं और फिर उनका अनुवाद किया जाए—

1. Text book of Pathology
2. Text book of Microbiology
3. Text book of Parasitology
4. Text book of Pharmacology
5. Text book of Preventive and Social Medicine

3. नामिका ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के निर्माणाधीन निम्न पुस्तकों को विश्वविद्यालय स्तर के लिए स्वीकृत किया—

1. Text book of Microbiology by **Mackie & McCarthy,** Edited by W. Cruickshank
2. Basic Facts in Pharmacology by **Brooks**
3. Text book of Pathology by **Robbins**

4. नामिका ने निम्न पुस्तकें वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अधीन अनुवाद के लिए अनुमोदित कीं—

---

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

1. Text book of Bacteriology by **Zinger**
2. Whitby & Hynes' Medical Bacteriology by **Martine Hynes**

5. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरत अनुवाद की सिफारिश की—

1. Textbook of Parasitology by Chaterjee
2. Doctor in Community by **Lavil and Clark** (the same book as 'Preventive Medicine for Physicians and his Community')
3. Rural Health in India, published by the Govt. of India (Ministry of Health)
4. Textbook of Hygiene by **Dr. Ghosh** (after revision of the present edition)
5. Textbook of Jurisprudence & Toxiology by **Modi**
6. Muir's Textbook of Pathology by **D.F. Cappell**
7. Manson's Tropical Diseases by **Phillip H. Manson Hanr**

6. इंजीनियरी विषय-नामिका की सिफारिशें*

इंजीनियरी विषय-नामिका की प्रथम बैठक 5-12-68 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. श्री एम० आर० चोपड़ा अध्यक्ष
2. डा० गोपाल त्रिपाठी सदस्य
3. डा० जगदीश लाल ,,
4. डा० एस० एस० बनर्जी ,,

1. इसके बाद 6-1-69 को विषय-नामिका के साथ 'इंजीनियरी मूलभूत विषय उपनामिका' और 7-1-69 को पोली टैकनीक विषय उपनामिका' की बैठकें हुईं।

2. इंजीनियरी-मूलभूत विषय उपनामिका की बैठक 6-1-69 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. डा० डब्ल्यू० यू० मलिक सदस्य
2. डा० एस० वाई० तिवारी ,,
3. डा० टी० एस० मूर्ति ,,
4. डा० एस० एन० सिन्हा ,,
5. डा० जे० एन० कपूर ,,
6. डा० आर० एस० मित्तल ,,
7. डा० सी० पी० अरोड़ा ,,
8. प्रो० आर० एन० थेकर ,,

इंजीनियरी विषय-नामिका के श्री एम० आर० चोपड़ा, अध्यक्ष और डा० जगदीश लाल, सदस्य भी इसमें उपस्थित थे।

3. उप-नामिका ने निम्न पुस्तक शीर्षकों के अनुवाद की सिफारिशें इस दृष्टि से की कि इनके अनुवाद हो जाने पर इस विषय में हिन्दी के माध्यम से पढ़ाने के लिए न्यूनतम अनिवार्य अनूदित साहित्य उपलब्ध हो सके—

1. **Geology :**

   (*a*) Engineering Geology by Lagget
   (*b*) Geology for Engineers by J.M. Trefthen

---

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

2. **Workshop :**

(*a*) Applied Workshop Calculations by Chapman

3. **Drawing :**

(*a*) First Year Engineering Drawing by A.C. Parkinson (after incorporating MKS units and 3rd angle projection)

(*b*) Intermediate Engineering Drawing by A.C. Parkinson (,,)

(*c*) Machine Drawing by B. Dass Sharma

(*d*) Practical Geometry and Graphics by Abbot

(*e*) Engineering Graphics by Anant Krishnan & Siddique (Publisher Prantice Hall)

4. **Mathematics :**

(*a*) Advanced Mathematics for Engineers by Dr. Chandrika Prasad (Technical Press, Allahabad)

(*b*) Applied Mathematics for Engineers and Physicists by L.A. Pipes

(*c*) Calculus & Analytical Geometry by G.B. Thomas (Addison Wesley)

(*d*) Engineering Mathematics by Kreyszig

(*e*) Higher Mathematics for Engineers and Physicists by Sokolonikoff

5. **Chemistry :**

(*a*) Engineering Chemistry by Jagjit Singh

(*b*) Applied Chemistry for Engineers by E.S. Gyngell (BIP)

(*c*) Chemistry for Engineering Materials by Leigbou

(*d*) Concise Inorganic Chemistry by J.D. Lee (Van Nostrand)

(*e*) Elements of Physical Chemistry by Glasstone & Lewis

(*f*) Organic Chemistry by Fieser & Fieser

6. **Mechanics & Strength of Materials :**

(*a*) Mechanics of Solids by Crandle & Dahl

(*b*) Statics & Dynamics by Meriam

(*c*) Mechanics by Beer & Johnson

(*d*) Mechanics of Materials by Popov

7. **Physics :**

(*a*) Physics by Halliday & Resnick (John Wiley)

(*b*) Modern Physics for Engineers by W. Sproul (John Wiley)

(*c*) Modern Physics by Oldenberg & Rasmusen (Mc.graw)

N.B. *These books also find place in the list of books already recommended by other basic science panels.*

4. शब्दावली आयोग की निम्न पुस्तकों को नामिका ने विश्वविद्यालय स्तर का पाया :

List of Books under Publication

1. Introduction to Irrigation Engineering by Bharat Singh
2. Theory and Analysis of structure by Jain and Jain
3. Fundamentals of Radio Communications by Sheingold
4. Highway Engineering by Vaswani
5. Sewerage and Sewage Treatment by Kshirsagar
6. Complete Drawing Course for Overseers and Engineers by Chitale
7. Basic Naval Architecture by Barnbay

List of Books under Vetting

1. Railway Engineering by N.K. Vaswani
2. Water supply & Sewerage by Steel
3. Alternating Current Machine by Puchstein
4. Sewerage & Sewage Treatment by Babbitt

List of Books under Translation

1. Engineering for Dams by Willson P. Creager (Vol. I, II, & III)
2. Basis of Reclamation by Koschekof
3. Elementary Mechanics of Fluid by Rouse
4. Highway Engineering by Glesby
5. Soil Testing for Engineers by Lambe
6. Foundation Engineering by Peck
7. Modern Surveying Vol. II by P.B. Shahni
8. Theory of Machine by Green

इंजीनियरी विषय नामिका द्वारा उप-नामिकाओं के गठन का संक्षिप्त विवरण

इंजीनियरी विषय-नामिका ने यह निश्चय किया कि सब से पहले इंजीनियरी के स्नातक स्तर की पुस्तकें तथा पोलिटेक्निक स्तर की पुस्तकें लिखी जाएं या अनूदित की जाएं। इंजीनियरी के स्नातक स्तर के मूलभूत विषयों की पुस्तकें व्यावहारिक गणित, व्यावहारिक यांत्रिकी, व्यावहारिक भौतिकी, व्यावहारिक रसायन, व्यावहारिक भू-विज्ञान, वर्कशाप प्रेक्टिस और इंजीनियरी ड्राइंग में होनी चाहिये।

इंजीनियरी नामिका ने यह भी निश्चय किया कि मूलभूत विषयों और इंजीनियरी के अन्य प्रमुख नौ विषयों के लिये अलग से दस उपनामिकाएं गठित की जानी चाहिये। इन दस उपनामिकाओं की सदस्य सूची नीचे दी जा रही है।

1. मूलभूत विषय उपनामिका

अध्यक्ष :

1. श्री एम० आर० चोपड़ा,
   कुलपति,
   रुड़की विश्वविद्यालय,
   रुड़की।
2. डा० एस० वाई० तिवारी,
   बिड़ला इन्स्टिट्यूट ऑफ
   टेक्नोलॉजी, पिलानी,
   राजस्थान।
3. डा० डब्ल्यू० यू० मलिक,
   भौतिकी विभागाध्यक्ष,
   रुड़की विश्वविद्यालय,
   रुड़की।
4. डा० जे० एन० कपूर,
   गणित विभागाध्यक्ष
   इण्डियन इन्स्टिट्यूट आफ टेक्नोलॉजी,
   कानपुर।

5. डा० एच० एस० मित्तल,
भू-विज्ञान विभागाध्यक्ष
रुड़की विश्वविद्यालय,
रुड़की ।

6. डा० एस० एन० सिन्हा,
द्वारा
डा० जगदीश लाल,
इंजीनियरी कॉलेज,
इलाहाबाद ।

7. भौतिकी विभागाध्यक्ष,
गवर्नमेन्ट इंजीनियरी कॉलेज
जबलपुर (मध्य प्रदेश) ।

8. इंजीनियरी वर्कशाप, विभागाध्यक्ष,
माधव इंजीनियरी कॉलेज,
ग्वालियर (मध्य प्रदेश) ।

9. डा० आर० पी० शुक्ल
रसायन विभागाध्यक्ष
गवर्नमेन्ट कॉलेज आफ इंजीनियरी,
रायपुर (मध्य प्रदेश) ।

10. व्यावहारिक भू-विज्ञान विभागाध्यक्ष,
धनबाद, बिहार ।

2. विद्युत्-उपनामिका

अध्यक्ष : श्री० एम० आर० चोपड़ा,

1. डा० टी० एस० एम० राव,
विद्युत विभाग,
रुड़की विश्वविद्यालय,
रुड़की ।

2. प्रो० आर० ए० देशपांडे,
गवर्नमेन्ट इंजीनियरी कॉलेज,
जबलपुर ।

3. डा० स्वामी शरण,
प्रिंसीपल,
रिजनल इंजीनियरी कॉलेज,
कुरुक्षेत्र ।

3. यांत्रिक उपनामिका

अध्यक्ष : श्री० एम० आर० चोपड़ा,

1. डा० जगदीशलाल,
   इंजीनियरी कॉलेज,
   इलाहाबाद ।

2. प्रो० एन० एल० जैन,
   गवर्नमेन्ट इंजीनियरी कॉलेज,
   जयपुर ।

3. श्री० जे० पी० चौधरी
   निदेशक,
   बी० आई० टी०
   सिन्द्री, बिहार ।

4. सिविल इंजीनियरी उपनामिका

अध्यक्ष : श्री० एम० आर० चोपड़ा ।

1. डा० ओ० पी० जैन,
   सिविल इंजीनियरी विभाग,
   रुड़की विश्वविद्यालय
   रुड़की ।
2. डा० रामजी वर्मा,
   निदेशक, तकनीकी शिक्षा,
   पटना, बिहार ।
3. डा० ए० एल० लक्ष्मणस्वामी,
   भूतपूर्व निदेशक, तकनीकी शिक्षा,
   भोपाल ।

5. रासायनिक इंजीनियरी उपनामिका

अध्यक्ष :

1. डा० गोपाल त्रिपाठी,
   बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
   वाराणसी ।

2. डा० गुप्ता,
बिहार इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी,
सिन्द्री।

3. डा० गोपीनाथ,
बिहार इन्सटिट्यूट आफ
टेक्नोलॉजी, सिन्द्री, बिहार।

6. दूर-संचार इंजीनियरी उपनामिका

अध्यक्ष :
1. डा० एस० एस० बनर्जी,
इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी,
वाराणसी।

2. डा० आर० एस० शुक्ल,
दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरी,
दिल्ली।

3. डा० विभागाध्यक्ष
गवर्नमेन्ट इंजीनियरी कॉलेज,
जबलपुर (मध्यप्रदेश)।

7. वास्तुकला उपनामिका

अध्यक्ष :
1. श्री० जी० एम० मन्डालिया,
वास्तुकला विभाग,
रुड़की विश्वविद्यालय,
रुड़की।

2. प्रिंसीपल,
चण्डीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्कीटेक्चर,
चण्डीगढ़।

3. प्रो० सी० एस० एच० झलवाला,
वास्तुकला विभाग,
स्कूल ऑफ प्लॉनिंग एण्ड
आर्कीटेक्चर, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली।

8. सिरामिक उपनामिका

अध्यक्ष : 1. डा० गोपाल त्रिपाठी ।

2. डा० के० एस० विश्वनाथ,
वाराणसी ।

3. प्रो० के० डी० शर्मा,
सेन्ट्रल ग्लास सिरामिक
रिसर्च इन्स्टीट्यूट,
कलकत्ता ।

9. वस्त्र इंजीनियरी उपनामिका

अध्यक्ष : 1. डा० गोपाल त्रिपाठी ।

2. डा० एन० एम० स्वामी,
आई० आई० टी०,
दिल्ली ।

3. विभागाध्यक्ष,
टैक्साटाइल टैक्नोलॉजी
इन्स्टीट्यूट,
भिवानी, हरियाणा ।
डा० ई० डी० डेनुवला,

4. प्रिंसीपल,
गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल टेक्सटाइल
इन्स्टीट्यूट,
कानपुर ।

10. धातुशोधन इंजीनियरी उपनामिका

अध्यक्ष : 1. डा० अनन्तरामन
इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी,
वाराणसी ।

2. धातुशोधन विभागाध्यक्ष
गवर्नमेन्ट इंजीनियरी कॉलेज,
रायपुर (मध्य प्रदेश) ।

3. धातुशोधन इंजीनियरी विभागाध्यक्ष,
बी० वाई० टी०,
सिन्द्री, बिहार ।

इतिहास विषय-नामिका की सिफारिशें*

इतिहास विषय-नामिका की प्रथम बैठक 18-12-1968 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ला में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. डा० बिश्वेश्वर प्रसाद सदस्य
2. डा० नुरूल हसन सदस्य
3. डा० सतीश चन्द्र ”
4. डा० आर० एस० वर्मा ”
5. डा० बुद्ध प्रकाश ”

नामिका ने निश्चय किया कि वैदिक वाङ्मय और धर्म-शास्त्रों की ऐतिहासिक व्याख्या की जाए। ये टीकायें तीन सौ पृष्ठ से अधिक नहीं होनी चाहिये।

नामिका ने निश्चय किया कि विदेशी विशेषज्ञों द्वारा लिखे गये इतिहासों को प्राथमिकता दी जाए।

1. यूरोप का इतिहास
2. ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास
3. एशिया का इतिहास—मध्य, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण का इतिहास
4. सोवियत रूस का इतिहास
5. संयुक्त राज्य अमरीका का इतिहास
6. आधुनिक भारत का इतिहास

नामिका ने भारतीय इतिहास पर निम्न पुस्तकों के अनुवाद की सिफारिश की :—

1. **प्राचीन भारत :**

(क) कारपस इन्सक्रिपटियम इन्डिकारम की चारों जिल्दों का अनुवाद किया जाए किन्तु इसमें फ्लीट, प्रो० मिराशी और हल्श (Hultsch) की जिल्दों को प्राथमिकता दी जाए।

(ख) कौटिल्य का अर्थशास्त्र

(ग) यूनानी और चीनी स्रोत

(घ) प्राचीन भारतीय सिक्काषास्त्र पर कनिंघम और एलन के शास्त्रीय ग्रन्थ।

नामिका के अध्यक्ष प्रो० के० के० दत्त की अनुपस्थिति में बैठक की अध्यक्षता डा० बिश्वेश्वर प्रसाद ने की।

---

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

नामिका ने मध्ययुगीन भारत से सम्बन्धित निम्न पुस्तकों के अनुवाद की सिफारिश की :—

2. (क) फारसी की मूल आइने अकबरी के कुछ चुने हुए अंश टिप्पणी के साथ
   (ख) अकबरनामा—जिल्द दो और तीन
   (ग) सत्रहवीं सदी के क्रोनिकल्स की दोनों जिल्द (केवल मुगल काल)
   (घ) प्रलेख (एक जिल्द)
   (ङ) अफगान स्रोत—चयनिका (एक जिल्द) मध्य युगीन भारत का विदेशियों द्वारा लेखा जोखा (दो जिल्द)

उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

नामिका ने उपलब्ध—हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इसमें से निम्न पुस्तकें विश्व-विद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाई गई।

(क) प्राचीन भारत

श्रेणी	पुस्तक	लेखक
मूल	भारतीय पुरालिपिशास्त्र	ब्यूलर, जी०
मूल	प्राचीन भारतीय अभिलेखों का संग्रह	उपाध्याय, वासुदेव
मूल	प्राचीन भारतीय लिपिमाला	ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द
मूल	अशोक के अभिलेख	पांडेय, राजबली
मुल	भारतीय इतिहास के स्रोत सिक्के	राय, रामकुमार
मूल	भारतीय सिक्के	उपाध्याय, वासुदेव
मूल	गुप्तकालीन मुद्राएं	अल्टेकर, अनंत सदाशिव
पाठ्य-पुस्तक	भारतीय वास्तुकला	गुप्ता, पी० एल०
मानक-ग्रंथ	भारतीय स्थापत्य	पांडे, वीनापाणी
मानक-ग्रंथ	भारतीय स्थापत्य	शुक्ल, द्विजेन्द्रनाथ
सामान्य संदर्भ	प्रतिमा विज्ञान	शुक्ल, द्विजेन्द्रनाथ
सामान्य संदर्भ	भारतीय मूर्तिकला	रायकृष्णदास
सामान्य	पुरातत्त्व विज्ञान	पुरी, बैजनाथ
सामान्य	सिंधु सभ्यता	काला, सतीशचन्द्र
सामान्य	हड़प्पा-सिंधु सभ्यता का केन्द्र	शास्त्री, केदारनाथ
सामान्य	अथर्ववेद संहिता	चौधरी, राधाकृष्ण
पाठ्य-पुस्तक	भारतीय कला को बिहार की देन	सिंह, बी० पी०
सामान्य	ऋग्वेद पर एक ऐतिहासिक दृष्टि	वी० एन०
सामान्य	वैदिक संस्कृति का विकास	जोशी, लक्ष्मण शास्त्री

श्रेणी	पुस्तक	लेखक
सामान्य	वेद में आभूषण	राय गोविन्द चन्द्र
सामान्य	प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन	राय गोविन्द चन्द्र
मूल	जातक कालीन भारतीय संस्कृति	महतो, मोहनलाल
मानक ग्रंथ	बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास	पांडे, गोविन्दचन्द्र
	बुद्धकालीन भारतीय भूगोल	उपाध्याय, भरतसिंह
सामान्य	बुद्ध धर्म के 2500 वर्ष	बापत, बी० पी०
	बौद्ध धर्म और विहार	त्रिपाठी, हवलदार
	बौद्धकालीन भारत	भट्ट, जनार्दन
मूल	मेगेस्थनीज का भारत विवरण	मिश्र, योगेन्द्र
सामान्य	यवन इतिहासकारों का भारत भ्रमण	पांथरी, वी० पी०
	रासमाला	फोर्बस, ए० के० (तीन भागों में)
पाठ्य-पुस्तक	प्राचीन भारत में संघटित जीवन	बाजपेई, के० डी०
सामान्य	भारत का ऐतिहासिक एटलस	मिश्र, योगेन्द्र
	भारतीय राजशास्त्र प्रणेता	पांडेय, एस०
पाठ्य-पुस्तक	प्राचीन भारतीय शासन पद्धति	अल्टेकर, ए० एस०
पाठ्य-पुस्तक	हिंदू राज्यतंत्र (दो भागों में)	जायसवाल, काशी प्रसाद
सामान्य	कौटिल्य की शासन पद्धति	केला, भगवानदास
सामान्य	भारतीय राज्यशासन	केला, भगवानदास
सामान्य	मनु का राजधर्म	पांडे, श्यामलाल
सामान्य	शुक्र की राजनीति	पांडे, श्यामलाल
पाठ्य-पुस्तक	प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति	अल्टेकर, ए० एस०
पाठ्य-पुस्तक	हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता	बेनी प्रसाद
सामान्य	महाभारत कालीन समाज	भट्टाचार्य, एस०
मानक-ग्रंथ	धर्म शास्त्र का इतिहास	काने, पी० वी०
पाठ्य-पुस्तक	प्राचीन भारत	मुकर्जी, राधाकुमुद
पाठ्य-पुस्तक	हिंदू सभ्यता	मुकर्जी, राधाकुमुद
सामान्य	भारत के प्राचीन राजवंश	रेव, वी० एन०
सामान्य	भारतवर्ष में जाति में	सेन०, के० एन०
पाठ्य-पुस्तक	प्राचीन भारत का इतिहास	त्रिपाठी, रमाशंकर
सामान्य	भारत की प्राचीन संस्कृति	उपाध्याय, रामजी
सामान्य	भारतीय इतिहास की मीमांसा	विद्यालंकार, जयचन्द्र
सामान्य	प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप	अवस्थी, ए० एल०
मानक-ग्रंथ	पाणिनि कालीन भारतवर्ष	अग्रवाल, वासुदेवशरण

श्रेणी	पुस्तक	लेखक
सामान्य	भारत की मौलिक एकता	अग्रवाल, वासुदेवशरण
सामान्य	अंधकारयुगीन भारत का इतिहास	जायसवाल, काशीप्रसाद
सामान्य	प्राचीन भारत में अपराध और दंड	त्रिपाठी, हरिहरनाथ
सामान्य	प्राचीन भारत का इतिहास	पांडेय, विमलचन्द्र
सामान्य	भारतवर्ष का सामाजिक इतिहास	पांडेय, विमलचन्द्र
सामान्य	इतिहास पुराण का अनुशीलन	भट्टाचार्य, रमाशंकर
सामान्य	भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता	डा० प्रसन्नकुमार आचार्य
सामान्य	भारतीय परम्परा	हुमायूं कबीर
पाठ्य-पुस्तक	भारत का प्राचीन इतिहास	घोष, नरेन्द्रनाथ
	प्राचीन भारत	मजूमदार, रमेशचन्द्र
	प्राचीन भारत में नगर तथा नगर-जीवन	राय, उदयनारायण
सामान्य	प्राचीन भारत का इतिहास एवं उसकी संस्कृति	गुप्त, कमला
सामान्य	भारतीय संस्कृति	लल्लन जी गोपाल तथा ब्रजनाथ सिंह यादव
सामान्य	प्राचीन भारत की सभ्यता का इतिहास	दत्त, रमेशचन्द्र
सामान्य	हिन्दुस्तान की कहानी	नेहरू, जवाहरलाल
सामान्य	कला और संस्कृति	अग्रवाल, वासुदेवशरण
सामान्य	भारतीय संस्कृति का सर्वेक्षण	पणिक्कर, के० एम०
सामान्य	भारतीय इतिहास का परिचय	पांडेय, राजबली
सामान्य	हम भारत से क्या सीखें	मैक्समूलर
सामान्य	भारतीय संस्कृति का इतिहास	भटनागर, कालीशंकर
सामान्य	भारतीय संस्कृति के उपादान	मजूमदार, डी० एन०
सामान्य	भारत की संस्कृति और कला	मुकर्जी, राधाकमल
सामान्य	प्राचीन भारत का इतिहास	ओमप्रकाश
सामान्य	भारतीय संस्कृति का विकास	शास्त्री, मंगलदेव
पाठ्य-पुस्तक	भारत का वृहत् इतिहास (प्राचीन भारत-भाग-1)	मजूमदार, रमेशचन्द्र
	प्राचीन भारत की संग्रामिकता (1)	पांडे, रामदीन
सामान्य	प्राचीन भारत की दंडनीति	बागची, योगेन्द्रनाथ
सामान्य	मध्य-भारत का इतिहास (ई० पू० 350 तक)	द्विवेदी, एच० तथा विजय गोविन्द
पाठ्य-पुस्तक	प्राचीन भारत का इतिहास	उपाध्याय, वासुदेव
	आन्ध्र सातवाहन साम्राज्य का इतिहास	रेड्डी, एस० पी०

श्रेणी	पुस्तक	लेखक
पाठ्य-पुस्तक	चन्द्रगुप्त मौर्य और उसका काल	मुकर्जी, राधाकुमुद
पाठ्य-पुस्तक	अशोक	भण्डारकर
पाठ्य-पुस्तक	अशोक	मिश्र, योगेन्द्र
मूल	वाकाटक राजवंश का इतिहास तथा अभिलेख	मिराशी, वी० वी०
पाठ्य-पुस्तक	गुप्त साम्राज्य	मुकर्जी, राधाकुमुद
	हर्षचरित—एक सांस्कृतिक अध्ययन	अग्रवाल, वासुदेवशरण
सामान्य	कालिदास का भारत	उपाध्याय, भगवतशरण
पाठ्य-पुस्तक	हर्षवर्धन	चटर्जी, गौरीशंकर
सामान्य	हर्षवर्धन शिलादित्य	पंथारी, वी० पी०
सामान्य	कादंबरी एक अध्ययन	अग्रवाल, वासुदेवशरण
सामान्य	काशी का इतिहास	मोतीचन्द्र
मानक-ग्रंथ	मध्यकालीन भारतीय सस्कृति	ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द
पाठ्य-पुस्तक	पूर्व-मध्यकालीन भारत का इतिहास	पांडे, ए० बी०
मानक-ग्रंथ	सुदूरपूर्व में भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास	पुरी, बैजनाथ
सामान्य	चन्देल और उनका राजत्वकाल	मिश्र, केशवचन्द्र
मानक-ग्रंथ	सार्थवाह	मोतीचन्द्र
	भारत और कम्बुज	पुरी, बैजनाथ
पाठ्य-पुस्तक	दक्षिण भारत का इतिहास (आरम्भ से प्राचीन राजवंशों के पतन तक)	श्रीवास्तव, बलराम
मूल	समरांगण सूत्रधार	शुक्ल, द्विजेन्द्रनाथ

(ख) मुगल-पूर्व तथा मुगलकालीन भारत

संदर्भ	अलबेरुनी का भारत (तीन भाग)	सन्तराम
मूल	आदि तुर्क-कालीन भारत (1206-1260)	रिज़वी
मूल	खिलजी कालीन भारत (ज़ियाउद्दीन बर्नी तथा अन्य) (1290-1320)	ब्रजरत्न दास
मूल	तुग़लकालीन भारत (भाग 1 व 2)	रिज़वी
मूल	मुगलकालीन भारत (बाबर)	रिज़वी
मूल	औरंगजेब के उपाख्यान	सरकार, जदुनाथ
	(मुगलकालीन भारत) हुमायूं	रिज़वी

श्रेणी	पुस्तकों का नाम	लेखकों का नाम
मूल	गुलबदन बेगम का हुमायूंनामा	ब्रजरत्नदास
मूल	उत्तर तैमूर कालीन भारत (भाग 1 व 2)	रिज़वी
मूल	मआसिल उमरा या मुग़ल दरबार	ब्रजरत्नदास
मूल	इब्ने खल्दून का मुकद्दमा (विश्व इतिहास की प्रस्तावना)	प्रशासन शाखा, सूचना विभाग, उ० प्रदेश
सामान्य	अकबरी दरबार	वर्मा, रामचन्द्र
मूल	जहांगीर का आत्म चरित्र	ब्रजरत्नदास
सामान्य	राजवाड़े लेख संग्रह	सम्पादक : लक्ष्मण शास्त्री जोशी
मानक ग्रंथ	अरब और भारत के सम्बन्ध	वर्मा रामचन्द्र
	पूर्व—माध्यकालीन भारत का इतिहास	पांडेय, अवध बिहारी
पाठ्य-पुस्तक	सुल्तान महमूद-गज़नी	हबीब
पाठ्य-पुस्तक	मध्ययुगीन भारत	सरन, पी०
मानक ग्रंथ	मध्ययुग का इतिहास	ईश्वरी प्रसाद
सामान्य	मध्ययुगीन भारत संस्कृति	यूसुफ हुसैन
	प्राचीन व मध्यकालीन भारत	सरन, पी०
पाठ्य-पुस्तक	दिल्ली सल्तनत	श्रीवास्तव, आशीर्वादीलाल
	खिलजी वंश का इतिहास	लाल, के० एस०
पाठ्य-पुस्तक	हेमू और उनका युग	भार्गव, मोतीलाल
	मुग़लकालीन भारत	अलीगढ़ विश्वविद्यालय
पाठ्य-पुस्तक	भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास	शर्मा, एस० आर०
पाठ्य-पुस्तक	मुग़लकालीन भारत (1526-1818)	श्रीवास्तव, आशीर्वादीलाल
पाठ्य-पुस्तक	मुगल सामाम्राज्य का उत्थान और पतन	त्रिपाठी, रामप्रसाद
मानक-ग्रंथ	मुस्लिम भारत की ग्रामीण व्यवस्था	मोरलैंड
पाठ्य-पुस्तक	मुग़ल शासन पद्धति	सरकार, जदुनाथ
मानक-ग्रंथ	भारतीय मुग़लों की सैन्य-व्यवस्था	इरविन, बिलियम स्मिथ
	प्लासी का युद्ध	गिरिधर कुमार
	महाराणा कुम्भा	सोमानी, रामबल्लभ
	उत्तरी भारत की संत-परम्परा	चतुर्वेदी, पी०
पाठ्य-पुस्तक	महान मुग़ल अकबर	स्मिथ, वि० ए०
पाठ्य-पुस्तक	अकबर महान्	श्रीवास्तव, आशीर्वादीलाल
मानक-ग्रंथ	दाराशिकोह	कानूनगो, के० आर०
मानक-ग्रंथ	मराठों का इतिहास	सरदेसाई, सखाराम
मानक-ग्रंथ	मराठों का इतिहास	ग्रांट डफ
सामान्य	मराठों का उत्कर्ष	रानाडे, महादेव गोविन्द

श्रेणी	पुस्तक	लेखक
मानक-ग्रंथ	शिवाजी और उनका युग	सरकार, जदुनाथ
सामान्य	नाना साहब पेशवा	ठाकुर केशवकुमार
मानक-ग्रंथ	सिक्खों का इतिहास	कनिंघम
सामान्य	विजयनगर साम्राज्य का इतिहास	उपाध्याय, वासुदेव
सामान्य	अवध के दो प्रथम नवाब	श्रीवास्तव, आशीर्वादीलाल
सामान्य	अवध की लूट	बर्ड, आर० डब्ल्यू०
मानक-ग्रंथ	मुगल साम्राज्य का पतन (समस्त खण्ड)	सरकार, जदुनाथ

(ग) आधुनिक भारत

सामान्य	वारेन हेस्टिंग्ज़ का मुकदमा—एक महाभियोग	बर्क, एडमंड
मानक-ग्रंथ	अठारह सौ सत्तावन	सेन, एस० एन०
पाठ्य-पुस्तक	आधुनिक भारत का इतिहास (भाग 1 व 2)	सरकार, एस० सी० तथा दत्त के० के०
सामान्य	मराठे और अंग्रेज	केलकर, एन० सी०
सामान्य	आधुनिक भारत	जावडेकर, शंकर दत्तात्रेय
सामान्य	आधुनिक भारत	श्रीनिवासचारी तथा आयंगर
सामान्य	भारत में अंग्रेजी राज्य	सुंदरलाल
पाठ्य-पुस्तक	आधुनिक भारत का निर्माण	विमला प्रसाद
सामान्य	आधुनिक भारत का निर्माण	शर्मा, एस० आर०
पाठ्य-पुस्लक	ब्रिटिश कालीन भारत का इतिहास	राबर्ट्स, पी० ई०
सामान्य	भारत में ब्रिटिश राज्य के अन्तिम दिन	मोसले, लिओनार्ड
सामान्य	भारतीय राजनीति (विक्टोरिया से नेहरू तक	रामगोपाल
सामान्य	गांधी और गांधीवाद	पट्टाभिसीतारमैया
	आधुनिक भारत में पुनर्जागरण राष्ट्रीयता एव सामाजिक परिवर्तन	दत्त, कालिंकिकर
पाठ्य-पुस्तक	भारत का वैज्ञानिक एवं राष्ट्रीय विकास	गुरुमुखनिहाल सिंह
पाठ्य-पुस्तक	अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का संक्षिप्त इतिहास	हार्डी अनु०—विश्वप्रकाश
मूल	स्वतन्त्रता तथा प्रतिनिधि शासन	मिल, जे० एस०
	स्वतन्त्र दिल्ली	रिजवी

श्रेणी	पुस्तक	लेखक

(घ) विश्व, योरोप, एशिया तथा अन्य इतिहास

सामान्य	बूंदी राज्य का इतिहास	गहलौत, जगदीश
सामान्य	मारवाड़ राज्य का इतिहास	गहलौत, जगदीश
सामान्य	हमारा राजस्थान	वेदालंकार, पृथ्वीसिंह
सामान्य	राजस्थान के इतिहास का तिथिक्रम	गहलौत, सुखवीरसिंह
सामान्य	मेवाड़ राज्य का केन्द्रीय शक्तियों से सम्बन्ध	गहलौत, जगदीश
सामान्य	राजपूताने का इतिहास	गहलौत, जगदीश
सामान्य	राजस्थान का इतिहास	टाड, कर्नल
सामान्य	सिरोही राज्य का इतिहास	गहलौत, जगदीश
सामान्य	सल्तनत-कालीन गुजरात	बोहरा, गोपाल नारायण
सामान्य	मध्यप्रदेश का इतिहास और नागपुर के भोंसले	शुक्ल, प्रयागदत्त

(ङ) क्षेत्रीय इतिहास

पाठ्य-पुस्तक	आधुनिक योरप का इतिहास	गूच, जी० पी०
सामान्य	आधुनिक यूरोप का इतिहास (1789-1945)	साउथगेट, जार्ज, डब्ल्यू०
सामान्य	19वीं० तथा 20वीं सदी में योरोप	लिप्सन, ई०
सामान्य	विश्व का इतिहास	प्लेट, नेथैनियल
सामान्य	विश्व का इतिहास	त्रिपाठी, रामप्रसाद
	विश्व इतिहास की भूमिका	शर्मा, रामशरण
सामान्य	संसार का संक्षिप्त इतिहास	वैल्स, एच० जी०
सामान्य	विश्व इतिहास की झलक	नेहरू, जवाहरलाल
	मानव इतिहास की रूपरेखा	शर्मा, एस० आर०
पाठ्य-पुस्तक	पूर्व-एशिया का आधुनिक इतिहास	अनु० पद्माकर चौबे
सामान्य	सुदूर-पूर्व के गत सौ वर्ष	चटर्जी, बी० बी० आर०
सामान्य	ग्रेट ब्रिटेन का आधुनिक इतिहास	शर्मा, राधाकृष्ण
मानक-ग्रंथ	अमेरिकी सभ्यता	मैक्स लर्नर
पाठ्य-ग्रंथ	जापान का इतिहास	लातुरेत, के० एस०
मानक-ग्रंथ	चीनी पुनर्जागरण	हू शी
	फ्रांस की क्रांति	बैलफ, हिलेर

विविध

सामान्य	इतिहास एक अध्ययन (दो खण्ड)	आर्नल्ड, टायनबी
पाठ्य-ग्रंथ	इतिहास दर्शन	बुद्ध प्रकाश
	सभ्यता की कहानी	डूरां, विल
सामान्य	भारतीय सेना का इतिहास	मजूमदार, प्रबोधकुमार

कृषि-विज्ञान विषय-नामिका की सिफारिशें

विषय-नामिका की प्रथम बैठक 8-1-1969 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1.	श्री डी० पी० सिंह	अध्यक्ष
2.	डा० ओ० पी० गौतम	सदस्य
3.	श्री आर० एस० चौधरी	,,
4.	डा० चन्द्रकान्त ठाकुर	,,

1. नामिका ने अनुभव किया कि कृषि-विज्ञान के अधिकांश विषयों में उपयुक्त हिन्दी पुस्तकों का लगभग पूरी तरह से अभाव है। नामिका ने सुझाव दिया कि साहित्य के इस अभाव को दूर करने के लिये हिन्दी राज्यों की कृषि-शिक्षण संस्थाओं से विषयवार शीर्षक अनुवाद के लिये मांगें जाएं। इन संस्थाओं के विभागाध्यक्षों से यह भी सूचना माँगी जाय कि उनके विभाग में कितने ऐसे योग्य व्यक्ति हैं जो अनुवाद कार्य कर सकते हैं।

2. जहाँ तक मौलिक रूप से पुस्तकों के लिखे जाने का प्रश्न है, उसके लिये नामिका का सुझाव था कि शिक्षण संस्थाओं से लेखकों के नाम, उनके द्वारा लिखे जाने वाली पुस्तक की संक्षिप्त रूपरेखा तथा नमूने के लिये उनके द्वारा लिखा पुस्तक का प्रथम अध्याय प्राप्त करना चाहिये। इस बारे में आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

गणित विषय-नामिका की सिफारिशें*

गणित विषय-नामिका की दो बैठकें क्रमशः 23 दिसम्बर, 1968 और 13 जनवरी, 1969 को शास्त्री भवन, नई दिल्ली में हुई। दूसरी बैठक में नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1.	डा० आर० एस० मिश्र	अध्यक्ष
2.	डा० आर० एस० वर्मा	सदस्य
3.	डा० जे० एन० कपूर	,,
4.	डा० एस० डी० चोपड़ा	,,
5.	डा० डी० एन० मिश्र	,,

नोट—नामिका ने यह भी निश्चय किया कि सांख्यिकी विषय के लिए एक उप-नामिका गठित की जाए जिसमें 6 सदस्य नामित किये गये।

सांख्यिकी उपनामिका की प्रथम बैठक 2 फरवरी 1969 को शास्त्री भवन, नई दिल्ली में हुई। इसमें निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1.	डा० आर० एस० मिश्र	अध्यक्ष
2.	डा० आर० एस० वर्मा	सदस्य
3.	डा० जे० एन० कपूर	,,
4.	डा० सियाराम श्रीवास्तव	,,
5.	डा० चन्द्रमोहन	,,
6.	डा० एच० सी० गुप्ता	,,

1. नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इनमें से निम्न पुस्तकें विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाई गई—

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	प्रारम्भिक अवकल समीकरण	गोरख प्रसाद
2.	द्रवस्थितिविज्ञान	बी० एन० प्रसाद
3.	गति-विज्ञान	प्यारेलाल श्रीवास्तव
4.	प्रारम्भिक अंक-सिद्धान्त	उस्पेन्स्की
5.	गतिविज्ञान भाग-1	रैमज़े
6.	गतिविज्ञान भाग-2	रैमज़े
7.	अवकलन गणित	शांतिनारायण
8.	समाकलन गणित	शांतिनारायण
9.	त्रिकोणमिति	राजेन्द्रस्वरूप गुप्त
10.	बीजगणित	डब्ल्यू० एल० फ़ैरर
11.	सरल गणित ज्योतिष	गोरख प्रसाद
12.	सांख्यिकीय विधियां	स्नेडकर
13.	गणितीय सांख्यिकी	वेदरबर्न

2. नामिका ने बी० एस-सी० स्तर के लिये निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत मौलिक पुस्तकें लिखने की सिफारिश की—

1. Logic
2. Calculus, Coordinate Geometry and Introductory Analysis
3. Probability Theory
4. Mathematical Statistics
5. Elementary Abstract Algebra
6. Elementary Topology
7. Mechanics
8. Numerical Analysis (Computer oriented)
9. Foundations of Geometry

3. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरत अनुवाद की सिफारिश की है—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
	Top Priority	
1.	General Topology	Bourbaki Vol. 1
2.	Topology	Alexandroff
3.	Theory of Functions	Natanson
4.	Fluid Dynamics	G.K. Bachelor
5.	Electricity and Magnetism	Ferraro
6.	Relativity, Thermodynamics and Cosmology	R.C. Tolman
7.	Special Theory of Relativity	Synge
8.	Course of Theoretical Physics (8 vols.)	Landau and Lifshitz
9.	Topics in Algebra	Herstein
10.	Mathematical Analysis	Apostol

क्रम सं०	पुस्तकें	लेखक
11.	Functional Analysis	Lusternik and Sobolev
12.	—do—	Kolmogrov and Fomin
13.	Elasticity—some basic problems of the Mathematical Theory	N.I. Muskhe
14.	Course d' analyse	J. Favard
15.	Complex-variables	Allfors
16.	Complex variables-Vol. 1, 2, 3	Marqushevitch
17.	Differential Geometry	Willmore
18.	Differential Integral Equations	Yoshida
19.	Integral Equations	Petrosky
20.	Differential Equations	,, Russian
21.	Measure Theory	Halmos
22.	Astrophysics	Ambartsumyam
23.	Statistics-Mathematical Theory	Crammer
24.	Finite Dimensiosnal Vector Spaces	Halmos
25.	Naive Set Theory	Halmos
26.	Notes of Differential Geometry	Hicks
27.	Principles of Mechanics	Synge and Griffith
28.	Theory of Elasticity	N.I. Muskhelishvili

Second Priority

1.	Algebra	Birkhoff and Mclane
2.	A Survey of Modern Algebra	,, ,, ,,
3.	Mathematical Astronomy	W.M. Smart
4.	Lectures on Abstract Algebra (3 Vols.)	N. Jacobson
5.	Foundations of Set Theory	Frankell and Hillel
6.	Projective Analytical Geometry	Todd
7.	Advanced Calculus	Buck
7. (a)	Real and Complex Analysis	Rudin
8.	Theory of Function of a complex variable	E. T. Copson
9.	Theoritical Hydrodynamics	Milne Thomson
10.	Elasticity	Love
11.	Elasticity	Sokolnikoff
12.	Numerical Analysis	Householder
13.	Numerical Analysis	Froberg
14.	Magnetohydrodynamics	Cowling
15.	Aerodynamics	Milne Thomson
16.	Algebraic Topology	A.H. Wallace

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
17.	Numerical Analysis	Kuntz
18.	Problems of Mathematical Analysis	B. Demidovich
19.	Theory of Elasticity	M. Filonenko Borodich
20.	Differential and Integral Calculus	N. Piskunov
21.	Methods of Mathematical Physics	Jaffry and Jaffry
22.	Integral Equation	Mikhlin
23.	Theory of Probability	Parzan
24.	Methods of Theoretical Physics	Morse and Fashback
25.	General Topology	Kelly
26.	Theorie des distributions	L. Schwarz (Hermann. Paris)
27.	Commutative Normed Rings	Gelfand, Reihov and Paris
28.	Complex Analysis	Dunkin
29.	Les Series adherentes	S. Mandelbrojt (Ganthiers-Villars, Paris)
30.	Linear Programming	Hadley
31.	Linear Algebra	,,
32.	Non-Linear Dynamic Programming	,,
33.	Methods and Problems in Operations Research	Sasieni
34.	Information Theory	Ash
34.	Queuing Theory	Saaty
36.	Essentials of Fluid Dynamics	Prandtl
37.	Linear Topological Spaces	Kelly

4. निम्न पुस्तकों के अनुवाद अधिकार भी प्राप्त किये जा चुके हैं—

1.	Analytical Geometry of the Conic Sections	E.H. Askwith
2.	Applied General Statistics	Croxton and Cowden
3.	Conic Sections by the Method of Co-ordinate Geometry	Smith
4.	A Course of Pure Mathematics	G.H. Hardy
5.	An Elementary Treatise on Statics	S.L. Loney
6.	An Introduction to the Theory of Numbers	Hardy and Wright
7.	An Introduction to Reimmannian Geometry and Tensor Calculus	Weatherburn
8.	An Introduction to Pure Solid Geometry	Dr. Mahajani
9.	An Introduction to Probability Theory and its Applications Vol. I (2nd Ed.)	W. Feller
10.	Mathematical Methods of Statistics	H. Garner

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
11.	The Mathematical Theory of Relativity	A.S. Eddington
12.	Mathematics of Physics and Modern Engineering	Sokolnikoff
13.	Statics	A.S. Ramsey
14.	Statistical Methods	Snuedeeor
15.	A Text Book of Algebra	Chandrika Prasad
16.	A Text Book of Determinants, Matrices and Algebraic Forms	Ferrar
17.	The Theory of Functions	E.C. Titchmarsh
18.	Theory of functions of a real variable	Hobson
19.	Treatise on Differential Equations	Forsyth
20.	What is the Theory of Relativity	London and Rumer
21.	Stars lead to Infinity	Zigel
22.	In Search of Precision	Tiverim
23.	Elements of Statistics (3rd Ed.)	E.B. Mode
24.	Survey of the moon	Patric Moore
25.	The Planets	,,
26.	Classical Mechanics	Rutherford
27.	Theory and Application of Infinite series	K. Knopp
28.	Co-ordinate Geometry	L.P. Eisenbhart
29.	A Text Book of Hydrostatics for M.A. students	M. Ray
30.	For Sampling Techniques	Cochran
31.	Logic of Statistical inference	Hacking
32.	A Text Book of Hydrostatics for B.Sc. students	M.Ray and H.S.Sharma

दर्शन विषय-नामिका की सिफारिशें*

दर्शन विषय-नामिका की बैठक 29-11-68 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1.	प्रो० हरिमोहन झा	अध्यक्ष
2.	डा० बी० एल० आत्रेय	सदस्य
3.	डा० दया कृष्ण	,,
4.	डा० ए० के० सिन्हा	,,
5.	डा० याकूब मसीह	,,

1. उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इसमें से निम्न पुस्तकें विश्व-विद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पायी गईं—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	भारतीय नीतिशास्त्र का इतिहास	आत्रेय, भीखन लाल
2.	भारतीय दर्शन	गैरोला, वाचस्पति
3.	चार्वाक दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा	पाठक, सर्वानन्द
4.	हिन्दी ज्ञानेश्वरी	वर्मा, रामचन्द्र
5.	भारतीय दर्शन	दत्त व चटर्जी
6.	आधुनिक भारतीय चिन्तन	डा० विश्वनाथ नरवणे
7.	प्राच्य धर्म और पाश्चात्य विचार	डा० राधाकृष्णन्
8.	नैतिक जीवन का सिद्धान्त	जान ड्यूई

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
9.	नीतिशास्त्र	सिन्हा, जे० एन०
10.	नीतिशास्त्र	जोशी, शान्ति
11.	दर्शनशास्त्र के मूल-तत्व	तिवारी, ब्रजगोपाल
12.	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन	डा० देवराज
13.	नीति-प्रवेशिका	मेकेंज़ी

2. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरत अनुवाद की सिफारिश की है—

1.	The Idea of the Holy	Otto
2.	Either/Or	Kierkegaard
3.	Principles of Human Knowledge	Berkeley
4.	Reason & Existence	Jaspers
5.	Blue & Brown Books	Wittgenstein
6.	Theism	Flint
7.	The Existence of God	Masson
8.	Idea of God	Pringle Pattison
9.	Approaches to Philosophy of Religion	Brenstein & Schulweis
10.	New Essays in Philosophical Theology	Flew & Mac Intire
11.	Essays in Critical Realism	Santayana etc.
12.	The New Realism	Holt etc.
13.	Hegel	Stace
14.	Process & Reality	Whitehead
15.	The Spirit of Medieaval Philosophy	Gilson
16.	Critical History of Greek Philosophy	Stace
17.	Lectures on Aesthetics	Bosanquet
18.	Ethics	Nowell Smith
19.	Prolegomena to Ethics	Green
20.	Ethical Theories	Mendel
21.	Contemporary Ethical Theories	Hill
22.	A Modern Introduction to Moral Philosophy	Montiflore
23.	Philosophy & Logical Syntax	Carnap
24.	The Nature of Truth	Joachim
25.	An Enquiry into Meaning and Truth	Russell
26.	The Philosophy of Symbolic Forms	Cassirer
27.	Philosophical Analysis	Urmson
28.	How to do things with words	Austin
29.	Philosophical Investigations	Wittgenstein
30.	Tractatus Logico philosophicus	—do—
31.	Methods of Logic	Quine

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
32.	An introduction to Logic	Copi
33.	The Language of Morals	Hare
34.	A Critical History of Modern Philosophy	O'Connor
35.	History of Western Philosophy	Russell
36.	History of Philosophy	Windeband
37.	Guide to Philosophy	Joad
38.	Problems of Philosophy	Russell
39.	The two sources of Morality and Religion	Bergson
40.	Introduction to Metaphysics	Bergson
41.	Beyond Good and Evil	Nietzsche
42.	Utilitarianism	Mill, J.S.
*43.	Phenomenology of the Mind	Hegel
*44.	Science of Logic	Hegel
45.	Being and time	Martin Heidegger
46.	Creative Evolution	Bergson
47.	Pragmatism	James, W.
*48.	Essay Concerning Human Understanding	Locke
*49.	Monadology	Leibnitz
*50.	Meditations	Descartes
*51.	The Philosophy of Science: An introduction	Toulmin
*52.	The Philosophy of History	Hegel
*53.	Philosophy of Civilization	Schweitzer
54.	Introduction to Philosophy of Religion	Caird, J.
55.	Chief Currents of Contemporary Philosophy	Datta, D.M.
*56.	Aesthetics	Croce, B.
57.	History of Ethics	Sidgwick
*58.	Metaphysics of Morals	Kant
*59.	Ethics and Language	Stevenson
60.	Problems of Knowledge	Ayer
*61.	Philosophical Studies	Moore
62.	Logical Syntax of Language	Carnap
63.	Six ways of Knowing	Datta, D.M.
64.	Introduction to Mathematical Philosophy	Russell
65.	Logic for use	Schiller
66.	Five types of ethical Theory	Broad, C.D.
67.	The Development of Logic	Kneale
68.	Symbolic Logic	Copi
69.	Introduction to Semantics	Carnap
70.	Logic and Language	Flew, A.
71.	Thealtetus, Parmenides and sophist	Plato
72.	Treatise of Human Nature	Hume
73.	A Dialogue in Natural Religion	Hume
74.	Prolegomena to any future Metaphysics	Kant

नामिका ने *पुस्तकों को शब्दावली आयोग द्वारा अनूदित करने की सिफारिश की।

नृ-विज्ञान विषय-नामिका की सिफारिशें*

नृविज्ञान विषय-नामिका की प्रथम बैठक 2-12-68 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. प्रो० एस० सी० दुबे··········अध्यक्ष
2. प्रो० एल० पी० विद्यार्थी······सदस्य
3. प्रो० सच्चिदानन्द··············सदस्य

सदस्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिये नामिका ने निम्न व्यक्तियों की सिफारिश की।

1. दिल्ली विश्वविद्यालय के डा० एस० सी० तिवारी
2. रांची विश्वविद्यालय के डा० सरन और
3. पूना विश्वविद्यालय के डा० वीरेन्द्रनाथ मिश्र

उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

1. नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इसमें से निम्न पुस्तकें विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाई गईं—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	भारतीय संस्कृति के उपादान	मजूमदार
2.	मानव और संस्कृति	दुबे, श्यामाचरण
3.	मानव विज्ञान की रूपरेखा	विद्यार्थी, माथुर और सिंह
4.	मानवमिति	सिंह, रिपुदमन

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
5.	प्रागितिहास	मजूमदार एवं सरन
6.	छोर का एक गांव (सन्दर्भ)	मजूमदार, धीरेन्द्रनाथ
7.	प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियां	गोयल, श्रीराम
8.	मानव-शरीर रचना	वर्मा, डा० मुकन्दस्वरूप
9.	आदिवासी भारत	योगेश अटल
10.	भारतीय नगर	विद्यार्थी, एल० पी०
11.	भारत की सामुदायिक विकास योजना	सच्चिदानन्द
12.	भारतवर्ष में विवाह एवं परिवार	कपाडिया, के० एम०
13.	मोहन-जोदड़ो	काला, सतीशचन्द्र
14.	सिन्धु सभ्यता	काला, सतीशचन्द्र
15.	आदिवासी	सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
16.	बिहार के आदिवासी (सन्दर्भ)	विद्यार्थी, एल० पी०
17.	सामाजिक नृ-शास्त्र	इवान्स, प्रिचर्ड
18.	मानव की कहानी	कूल, कार्लटन एस०
19.	अमेरिकी सभ्यता	लर्नर, मेक्स
20.	सांस्कृतिक मानव-शास्त्र (अनु० रघुराज गुप्त)	हर्स्कोवित्स
21.	भारत में जाति	हट्टन, जे० एच०
22,	मानव की उत्पत्ति और क्रमिक विकास	नैस्तुर्ख, माइकेल
23.	दि ऑरिजिन आफ स्पीशिज़	डारविन
24.	मैन इन दि प्रिमिटिव वर्ल्ड	होइबल
25.	मैन-काइंड इन दि मेकिंग	होवल्स

2. नामिका ने निम्न हिन्दी पुस्तकों को विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाया जो शब्दावली आयोग द्वारा अनूदित की जा रही हैं।

1.	Anthropology	Krocheris
2.	Introduction to Social Anthropology	Pieldingtor
3.	Evolution, Genetics and Eugenics	H.H. Newwass
4.	Social Organisation	Riner

3. नामिका नें निम्न पुस्तकों को मौलिक रूप में लिखने के लिए सिफारिश की—

1. Human Evolution
2. Races of Man
3. Pre-history and Archaelogy
4. Human Biology
5. Social Structure

संख्या	पुस्तकें	लेखक
6.	Marriage, Family and Kinship	
7.	Primitive Economics	
8.	History of Anthropology	
9.	Anthropology of Religion	
10.	Political Anthropology	
11.	Theories of Culture	
12.	Culture and Personality	
13.	Language & Culture	
14.	Primitive Cultures round the World	
15.	Recent Trends in Anthropology	
16.	Primitive and Peasant Culture of India	
17.	Peasant Culture around the world	
18.	History of Indian Anthropology	

नामिका ने निश्चय किया कि उपरोक्त विषयों पर विदेशी पुस्तकों के रूपान्तर मौलिक पुस्तकों के रूप में कर लिए जायें। इससे विदेशी मुद्रा की बचत होगी और अनुवाद-अधिकार विलम्ब से मिलने की परेशानी से भी बचा जा सकेगा।

4. नामिका ने यह भी निश्चय किया कि एक सौ पच्चीस पृष्ठ के विभिन्न विषयों पर बीस संक्षिप्त मोनोग्राफ प्रारम्भ में निकाले जाएं।

5. इसके अतिरिक्त निम्न विषयों पर 'पाठ-संग्रह' (Book of Reading) लिखे जायें।

1. Readings from the Founding Fathers of Anthropology
2. Readings on Human Evolution
3. Readings on Human Biology
4. Readings on Prehistorical Archaeology
5. Readings on Social Structure
6. Readings on Myth and Ritual
7. Readings on Economic Anthropology
8. Readings on Peasant Societies and Culture
9. Readings on Political Organization
10. Readings on Social and Cultural Change

6. **नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरत अनुवाद की सिफारिश की।**

I. Cultural Anthropology

1.	An Introduction to Anthropology	Beals and Hoijer	I
2.	Man, Culture and Society	Shapiro	II
3.	Cultural Anthropology	Titiev	II
4.	Human Types	R. Firth	I
5.	Mirror for Man	Kluckhohn	I
6.	Other Cultures	Beattie	I
7.	An Introduction to Social Anthropology	L. Mair	I
8.	Politics, Law & Ritual in Tribal Society	Gluckman	II
9.	Introduction to Social Anthropology (Vol. I & II)	Piddington	
10.	The World of Man	Honigman	I
11.	Profiles in Ethnology	Service	I
12.	Understanding Human Society	Goldschmidt	

II. Family, Marriage and Kinship

13.	Social Structure	Murdock	II

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक	
14.	Kinship and Marriage	Robin Fox	I
15.	African Systems of Kinship and marriage (selected essays on India only)	Radcliffe— Brown and Forde	II
16.	Developmental Cycle of Domestic Group	Jack Goody	

III. Economic Anthropology

17.	Habitat, Economy and Society	D. Forde	II
18.	Economic Anthropology	Herskovits	I
19.	Readings in Economic Anthropology	George Dalton	II

IV. Political Anthropology

20.	Pritchard : African Political System	Fortes & Evans	II
21.	Custom and Conflict in Africa	Gluckman	I
22.	Tribes without Rulers	Middleton & Tait	II
23.	Political Anthropology (to be condensed)	Swartz & Turner	I
24.	Comparative Political Systems (Selected Essays)	Cohen & Middleton	II

V. Religion

25.	Religion among the Primitives	William J. Goode	I
26.	Theories of Primitive Religions	Evans Pritchard	I
27.	Anthropological Approaches to the study of Religion	A.S.A. Monographs	II

VI. Research Methodology

28.	The Craft of Social Anthropology	Epstein	I

VII. Anthropological Theory

29.	They Studied Man	Kardiner & Preble	I
30.	Structure & Function in Primitive Society	Radcliffe-Brown	I
31.	Man & Culture (Selected Essays)	R. Firth	II
32.	Rethinking Anthropology (Selected Essays)	Leach	II
33.	Theory of Social Structure (Condensed)	S.F. Nadel	II
34.	Closed Systems & Open Minds (Selected Essays)	Gluckman	II
35.	Primitive World & its Transformations	Redfield	II
36.	Theoretical Anthropology	Bidney	II

VIII. Applied Anthropology

37.	Traditional Cultures & Technological Change	Foster	I

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक	
38.	Cooperation in Change	Goodenough	I

IX. Classics/Reference Books

39.	Ancient Society	Morgan	II
40.	Patterns of Culture	Ruth Benedict	II
41.	Scientific Theory of Culture	Malinowski	I
42.	Dynamics of Culture Change	Malinowski	II
43.	The Study of Man	Linton	II
44.	Theory of Culture Change	Stewart J.H.	
45.	The Scheduled Tribes	Churve	II
46.	The Science of Culture	White, L.A.	II
47.	Social Organisation	Rivers, W.H.R.	II
48.	Primitive Culture	Tylor	
49.	Crime & Custom in Savage Society	Malinowski	
50.	Folk Culture of Yucatam	Redfield, R.	

PHYSICAL ANTHROPOLOGY

I. Human Origin & Evolution

1.	Mankind in the Making : the Story of Human Evolution. Secker & Warburg, London	Howells, W.W.	I
2.	History of the Primates. (Uni. Press, Edinburg)	Leuros Clark	I
3.	Origins of Man John Wiley & Sons. Inc. New York	Buettner, Janusch John	I

II. Fossil Men & Prehistory

4.	Introduction to Physical Anthropology 3rd Edition Thomas C.C. U.S.A.	Ashley Montagu M.F.	I
5.	Up from the Ape. The Macmillan Comp. New York	Hooten, E.A.	I
6.	Adam's Ancestors. (Harper, U.S.A.)	Leakey, L.S.B.	I
7.	Our Early ancestors. (Uni. Press, Cambridge)	Burkit, M.C.	II
8.	Early Man. (D. Appleton & Co. New York, London)	MacCurdy, G.G.	II

III. Living Races & Human Populations

9.	Races of Man. (Uni. Press, Cambridge)	Hadon, A.C.	I
10.	The History of Man : from the First Human to Primitive Culture and Beyond. Jonathan Cape, 30, Badford Square, London	Coon, C.S.	I

क्रक सं०	पुस्तक	लेखक	
11.	People of Asia Kegan Paul, Tranch, Trubner & Co. New York	Buxton	I
12.	The Races of Europe The Macmillan Co. New York	Coon, C.S.	I
13.	Races of Africa 4th Ed. Oxford Uni. Press	Seligman, C.C.	I

IV. Human Genetics & Miscellaneous

14.	Principles of Human Genetics W.H. Freeman & Co. San Fransisco, & London	Curt Stern	I
15.	Human Biology : An Introduction to Human Evolution, Variations & Growth. Oxford Uni. Press	Harrison (Edited)	I
16.	Survey of Principles of Heredity (College Series) Houghton Miffin Co. Riverside Press, Cambridge.	Winchester, A.M.	I
17.	Genetics & Races of Man (adaptation) Little Brown & Co. Boston	Boyd, W.C.	I
18.	Anthropometry Bharti Bhawan, Educational Publishers and Book Sellers, Delhi	Singh & Bhasin	I
19.	Elementary Principles of Genetics	Singleton	II
20.	Anthropologia Vol. I & II.	Martin	I
21.	Finding the Missing Link	Robert Broom	I
22.	Archaeology Today	Sankalia	I
23.	Tool Making	Sankalia	I

V. Reference Books

24.	Ideas on Human Evolution Harvard Uni. Press, USA	Howells, W.W.	I
25.	Evolution of Man	Lasker	II
26.	Antecedents of Man Uni. Press Edinburg	Legros Clark	
27.	Apes, Giants & Man Uni. of Chicago	Weidenreich. Franz	II
28.	The Fossil Evidence for Human Evolution Uni. of Chicago Press, Chicago	Legros Clark	II
29.	Manual of Physical Anthropology (Revd. Ed. 1960) Charles C. Thomas Pub., Ilinois, U.S.A.	Comas, Juan	I

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक	
30.	The Fossil Man Thames & Hudson, London	Boule & Vallois	II
31.	Man Makes himself	Gorden Childe	
32.	Man, the tool Maker	Burkit	
33.	Dating the Past	Zeuner	
34.	Science of Man in the World Crisis Univ. Press, New York	Linton, Ralph	I
35.	Human Heredity Univ. of Chicago Press	Neel, James, W.J. Schull	I
36.	Mankind Evolving Yale, New Haven & Co. London	Dobzhamsky, Theodosins :	I
37.	Blood Groups in Man Blackwell Scientific Publications Oxford	Race & Sanger	II
38.	Finger Prints, Palms and Soles Dover Publications, Inc. New York	Cummins & Midle :	
39.	Evolution, Genetics & Eugenics	New Man	II

I. First Priority

II. Second Priority

प्राणि-विज्ञान विषय-नामिका की सिफारिशें*

प्राणि-विज्ञान विषय-नामिका की प्रथम बैठक 10-11 दिसम्बर, 1968 को शास्त्री भवन, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. डा० एम० एल० रूनवाल ...... अध्यक्ष
2. डा० एच० स्वरूप ...... सदस्य
3. डा० एच० एस० चौधरी ...... ,,
4. डा० जे० पी० थापलियाल ...... ,,
5. डा० सुरेश केशव ...... ,,

1. नामिका ने निम्न पुस्तकों को विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाया—

1. कशेरुकी प्राणियों की संरचना तथा परिवर्धन
2. अकशेरुकी प्राणिजगत

2. नामिका ने B. Sc. (Pass Course) के लिए निम्न पुस्तकों को मौलिक रूप से लिखाये जाने की सिफारिश की —

1. Invertebrates (Vol. I)
2. Vertebrates and General Zoology (Vol. II)
3. Animal Ecology and Physiology (Vol. III)
4. Practical Zoology for B.Sc. students

3. नामिका ने स्नातकोत्तर स्तर के लिए निम्न शीर्षकों को मौलिक रूप से लिखाये जाने की सिफारिश की —

1. Animal Behaviour
2. Animal Physiology
3. Cytology (including practical aspects)
4. Embryology (Invertebrate, Vertebrate and Experimental)
5. Endocrinology

---

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

6. Entomology
7. Evolution
8. General Animal Ecology (including practical aspects)
9. Genetics (including practical aspects)
10. Helminthology
11. Herpetology
12. Histology
13. Ichthyology
14. Limnology
15. Morphology (all major phyla)
16. Palaeontology
17. Protozoology
18. Systematic Zoology
19. Zoo-geography

4. नामिका ने निम्न पुस्तकों के अनुवाद की सिफारिश की —

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	Ecological Animal Geography (John Wiley & Sons, New York)	Alle & Schmidt
2.	Genetics	Altenberg, E.
3.	Pheretima : Indian Zoological Memoirs (Lucknow Publishing House, Lucknow)	Bahl, K.N.
4.	Dynamic Aspect of Biochemistry (4th Ed., 1963) (Cambridge University Press, Cambridge)	Baldwin, E.
5.	Pila : Indian Zoological Memoirs, (Lucknow Publishing House, Lucknow)	Baini Prashad
6.	An Introduction to Embryology	Balinsky, B.I.
7.	Embryology (Revised Ed. Dryden)	Barth, L.G.
8.	The Tunicata	Berrill
9.	An Introduction to General and Comparative Endocrinology (Clarendon Press, London)	Berrington
19.	Living Body (Indian Edition, Asia Publishing House)	Best, C.H. & Taylor, M.B.
11.	Zoo-geography of Land Animals	Beaument
12.	Hirudinaria : Indian Zoological Memoirs (Lucknow Publishing House, Lucknow)	Bhatia, M.L.

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
13.	The Invertebrate : A Manual for the use of students (Cambridge University Press, London)	Borradaile, Potts & Others
14.	Cytology and Cell physiology (Oxford University Press)	Bourne
15.	The Physiology of Fishes (2 Volumes) (Academic Press, New York)	Brown, M.E.
16.	Internal Parasites of Domestic Animals	Cameron
17.	A General Zoology of Invertebrates (Latest Ed.) (Sidgwick & Jackson, London)	Carter, G.S.
18.	Introduction to Parasitology, (John Wiley & Sons. New York & London)	Chandler, A.C. & Read
19.	Animal Behaviour	Cloudsey & Thompson
20.	Entomophagous Insects	Colbert, E.H.
21.	Evolution of The Vertebrates (Latest Ed.) (John Wiley)	Colbert, E.H.
22.	The Handling of Chromosomes	Darlington, C.D. & L. Cour, L.F.
23.	Herdmania : Indian Zoological Memoirs (Lucknow Publishing House, Lucknow)	Das, S.M.
24.	The Functional Anatomy of Indian Animal Types : Funambulus (The Indian Palm Squirrel) (The Indian Press, Allahabad)	Das, S.M.
25.	Marine & Freshwater Plankton (Michigan University)	Davis, C.C.
26.	Cell Biology	De Robertis, E.D.P. Nowisunbki, W.W. & Saez, F.A.
27.	Evolution, Genetics and Man (John Wiley & Sons, Inc., New York)	Dobzhansky, T.
28.	Genetics and Origin of New Species (Latest Ed.) (Columbia University Press)	Dobzhansky, T.
29.	Genetics: The Modern science of Heredity (W.B. Saunders Co., Philadelphia)	Dodson, E.O.
30.	Comparative Anatomy of Vertebrates	Eaton
31.	The Ecology of Animals (Methuen & Co., London)	Elton, C.S.
32.	The Ecology of Invasions by Animals & Plants (Methuen & Co., London)	Elton, C.S.

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
33.	The Human Helminthology	Faust, E.G.
34.	The Dancing Bee	Frisch, Carl Von
35.	Cell Physiology	Giese
36.	Soil and Fresh Water Nematoda	Goodey, T.
37.	Structure of The Vertebrates	Goodrich
38.	History of Fishes (Ernest Benn. Ltd., Bombay)	Green Wood & Norman
39.	Essentials of General Cytology	Gresson
40.	Animal Diversity (Prentice Hall, New Jersey)	Hanson, Earl. D.
41.	Open Sea (Part I & II) (Collins)	Hardy, A.C.
42.	A General Text Book of Entomology	Imms, A.D.
43.	Insect Natural History (General reference book)	Imms, A.D.
44.	Embryology of Insects & Myriapods	Johnanssen & Butt.
45.	Simple experiments with Insects	Kalmas
46.	Animal Ecology (Prentice-Hall Inc., New Jersey)	Kendeigh, S.C.
47.	Comparative Anatomy of Vertebrates	Kingsley, J.S.
48.	Protozoology	Kudo, R.R.
49.	Inthyology	Lagler, Miller, etc.
50.	Development of the Chick (Revised by Hemilton)	Lilie
51.	Biology and its Makers (Hold, Rinohar & Winston, Inc., New York) (General reference book)	Locy, William A.
52.	Physiology of Birds	Marshall, A.J.
53.	A Common Course of Practical Zoology (John Murray, London)	Marshall & Hurst
54.	Textbook of Histology (Saunders)	Maximov & Faucet
55.	Methods & Principles of Systematic Zoology (McGraw Hill Books)	Mayer, F., Linsley, E.G. & Usniger, R.L.
56.	Elementary Biochemistry	Mertz
57.	Destructive and Useful Insects (Mc Graw Hill Books	Metcalf, C.L. Flint, W.P.

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
58.	Introduction to Evolution (Harper)	Moody, P.A.
59.	World Sea Fisheries (Macmillan & Co.)	Morgan, R.
60.	Comparative Embryology of the Vertebrates (TueBlakishon Co., New York)	Nelsen, O.E.
61.	Animal Geography (Mathnen & Co., London)	Newbegin, M.I.
62.	Phylum Chordata, (Macmillan Co., New York)	Newman, H.H.
63.	Ecology of Fishes (Academic Press, New York)	Nikolsky
64.	Biology of Amphibia	Noble
65.	History of Fishes (Hill & Warg, Inc. New York)	Norman, J.R.
66.	Fundamentals of Ecology (Reinhold)	Odum, E.P.
67.	Life : Its Nature, Origin & Development (Academic Press, New York)	Oparin
68.	Palaeomon : Indian Zoological Memoirs (Lucknow Publishing House, Lucknow)	Patwardhan, S.S.
69.	Techniques of Investigation of Fish Physiology	Pavlovskii, E.N.
70.	Animal Ecology (Mc Graw Hill Book Co., New York)	Pearse, A.S.
71.	Physiological approach to Lower Animals (Cambridge University Press)	Ramsay, J.A.
72.	Developmental Physiology (Pergamo Press, London)	Raven
73.	Cell Biology (H.B. Saunder Co., Philadelphia)	Robertis Saez & Novinski
74.	The Vertebrate Body (W.B. Saunders Co., Philadelphia)	Romer, A.S.
75.	Vertebrate Palaeontology (University of Chicago Press, Chicago)	Romer, A.S.
76,	Fishery Science, (John Wiley & Sons, New York—Chapman and Hall)	Rounsefal & Everhart
77.	Medical Entomology	Roy & Brown
78.	Laboratory Manual of Vertebrate Embryology (Burgess Publishing Co., Minneapolis)	Rugh, Roberts

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
79.	The Seas	Russell & Young
80.	Comparative Physiology (John Wiley, Included in Appendix III)	Scheer, B.T.
81.	Meaning of Evolution (Oxford)	Simpson, G.G.
82.	The Major Feature of Evolution (Columbia University Press)	Simpson, G.G.
83.	History of Biology (Revised Ed. Schuman)	Singer, C.A.
84.	Physiology of Trematoda	Smidt
85.	Introduction to Parasitology (1962) (Eng. University Press)	Smyth
86.	Principles of Insect Morphology (Mc.Graw Hill Book Co., New York)	Snodgrass, R.E.
87.	General Genetics (Freeman & Co.)	Srb, A.N., Owen, R.D. & Edgar, R.S.
88.	Practical Invertebrate Zoology (General Book Depot, Allahabad)	Srivastava, U.S.
89.	General Zoology (Mc.Graw-Hill Book Co., New York)	Storer, T.M.
90.	Ocean (1962) (Asia Publishing House, Bombay)	Sverdrup etc.
91.	Cytology and Cytogenetics (Prentice Hall)	Swanson, C.P.
92.	Scoliodon-Indian Zoological Memoirs (Lucknow Publishing House, Lucknow)	Thillayampalam
93.	Animal Behaviour	Tinbergen, T.
94.	The study of Instinct (Clarendon Press, Oxford)	Tinbergen, T.
95.	General Endocrinology (4th Ed., 1965) (Saunders Philadelplia)	Turner, C.D.
96.	Principles of Embryology (George Allen, London)	Waddington
97.	Fresh Water	Ward & Whipple
98.	The Science of Zoology (Mc. Graw Hill, New York)	Weisz, P.
99.	Limnology (Mc.Graw Hill Book Co., New York)	Welch

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
100.	Limnological Methods	Welch
101.	Animal Cytology & Evolution (New Ed.) (Cambridge University Press, Cambridge)	White, M.J.D.
102.	The Chromosome (Revised Ed.) (Methuen & Co., London)	White
103.	The Principles of Insect Physiology (Methuen & Co., London)	Wigglesworth, V.R.
104.	An Introduction to Physical Oceanography (Westey Publishers, Campans INS, London)	William S. Von ARX, Addison
105.	Palaeontology (Invertebrates) (Cambridge University Press, Cambridge, England)	Woods, H.
106.	The Life of Vertebrates (Oxford University Press, London)	Young, J.Z.

भू-विज्ञान विषय-नामिका की सिफारिशें*

भू-विज्ञान विषय-नामिका की प्रथम बैठक 11 दिसम्बर 1968 को शास्त्री भवन, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. डा० ए० जी० झिंगरन अध्यक्ष
2. डा० आर० सी० मिश्रा सदस्य
3. डा० आर० सी० सिन्हा ,,
4. डा० बी० एस० तिवारी ,,
5. डा० हरी नारायण ,,

1. नामिका ने निम्न हिन्दी पुस्तकों को विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाया—

1.	Bharat Ki Khanijatmak Sampati	Prof. N.L. Sharma	B.Sc.
2.	Bharat Ka Arthik Bhoogarbh Shastra	Dr. Dube Published by Bhoogol Karyalaya Allahabad	B.Sc. (Hon.)
3.	Prithvee Ki Ayu	Dr. Maharaja Narayan Mehrotra Published by Hindi Samiti Lucknow	M.Sc.
4.	Koyala	P.S. Verma M.Sc. Hindi Samiti Lucknow	
5.	Chini Mittiyan	Dr. M.L. Mishra	M.Sc.
6.		Dr. G.P. Shrivastava M.Sc.	
7.	Useful Aspects of Geology	Translated by Shri V.K. Singh	B.Sc.
8.	Prathamic Sookchhmdarshiya Khanij-Vigyan	Sudhakar Moti Ram Chaudhary	

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

2. नामिकाने निम्न पुस्तकों को तुरत अनुवाद की सिफारिश की ।

General & Physical Geology

	No.	Title	Author	Level
	1.	Principles of Physical geology (Already translated)	Holmes A.	B.Sc.
	2.	Introduction to Geology	Branson E.B. Tar W.A. and Keller W.D.	
	3.	Text book of Geology	Schuchert and Dunbar	
	1.	Principles of Physical geology (Latest bigger one edition)	Holmes, A	M.Sc.
R	2.	Geomorphology	King Or	
		Geomorphology	Von Engelen	
	3.	Principles of Geology	Gilluly, James and others	
	4.	Unstable Earth	Steers J.A.	
	5.	Advances in Geology	Westool, T.S. Ed.	
	6.	Seismicity of the Earth	Gutenburg and Retcher	

Crystallography

No.	Title	Author	Level
1.	Elementary Crystallography	Buerger, M.A.	B.Sc.
2.	Elements of Crystallography Mineralogy	Wade, F.A. and Matton, R.B.	
3.	X-Ray Crystallography	Azaraff	M.Sc.

Mineralogy

No.	Title	Author	Level
1.	A course of Mineralogy	A. Betekhtin	B.Sc.
2.	Mineralogy	Berry, L.G. and Mason, Brian	
1.	Dana's Text book of Mineralogy	Ford, W.E.	M.Sc.
2.	Mineralogy	Miers, H.A.	
3.	Mineralogy	Deer, Howie and Zussmann	

Optical Mineralogy

No.	Title	Author	Level
1.	Minerals and the Microscope	Smith. H.G.	B.Sc.
2.	Petrographic Mineralogy	Wahlstrom	
1.	Opitical Mineralogy	Rogers, A.F. and Kerr, P.F.	M.Sc.

Petrology

No.	Title	Author	Level
1.	Petrology of Igneous Rocks	Hatch, Wells, A.K. and Wells, M.K.	B.Sc.
2.	Petrology for students	Harker	
3.	Petrology	Huang, W.T.	

I Igneous Petrology

	Title	Author	Level
1.	Theoretical Petrology	Barth F.W.	M.Sc.
2.	Evolution of Igneous Rocks	Bowen N.L.	

II Metamorphic Petrology

	Title	Author	Level
1.	Metamorphism	Harker, A	M.Sc.
2.	Petrogenesis of Metamorphic Rocks	Winkler, A.G.F.	
3.	Origin of Metamorphic and Metasomatic Rocks	Hans Ramberg	

III Sedimentary Petrology

	Title	Author	Level
1.	Seeimentary Rocks	Pettijohn, F.J.	M.Sc.
2.	Manual of Sedimentary Petrography	Krumbine and Pettijohn or	
	Sedimentary Petrography	Milner, H.B.	

IV Coal Petrology

	Title	Author	Level
1.	Geology of Coal	Noe, A.C. and Stutzer	M.Sc.

Petrography

Note :—Propospal for adaptation and original writting of books on this subject on the basis of post graduate level books on Petrology after consultation with the Chairman.

	Title	Author	Level
1.	Petrography	William, Turner and Gilbert	
2.	Manual of Petrographic Methods	Johnnsen, A	

Invertebrate Palaeontology

	Title	Author	Level
1.	Introduction to Invertebrate Palaeontology	Davies, D.M. and stubble Field	B.Sc.
1.	Principles of Invertebrate Palaeontology	W.H. Twenhofes and shroch	M.Sc.
2.	Palaeontology	Swinnerton, H.H. or	
	Invertebrate Fossil	Moore, Lalicker and Fisher	

Vertebrate Palaeontology

	Title	Author	Level
1.	Vertebrate Palaeontology	Romer, A.S.	M.Sc.

Palaeobotany

	Title	Author	Level
1.	Introduction to Palaeobotany	Arnold	M.Sc.
R 2.	Principle of Zoological Micropalaeontology	Pokerney	

Stratigraphy

	Title	Author	Level
1.	Principles of Stratigraphy	Dunbar, C.O. and J. Rodgers	M.Sc.

2.	Stratigraphic Geology	Gignoux, M.	
3.	Principles of Stratigraphy	Grabau, A.W.	
4.	Geology of India, Burma and Pakistan	Krishnan M.S.	

Structural Geology

1.	Geological and Topographical Maps	Dwerryhouse. A.R.	B.Sc.
2.	Geological Maps	Chalmers, R.M.	
1.	Structural Geology	Billings, M.P.	M.Sc.
2.	Structural Geology I-V	De Sitter,	
3.	Structural Geology	Himus and Sweeting	

Economic Geology

1.	Elementary Economic Geology	Ries, H.	M.Sc.
2.	Formation of Mineral Deposits	Bateman, A.M.	
3.	Principles of Economic Geology	Emmons or	
	Geology of Mettalliferous Deposits	Rastall, R.H.	
4.	Mineral Deposits	Lindgren, W.	

Indian Minerals

1.	Introduction to India's Economic Minerals	1 Sharma, N.L. and Ram K.S.V.	M.Sc.

Mining Geology

1.	Mining Geology	Micknstry	M.Sc.
2.	Elements of Mining	Young, K.J.	

Mineral Dressing

1.	Principles of Mineral Dressing	Gaudin, A.H.	M.Sc.

Applied Geophysics

1.	Applied Geophysics	Eve, A.S. and D.A. Keys	M.Sc.

Geophysical Prospecting

1.	Geophysical Prospecting	Dobrin	M.Sc.
2.	Prospecting of Minerals	Kitaisky	

Ground Water Geology

1.	Ground Water	Tolman, C.F. or	M.Sc.
	Ground Water	Todd	

Engineering Geology

1.	Engineering Geology	Lagget	M.Sc.

2.	Principles of Engineering Geology and Geotechnics	Krynine, D.P. and W.R. Judd

Geochemistry

1.	Principles of Geochemistry	Brain, Mason	B.Sc. (Hon.)
1.	Geochemistry	Rankama & Sahamer	M.Sc.
2.	Geochemistry	Goldschmidt, V.M.	
3.	Sillicate Analysis	Groves	

General Geology

	1.	Tectonic Essays	Bailey
	2.	Isostasy	Bowie W.
	3.	Historical Geology	Dunber, C.O.
	4.	Problems and Progress in current Research, 1963, Ed. Earth Sciences	Donnely, Thomas W.
	5.	Our Wandering Continents	Dutoit, A.L.
	6.	Physics of the Earth's Crust	Fisher G.
	7.	Story of the Great Geologists	Fenton C.L. and Fenton M.A.
	8.	Earthquakes	Heck, N.H.
R	9.	The Universe around us	Jeans, J.
	10.	The surface History of the Earth	Joly, J.
	11.	Physical Geology	Lake and Rastall
	12.	Geomorphology	Lobeck, A.K.
	13.	Introduction to Physical Geology	Miller, Willian J.
	14.	Historical Geology	Moore R.C.
R	15.	Publications of the Geological survery of India	
	16.	Introduction to Geology	Read H.H. and Jonet Watson
	17.	Agricultural Geology of India and Physical Properties of oil	Sahasracridhe D.L. and Nagehalli, N.N.
	18.	Applied Sedimentation	Trask P.D.
	19.	Principles of Sedimentation	Twenhofel

Crystallography

	20.	An Introduction to Crystallography	Philips F.C.
R	21.	Crystallography and Practical Crystal measurement (in several vols.)	Tutton A.E.H.
	22.	Optical Crystallography	Whalstron, E.E.

Engineering Geology

R	23.	Geology for Engineer	Trefethen, Joseph M.

Economic Geology

	No.	Title	Author
R	24.	Mineral Wealth of India	Brown J.C. and A.K. Dey
R	25.	Bullotion and Records Relating to Minerals	G.S.I. Publication

Mineral Dressing & Mining

	No.	Title	Author
	26.	Practical oil Geology	Hager, D
	27.	Indian Mining	J.A. Dunn
	28.	Exploratory Geophysics	Jakosky
R	29.	Minerals in World Affairs	Lovering
R	30.	Structural Control of ore Deposits	Newhouse
	31.	Rocks and Mineral Deposit	Niggli P.
R	32.	Minerals for Atomic Energy	Niniger, R.D.
R	33.	Elements of Ore Dressing	Taggart, A.F.
R	34.	Mine Economics	Truscott, S.J.

Field Geology

	No.	Title	Author
	35.	Simple Geological Maps	Challinor and Platt
	36.	Geological Maps	Chiplonkar, G.W.
	37.	Dip and Strike Problems	Earle
	38.	Elements of Field Geology	Himus and Sweeting
R	39.	Subsurface Geologic Methods	Leroy

Mineralogy

	No.	Title	Author
	40.	Examination and Valuation of Mineral Property	Parks
	41.	Elements of optical Mineralogy-3 Vols	Winchell, N.H. & A.N.
	42.	Clay Mineralogy	R.E. Grim
	43.	Ore Mineralogy	Cameron

Mining Geology
Palaeontology

	No.	Title	Author
	44.	Principles of Micropalaeontology	Glaessner
	45.	Foraminifera	Joseph, A. Chshman
R	46.	Man in Evolution	Sahni, M.R.
	47.	Plant Life Through the Ages	Seward, Albert Charles
R	48.	Text Book of Palaeontology Vol. I, II, III	Zittel, Karl Von

Petrology

	No.	Title	Author
	49.	Microscopic Sedimentary Petrology	Carrozzi, A.
	50.	Igneous Rocks and Depth of the Earth	Daly, R.A.
	51.	Petrography and Petrology	Grout
	52.	Petrographic Methods and Calculations	Holmes, Arther

R 53.	Granite Controversy	Read
R 54.	Crust of the Earth 1964	Aril Poledervaart

Stratigraphy

55.	Stratigraphy and sedimentation	Krumbine W.C. and Sloss
56.	Stratigraphical Palaeontology	Neaverson, A.
R 57.	Mannual of Geology of Indian and Burma-3 Vols	Pascoe
58.	Sequence in Layered Rocks	Shrock, R.S.
59.	Stratigraphic Principles and Practice	Weller, J.M.

Structural Geology

R 60.	Earth in Upheaval	Velikovsky

Supplementary List

61.	4-Axis Universal Stage		Naidu P.R.J.
62.	Study of Rocks in Thin Section		Morehouse W.E.
63.	Introduction to Micrfossill		Jones, D.J.
64.	General Geology		O-hange, M. Ivanova and Lebedeva (Russian)
65.	Fundamentals of Geology		X-Obruchev
66.	Mining of Mineral Deposits		I. Shevyakov
67.	The Exploration and Development of Oil and Gas Deposits		I. Muravyov
R 68.	Selected Memoirs Records and Bulletin of the Geological Survey of India	Selection of the Literature in this connection may be made at a later stage	Selected

1.	Geology of Petrolium	Leverson	M. Sc. Ref. Book
2.	Field Geology	Lahee	M. Sc. -do-
3.	Down to Earth	Cronies	B. Sc. (Hon.) -do-
4.	General Stratigraphy	Gregory and Barret	B. Sc. and M. Sc.
5.	Geology of India	Wadia	M. Sc.
6.	Principles of Physical Geology	Holmes	M. Sc.
7.	Formation of Mineral Deposits	Bateman	M. Sc.
8.	Manual of Mineralogy	Hurbert	B. Sc.
9.	Igneous and Metamorphic Petrology	Turner	Post Graduate

10.	Principles of Petrology	Tyrrel	Post Graduate
11.	Rutley's Elements of Mineralogy	Read	-do-
12.	Palaeontolgy	H. Woods	B. Sc. (Hon.)
13.	Outlines of structural Geology	Sherbon Hills	B. Sc. (Hon.)
14.	Ratna Vigvan	B.D. Verma	B. Sc. for General reading
15.	Descriptive Petrology of Igneous Rocks Vol. No. 1 to 4	Johannson	M. Sc.
1.	Outlines of Paleontology	Swinerton H.H.	
2.	Petrology for students	Harker A.	

भूगोल विषय-नामिका की सिफारिशें*

भूगोल विषय-नामिका की प्रथम बैठक 9-12-68 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया।

1. डा० आर० एल० सिंह (अध्यक्ष)
2. डा० मुहम्मद शफ़ी
3. डा० बी० सी० मिश्र
4. डा० पी० दयाल
5. डा० ए० के० तिवारी

1. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरन्त अनुवाद की सिफारिश की।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	Geomorphology, Longman's, 1964	Sparks, B.W.
2.	A Geography of Manufacturing, Prentic Hall, Inc., 1962	Miller, E.W.
3.	Industrial Activity and Economic Geography	Estall, R.C. and R.O. Bockanan
4.	Conservation of Natural Resources, John Wiley and Sons, Inc. New York, 1961	Smith, G.H. (ed).
5.	The Skin of the Earth, Mathuen, London, 1962	Miller, A.A.
6.	Latin America	Presten E. James
7.	An Introduction to the Study of Map Projections, University Press, Ltd. London, 10th edition, 1956	Steers, J.A.
8.	Nature of Geography	Hartshorne
9.	Perspective on the Nature of Geography 1969	Hartshorne

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

2. नामिका ने निम्न पुस्तकों की भी सिफारिश की जिन पर शब्दावली आयोग के तत्वाधान में काम हो रहा है, तथा जिन के अनुवाद अधिकार लिए जा चुके हैं अथवा लिए जा रहे हैं।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	An outline of Geomorphology	Wooldridge & Morgan
2.	Introduction to Climate	C.T. Trewartha
3.	Elements of Poltical Geography	Van Valkenburg
4.	Europe, A geography of	W.G. Hoffman
5.	Africa	W.C. Brice, Fitzgerald
6.	Australia	T.C. Taylor
7.	Chishclm's Handbook of Commercial Geography	Stamp, L. Dudley
8.	General Cartography	Raiz, R.
9.	An Introduction to Human Geography	Lebow, J.H.G.
10.	Elements of Geography : Physical and Cultural	Finch V.C. and Trewartha G.
11.	Africa, A Tropical Development Study	Stamp, L.D.
12.	Intermediate Geography (R & I) America	Stamp, L. Dudley
13.	Europe & the Mediterranean	Stamp, L. Dudley
14.	The Pattern of Asia	Ginnsberg, Norten
15.	South East Asia	Dobby, D.H.
16.	Asia	Stamp, L. Dudley
17.	Oceanography for Meteorologists	Sverdrop, H.V.
18.	Climatology	Miller, A.
19.	Climate of Continents	Kendrew, W.G.
20.	Climatology	Blair, T.
21.	An Introduction to Weather and Climate	Trewartha, Glant
22.	A Text Book of Geomorphology	Worcester, P.G.
23.	Principles of Geomorphology	Thoruberry, W.D.
24.	New Physical Geography	Tarrr. R.S.S. Von Evgelin, O.D.
25.	A shorter Physical Geography	De Martome, E.
26.	Principles of Physical Geography	Monkhouse
27.	India & Pakistan	Spate, O.H.K.
28.	Europe (A regional Geography)	Shackelton, M.K.
29.	Asia's Land & People	Cressey, G.B.
30.	Practical Geography	Jameson
31.	Human Geography	White and Rener
32.	Monsoon Asia	E.H.G. Dobby
33.	Physical Oceanography	A. Defant
34.	Industrial and Commercial Geography	Smith Russel
35.	Introductory Economic Geography	Klimm, L.E. Starkey, O.P. and Hall, N.F.

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
36.	Economic Geography	Jones, C.F. and G.G. Darkenwald
37.	Elements of Practical Geography	Singh, R.L.& Dutt
38.	Map work	Bygant and Hughes
39.	Geography of Map	James, P.E. and H.V.B. Kline
40.	Human Geography (Already Translated)	Brunhes, J.
41.	A Systematic Regional Geography of the World Vol. III	U. Stead
42.	Australia & Newzealand	Laborde
43.	Australia	Stamp & Beaver
44.	Australia	Taylor, G.
45-	Africa (A study of Tropical Development)	Stamp & Beaver
46.	North America	Smith, Russel
47.	North America	Jones, L.I. Rodwell & Byrn P.W.
48.	Latin America	Preston James
49.	South America	Stamp and Beaver
50.	Europe	Pounds
51.	Changing Map of Asia	East and Spate
52.	An introduction to oceanography with special reference to Geography & Oeophysics	Jonstone, J.
53.	The Ocean	Murray, J.
54.	Climatology	Kendrew, W.G.
55.	Unstable Earth	Steers, J.A.
56.	Geomorphology	Cotton, C.A.
57.	Principles of Physical Geography	Holmes, A.

3. नामिका ने निम्न पुस्तकें मौलिक रूप से लिखवाए जाने की सिफारिश की।

1. Principles of Geomerphology
2. Population Geography
3. Urban Geography
4. Political Geography
5. Geography of Resources (Uses and Conservation)
6. Agriculturer—A Geographical Study
7. Industrial Geography
8. History of Geographical Thought
9. Geography of India—Physical, Economic and Regional.

भाषाविज्ञान विषय-नामिका की सिफारिशें*

भाषा-विज्ञान विषय-नामिका की प्रथम बैठक 16-12-68 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1.	डा० बाबूराम सक्सेना	अध्यक्ष
2.	डा० धीरेन्द्र वर्मा	सदस्य
3.	डा० एस० एम० कत्रे	,,
4.	डा० यू० एन० तिवारी	,,
5.	डा० वीरेन्द्र श्रीवास्तव	,,
6.	डा० आर० एन० सहाय	,,
7.	प्रो० जी० जे० सोमयाजी	,,

1· उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इसमें से निम्न पुस्तकें विश्व-विद्यालय स्तर के लिए पाई गईं।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	भाषा शास्त्र प्रवेशिका	अमर बहादुर सिंह
2.	कृषक जीवन संबंधी ब्रजभाषा शब्दावली खण्ड 1 और 2	अम्बा प्रसाद सुमन
3.	हिन्दी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप	अम्बा प्रसाद सुमन
4.	हिन्दी भाषा, अतीत और वर्तमान	अम्बा प्रसाद सुमन
5.	भाषाशास्त्र की रूपरेखा	उदय नारायण तिवारी
6.	भोजपुरी भाषा और साहित्य	उदय नारायण तिवारी
7.	हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास	उदय नारायण तिवारी
8.	हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन	ऋषि गोपाल
9.	अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन	कपिल देव द्विवेदी

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
10.	हिन्दी व्याकरण	कामता प्रसाद गुरू
11.	भारतीय भाषा विज्ञान	किशोरी दास वाजपेयी
12.	हिन्दी की वर्तनी तथा शब्द-विश्लेषण भाषा की प्रकृति	किशोरी दास वाजपेयी
13.	हिन्दी शब्दानुशासन	किशोरी दास वाजपेयी
14.	निमाड़ी और उसका साहित्य	कृष्ण लाल
15.	संस्कृत शब्दों में अर्थ-परिवर्तन	केशव रामपाल
16.	शेखावटी बोली का वर्णनात्मक अध्ययन	कैलाश चन्द्र अग्रवाल
17.	हिन्दी में अंग्रेजी आगत शब्दों का भाषा-तात्विक अध्ययन	कैलाश चन्द्र भाटिया
18.	मध्य पहाड़ी भाषा (गढ़वाली कुमाउंनी) का अनुशीलन और उसका हिन्दी से संबंध	गुणानंद जुयाल
19.	तुलनात्मक भाषाविज्ञान	पी० डी० गुणे (अनु० भोलानाथ तिवारी)
20.	ब्रजभाषा और खड़ी बोला के व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन	गेंदालाल शर्मा
21.	ध्वनिविज्ञान	गोलोक बिहारी धल
22.	मध्य पहाड़ी का भाषा शास्त्रीय अध्ययन	गोविन्द चातक
23.	नागरी अंक और अक्षर	गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
24.	भारतीय प्राचीन लिपिमाला	गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
25.	भारत का भाषा सर्वेक्षण	सर जार्ज इब्राहम ग्रियर्सन
26.	मालवी का भाषाशास्त्रीय अध्ययन	चिन्तामणि उपाध्याय
27.	देवनागरी लिपि स्वरूप विकास और समस्याएँ	जोकलेकर
28.	पुरानी राजस्थानी	तैस्सितोरी (अनु० नामवर सिंह)
29.	हिन्दी व्याकरण की रुपरेखा	ज० म० दीमशित्स
30.	हिन्दी व्याकरण	दुनी चन्द
31.	भाषा और भाषिकी	देवी शंकर द्विवेदी
32.	अपभ्रंश भाषा और साहित्य	देवेन्द्र कुमार जैन
33.	भाषाविज्ञान की भूमिका	देवेन्द्रनाथ शर्मा
34.	राष्ट्रभाषा हिन्दी, समस्याएँ और समाधान	देवेन्द्रनाथ शर्मा
35.	ग्रामीण हिन्दी	धीरेन्द्र वर्मा
36.	ब्रजभाषा	धीरेन्द्र वर्मा
37.	ब्रजभाषा व्याकरण	धीरेन्द्र वर्मा
38.	हिन्दी भाषा का इतिहास	धीरेन्द्र वर्मा
39.	अभिनव प्राकृत व्याकरण	नेमीचन्द्र शास्त्री
40.	हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी	पद्म सिंह शर्मा
41.	प्राकृत भाषाओं का व्याकरण	पिशल (अनु० हेमचन्द्र जोशी)

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
42.	आजकल की हिन्दी	बद्रीनाथ कपूर
43.	शब्द परिवार-कोश	बद्रीनाथ कपूर
44.	हिन्दी पदार्थों का भाषागत अध्ययन	बद्रीनाथ कपूर
45.	संस्कृत भाषा	टी० बरो (अनु० भोलाशंकर व्यास)
46.	अर्थविज्ञान	बाबू राम सक्सेना
47.	दक्खिनी हिन्दी	बाबू राम सक्सेना
48.	सामान्य भाषाविज्ञान	बाबू राम सक्सेना
49.	ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ	हरदेव बाहरी
50.	हिन्दी उद्भव, विकास और रूप	हरदेव बाहरी
51.	भारतीय आर्य भाषा : वेदों से लेकर आधुनिक समय तक	ज्यूल ब्लाख (अनु० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय)
52.	भाषा	ब्लूमफील्ड (अनु० विश्वनाथ प्रसाद)
53.	भाषा का इतिहास	भगवद्दत्त
54.	छत्तीसगढ़ी, हलबी, भतरी बोलियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	भाल चन्द्र
55.	भाषाविज्ञान	भोलानाथ तिवारी
56.	भाषाविज्ञान कोश	भोलानाथ तिवारी
57.	शब्दों का जीवन	भोलानाथ तिवारी
58.	हिन्दी भाषा	भोलानाथ तिवारी
59.	संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन	भोलाशंकर व्यास
60.	भाषाशास्त्र	मंगल देव शास्त्री
61.	अन्य भाषा शिक्षण	महावीर सरन जैन
62.	खुरजा तथा बुलंदशहर तहसीलों की बोलियों का संकालिक अध्ययन	महावीर सरन जैन
63.	हिन्दी शब्द रचना	माइदयाल जैन
64.	हिन्दी तद्भवशास्त्र	मुरलीधर श्रीवास्तव 'शेखर'
65.	हिन्दी में प्रत्यक्ष विचार	मुराली लाल उप्रेती
66.	भाषाविज्ञान पर भाषण	मैक्समूलर (अनु० हेमचन्द्र जोशी)
67.	वैदिक स्वर मीमांसा	युद्धिष्ठिर मीमांसक
68.	हिन्दी भाषा शिक्षण	योगेन्द्र जीत
69.	हिन्दी समास रचना	रमेश चन्द्र जैन
70.	हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनि (प्रेस में)	रमेश चन्द्र महरोत्रा
71.	भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश	राजेन्द्र द्विवेदी
72.	अच्छी हिन्दी	रामचन्द्र वर्मा
73.	शब्द साधना	रामचन्द्र वर्मा

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
74.	हिन्दी प्रयोग	रामचन्द्र वर्मा
75.	हिन्दुस्तानी का उद्गम	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
76.	भाषा और समाज	रामविलास शर्मा
77.	आगरा जिले की बोली	रामस्वरूप चतुर्वेदी
78.	बुन्देली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	रामेश्वर अग्रवाल
79.	मथुरा जिले की बोली	रावत
80.	भाषा	वान्द्रियेज़
81.	अपभ्रंश भाषा का अध्ययन	वीरेन्द्र श्रीवास्तव
82.	भारतीय भाषाओं का भाषाशास्त्रीय अध्ययन	ब्रजेश्वर वर्मा
83.	अपभ्रंश व्याकरण	शालिगराम उपाध्याय
84.	अर्थत्व की भूमिका	शिवनाथ
85.	हिन्दी कारकों का विकास	शिवनाथ
86.	भाषा रहस्य	श्याम सुन्दर दास
87.	भाषाविज्ञान	श्याम सुन्दर दास
88.	हिन्दी भाषा का विकास	श्याम सुन्दर दास
89.	दक्खिनी हिन्दी का उद्भव और विकास	श्री राम शर्मा
90.	भाषातत्व और वाक्यपदीय	सत्यकाम वर्मा
91.	हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास	सत्यनारायण त्रिपाठी
92.	मगही व्याकरण और कोश	सम्पति अरियाणी
93.	भाषाविज्ञान और हिन्दी	सरयू प्रसाद अग्रवाल
94.	भाषा-लोचन	सीताराम चतुर्वेदी
95.	भारत की भाषाएँ और भाषा संबंधी समस्याएँ	सुनिति कुमार चैटर्जी
96.	भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी	सुनीति कुमार चैटर्जी
97.	राजस्थानी भाषा	सुनीति कुमार चैटर्जी
98.	भाषाविज्ञान की रूपरेखा	हरीश शर्मा
99.	राजस्थानी भाषा और साहित्य	हीरालाल

नामिका ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के तत्वाधान में निर्माणाधीन निम्न पुस्तकों को विश्वविद्यालय स्तर के लिए स्वीकृत किया।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	Sanskrit Grammar	Whitney
2.	Evolution of Awadhi (A Branch of Hindi)	Babu Ram Saksena
3.	Language	Sapir
4.	Origin and Development of Bengali Language	S.K. Chatterji
5.	An Introduction to Indian Textual Criticism	S.M. Katre
6.	A History of Tamil Language	T.P. Meenakshi Sundaran
7.	Philosophy of Grammer	Jespersen

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
8.	Development of Script (Russian)	
9.	The Principles of Linguistic Philosophy	Have, R.
10.	Historical Phonology of Sanskrit	Edgerton
11.	Writing	David Diringer
12.	An Introduction to Transformational Grammar	E. Bach
13.	Language Change and Linguistic Reconstruction	H.M. Hoenigswald
14.	Selected Writings	Sapir
15.	Introduction to Morphology and Syntax	Elson and Pickett
16.	Syntactic Structure	Noam Chomsky
17.	Phonetics in Ancient India	W.S. Allen
18.	General Linguistics	R.H. Robins
19.	Language, its nature, Development and Origin	Jespersen
20.	Semantics : An Introduction to the Science of Meaning	S. Ullmann

3. नामिका ने निम्न पुस्तक शीर्षकों के अनुवाद की सिफारिशें इस दृष्टि से की कि इनके अनुवाद हो जाने पर इस विषय में हिन्दी के माध्यम से पढ़ाने के लिए न्यूनतम अनिवार्य अनूदित साहित्य उपलब्ध हो सके :—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	The recording of Dialect Materials	Aberorembie, D.
2.	Sandhi	Allen, W.S.
3.	Hindi Semantics	Bahari, Hardev
4.	Linguistic form	Istambul Bazell
5.	A Comparative Grammar of the Modern Aryan Languages of India	Beams, J.
6.	Systems of Sanskrit Grammar	Belvalkar, S.K.
7.	The Formation of Marathi (Marathi translation available)	Bloch, J.
8.	The Grammatical Structure of Dravidian Languages	Bloch, J.
9.	An Outline of Linguistic analysis	Bloch and Trager
10.	Outline Guide for the Practical Study of Foreign Languages	Bloomfield
11.	Essai de Semantique, Science des-Significations (Paris) (English Translation : Semantics : Studies in the Science of Meaning)	Breal, M. Dover
12.	Words and Things	Brown, R.W.
13.	A Comparative Grammar of Dravidian or South Indian Family of Languages	Caldwell, R.
14.	Logical Syntax of Language	Carnap
15.	The Study of Language (A Survey of Linguistics and Related disciplines in America)	Carrol, J.B.
16.	A Linguistic theory of translation	Catford, J.C.
17.	Linguistic Speculation of the Hindus	Chakrabarti, P.C.

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
18.	Evolution of Malayalam	Chandrasekhar, A.
19.	Lexicography	Chapman, P.W.
20.	Languages and Linguistic Problems	Chatterji, S.K.
21.	Aspects of the Theory of Syntax	Chomsky, N.
22.	An Introduction to General Linguistics	Dinnen, S.K.
23.	Brahmi and Dravidian Comparative Grammar	Emeneau, M.B.
24.	Acoustic Theory of Speech Production	Fant, G.
25.	Papers in Linguistics	Firth, J.R.
26.	Historical Grammar of old Kannad	Gai, G.S.
27.	Pali Language and Literature	Geiger (Tr. B.K. Ghosh)
28.	Historical Linguistics and Indo-Aryan Languages	Ghatage, A.M.
29.	Linguistic Introduction to Sanskrit	Ghosh, B.K.
30.	Language and Languages	Graff, W.L.
31.	Traite de Phonetique	Grammont, M.
32.	Foundations of Language	Gray, L.H.
33.	Essays in Linguistics	Greenberg, J.H.
34.	Linguistic Survey of India	Grierson
35.	Handbook of Literacy	Gudschinsky, Sarah
36.	Introductory Linguistics	Hall, R.A.
37.	Linguistics and Your Language	Hall, R.A. (Dr.)
38.	The Linguistic Sciences and Language Teaching	Halliday, S. and McIntosh
39.	Methods in Structural Linguistics	Harris, Z.S.
40.	Bilingualism in the America	Haugen, E.
41.	Language : Meaning and Maturity	Hayakawa, S.I.
42.	General Phonetics	Heffner, R.M.S.
43.	Introduction to Linguisic Structures	Hill, A.A.
44.	Prolegomena to the Theory of Language	Hjelmslev, L.
45.	Outline of Glossematics	Hjelmslev and Uldall
46.	A Course in Modern Linguistics	Hockett, C.F.
47.	A Manual of Phonology	-do-
48.	A Grammar of Indian Language	Hoernle
49.	An Avesta Grammar	Jackson
50.	A Phonology of Punjabi	Jain, Banarasi Dass
51.	Fundamentals of Language	Jakobson and Halle
52.	Preliminaries to speech Analysis, the Distinctive Features and their Correlates	-do-
53.	Analytic Syntax	Jespersen, O.
54.	Mankind, Nation and Individual from Linguistic Point of View	-do-

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
55.	The Formation of Maithili Language	Jha, S.
56.	The Phoneme : Its Nature and Use	Jones, D.
57.	Acoustic Phonetics	Joos, M.
58.	Manual of Phonetics	Kaiser, L. (Ed.)
59.	Assamese : Its Formation and Development	Kakati, B.
60.	Bhasa Itihas Ani Bhugol (Marathi)	Kalelkar, N.G.
61.	The Formation of Konkani	Katre, S.M.
62.	Lexicography	-do-
63.	Prakrit Languages and Their Contribution to Indian Culture	-do- -do-
64.	Some Problems of Historical Linguistics in Indo-Aryan	
65.	A Grammar of Hindi Language	Kellogg, S. H.
66.	A Handbook of the Linguistic Geography of New England	Kurath, Hans
67.	Indo-European Inflectional Categoriez	Kurylowicz
68.	Elements of Acoustic Phonetics	Ladefoged, P.
69.	Linguistics Across Culture	Lado, R.
70.	Language Teaching, A Scientific approach	-do-
71.	Grammar Discovery Procedure	Longacre, R.E.
72.	Elements of General Linguistics	Martinet, Andre,
73.	Functional View of Language	Martinet, A.
74.	Phonology as Functional Phonetics	Martinet, A.
75.	Methods and Equipment for the Language Laboratory	Marty, F.L.
76.	Introduction a L' etud comparative des langues Indo-europeanes	Meillet, A.
77.	La Methode comparative en Linguistique historique	Meillet, A.
78.	Linguistique historique et Linguistique generale Vol. I and II	Meillet, A.
79.	Language and Communication	Miller, G.A.
80.	Learning a Foreign Language	Nida, E.A.
81.	Morphology	Nida, E.A.
82.	The Meaning of Meaning	Ogden, C.K. and Richards, I.A.
83.	Introduction to Modern Linguistics	Palmer, L.R.
84.	The Scientific study and Teaching of Language	Palmer, H.E.
85.	Gujarat Bhasanu Dhvanisvarup and Dhwani Parivartan (Gujarati)	Pandit, P.B.
86.	La Dialectologie : Apercu historiquent Methodes d' Enquetes Linguistiques	Pap, S. etc.

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
87.	Discovery of Language	Federson
88.	Phonemics	Pike, K.L.
89.	Phonetics	Pike, K.L.
90.	A Grammar of the Hindustani or Urdu Language	Platts, J.T.
91.	Translation and Translation	Post Gate, J.P.
92.	Modern Linguistics	Potter, S.
93.	Principles of I.P.A.	,,
94.	Grammarie Sanscrite	Renoue, L.
95.	Gypsies	Sampson
96.	A Course in General Linguistics	Saussure, F.
97.	Introduction to Semantics	Schaff, A.
98.	A Concise Grammmar of the Hindi Language	Schollberg, H.C.
99.	Style in Language	Sebeok, T.A.
100.	Comparative Grammar of Middle Indo-Aryan Languages	Sen, S.
101.	Andhra Bhasha Vikasamu	G.J. Somayaji
102.	Introduction to Linguistic Science	Sturtevant, E.H.
103.	Elements of Science of Language	Taraporewale, I.J.
104.	Grundzuge der phonologic	Trubetzkoy, N.S.
105.	P.D. Gune Memoiral Lectures	Turner, S. Ralph
106.	The Linguistic School of Prague	Vachek, Josef
107.	Critical Studies on Phonetic Observations of Ancient Grammarians	Varma, S.
108.	Perspectives in Linguistics	Watermann, John
109.	Languages in Contact Findings and Problems	Weinrich, U.
110.	Language, Thought and Reality	Whorf, B.L.

भौतिकी विषय-नामिका की सिफारिशें*

भौतिकी विषय-नामिका की प्रथम बैठक 24-12-1968 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. डा० ए० आर० वर्मा	अध्यक्ष
2. डा० कृष्ण जी	सदस्य
3. डा० आर० एन० राय	,,
4. डा० नन्द लाल सिंह	,,
5. डा० एस० पी० सिन्हा	,,

1. उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इसमें से कोई भी पुस्तक विश्व-विद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त नहीं पाई गई।

2. नामिका ने शब्दावली आयोग के तत्वावधान में अनूदित निम्न पुस्तकों को स्वीकृति प्रदान की।

Under Publication

1. Fundamentals of Optics by Jenkins and White
2. Heat and Thermodynamics by Robert and Miller
3. Treatise on Light by Houstan
4. Applied Electricity by Harst
5. Mathematical Theory of Electricity and Magnetism by James J. Jean

Ready for Publication

1. Text Book of Degree Physics by Smith
2. Introduction to Atomic and Nuclear Physics by Semat
3. Text book of sound.

---

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

Translated Books Under Vetting

1. Principles of Electricity and Magnetism by Page
2. Properties of Matter by Champion and Davy
3. Mechanical Properties of Matter by Starling

Books Under Various Stages of Production

1. General Properties of Matter by Newman and Searle
2. Treatise on Heat by Saha and Srivastava
3. Introduction to Modern Physics by Richtmever
4. Introduction to Nuclear Physics by Halliday
5. Radio Astronomy by Graham Smith
6. Text Book of Electricity by Mitchell
7. Atomic Spectra and Atomic Structure by Herzberg.

8.	Optics	Sears, F.W.
9.	Optics	Rossi, Bruno
10.	Electricity and Magnetism (Vol. I & II)	Yarwod, J.
11.	Heat and Thormodynamics	Zemausky
12.	Classical Mechanics	Goldstein (latest Ed.)
13.	Classical Electricity and Magnetism	Panofsky and Philips
14.	Lectures on Theoretical Physics (Vol. I-V)	Sommerfeld
15.	Atomic Physics	Born, Max
16.	Nuclear Explosions and their effects	Dr. D.S. Kothari
17.	Electromagnetism	Slator and Frank
18.	College Physics	Sears and Zemansky
19.	Atomic Physics	Yarwood
20.	Waves Mechanics	Heitler
21.	Modern Magnetism	Bates
22.	Optics	Smith
23.	Optics	Born and Wolfe

The Panel considered the list of books received under the scheme of Preparation, Translation and Publication of standard works of University level in Hindi in collaboration with publishers and decided at first glance that none of the books from this list was of a good standard. However, they agreed that for a thorough examination of these books, they may be sent to the corresponding members of the Panel for an expert opinion.

3. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरंत अनुवाद की सिफारिश की है—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
General Physics		
1.	Physics Vol. I & II	Halliday and Resinike
2.	University Physics	Sears and Zemansky
General Properties of matter		
1.	General Properties of matter	G.J. Smith

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
Heat		
1.	A Text book of Heat (for junior students)	Saha and Srivastava
2.	A Teatise on Heat	M.N. Saha and B.N. Srivastava
3.	Heat and Thermodynamics	J. K. Roberts and Miller
4.	Heat and Thermodynamics	M.W. Zemansky
5.	Thermodynamics : the Kinetic theory of gases and Statistical Mechanics	Sears
6.	Thermodynamics of Irreversible processes	Groot, S.R. De
7.	Thermodynamics	Fermi
Optics		
1.	Applications of Interferometry	W.E. Williams
2.	Fundamentals of Optics	Jenkins and White
3.	Introduction to Geometrical and Physical Optics	J. Morgan
4.	Optics	Rossi
5.	Optics	Sears
6.	Optics	Born and Wolfe
7.	Optics	Smith
8.	Geometrical and Physical Optics	Longhurst, R.S.
9.	Optics	Sommerfeld
Spectroscopy		
1.	Atomic Spectra and Atomic Structure	G. Herzberg
2.	Molecular Spectra	Herzberg
3.	Electronic Spectra of Polyatomic Molecules	G. Herzberg
4.	Experimental Spectroscopy	R.A. Sawver
5.	Introduction to Atomic Spectra	W.E. White
6.	Raman and Infrared Spectra of Polyatomic Molecules	Herzberg
7.	Spectra of Diatomic Molecules	G. Herzberg
Electricity and Magnetism		
1.	A.C. Bridge methods	B. Hague
2.	Classical Electricity and Magnetism	Panofsky and Phillips
3.	Electricity and Magnetism	Sears
4.	Classical Electrodynamics	Jackson
5.	Electromagnetism	Slater and Frank
6.	Electricity and Magnetism	Peck
7.	Electricity and Magnetism Vol I and II	J. yarwood
8.	Modern Magnetism	L.F. Bates
9.	Magnetism and very low temperature	Casimir H.B.G.

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
Electronics		
1.	Electron Tube Circuits	S. Seelv
2.	Electronics and Radio Engineering	Terman
3.	Radio Electronics	Seely
4.	Electromagnetic Waves and Radiating systems	E.C. Jordan
5.	Spectroscopy at radio and Microwave frequencies	Ingram. D.J.E.
6.	Frequency modulation	Hund
7.	Communication Engineering	Everitt
8.	Electronic Fundamental Application	Ryder. J. D.
9.	Electron optics and Electron Microscope	V. K. Zwoykin and others
10.	Electronic Measurements	Termon and Petit
11.	Microwave spectroscopy	Townes, C.H., Schawlow, A.L.
Modern Physics		M. Born
1.	Atomic Physics	
2.	Introduction to Modern Physics	Richmyer and Kennard
Nuclear Physics		
1.	Introductory Nuclear Physics	Halliday
2.	Nuclear Physics	Kaplar, Iiving
3.	A course on Nuclear Physics	Fermi
4.	Experimental Nuclear Physics (Vol. I and II and III)	E. Segre
		N.F. Ramsey
5.	Nuclear Moments	L. Pauling
6.	Theory of Valency	J.M. Blatt and
7.	Theoretical Nuclear Physics	V.F. Weisskopf
Classical Mechanics		
1.	Classical Machanics	L.D. Landau and E.M. Lif schitz
2.	Mechanics	Sommerfield
3.	Classical Mechanics	H. Goldstein
Quantum Mechanics		
1.	Quantum Mechanics	L.I. Schiff
2.	The Principles of Quantum mechanics (4th edition)	P.A.M. Dirac
3,	Quantum Mechanics	Bohm
4.	Quantum Mechanics—non-relativistic theory	Landau and Lifschitz
5.	Quantum Mechanics	Merrbacher Eugen
6.	Classical Theory of Fields	L.D. Landau and E.M. Lifschitz

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
7.	Mathematical Foundations of Quantum Mechanics	J. Von. Neumann
8.	Quantum Electrodynamics	A. Akhzier and V.B. Berezetski
9.	Lectures on Quantum Field Theory	P.A.M. Dirac
10.	Group Theory in Quantum Mechanics	V. Heise
11.	Group Theory	Hameresh
Solid State Physics		
1.	Statistical Mechanics	L.D. Landau and E.M. Lifschits
2.	Elementary Statistical Physics	C. Kittle
3.	Introduction to Solid State Physics	C. Kittle
4.	Solid State Physics	A. J. Dokker
5.	Solid State Physics	A. Mott and Jones
6.	Crystalline State Vol. I and III	Lipson and Cochran
7.	The interpretation of X-rays (diffraction Photography)	Henry, Lipson and Wooster
8.	Crystallography	M. Buerger
Mathematical Physics		
1.	Methods of Theoretical Physics Vol. I and II	Morse and Feshback
2.	Mathematics for Engineers and Scientists	Sokolorikoff and Prdheffer
3.	Methods of Mathematical Physics Vol. I and II	Courant and Hilbert
4.	Lectures on Theoretical Physics	Sommerfield
5.	Course of Theoretical Physics (7 Vol.)	Landau and Lifschitz
6.	Mathematics for students of Physics and Chemistry	Margenan and Murphy
7.	Theory of Relativity	Moller
8.	Relativity	Patharia
9.	Space Time Structure	Schrodinger, E.
Practical Physics		
1.	Modern Physical Laboratory Practice	Strong and others
Acoustics		
1.	Fundamentals of Acoustics	Kinsler, Lawrence and others
General Physics		
1.	Physics, Foundations and Frontiers	Gamow and Cleveland
2.	Introduction to the Physics of Mass, Length and Time	Feather Norman

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
9.	नीतिशास्त्र	सिन्हा, जे० एन०
10.	नीतिशास्त्र	जोशी, शान्ति
11.	दर्शनशास्त्र के मूल-तत्व	तिवारी, ब्रजगोपाल
12.	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन	डा० देवराज
13.	नीति-प्रवेशिका	मेकेंजी

2. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरत अनुवाद की सिफारिश की है—

1.	The Idea of the Holy	Otto
2.	Either/Or	Kierkegaard
3.	Principles of Human Knowledge	Berkeley
4.	Reason & Existence	Jaspers
5.	Blue & Brown Books	Wittgenstein
6.	Theism	Flint
7.	The Existence of God	Masson
8.	Idea of God	Pringle Pattison
9.	Approaches to Philosophy of Religion	Brenstein & Schulweis
10.	New Essays in Philosophical Theology	Flew & Mac Intire
11.	Essays in Critical Realism	Santayana etc.
12.	The New Realism	Holt etc.
13.	Hegel	Stace
14.	Process & Reality	Whitehead
15.	The Spirit of Medieaval Philosophy	Gilson
16.	Critical History of Greek Philosophy	Stace
17.	Lectures on Aesthetics	Bosanquet
18.	Ethics	Nowell Smith
19.	Prolegomena to Ethics	Green
20.	Ethical Theories	Mendel
21.	Contemporary Ethical Theories	Hill
22.	A Modern Introduction to Moral Philosophy	Montiflore
23.	Philosophy & Logical Syntax	Carnap
24.	The Nature of Truth	Joachim
25.	An Enquiry into Meaning and Truth	Russell
26.	The Philosophy of Symbolic Forms	Cassirer
27.	Philosophical Analysis	Urmson
28.	How to do things with words	Austin
29.	Philosophical Investigations	Wittgenstein
30.	Tractatus Logico philosophicus	—do—
31.	Methods of Logic	Quine

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
32.	An introduction to Logic	Copi
33.	The Language of Morals	Hare
34.	A Critical History of Modern Philosophy	O'Connor
35.	History of Western Philosophy	Russell
36.	History of Philosophy	Windeband
37.	Guide to Philosophy	Joad
38.	Problems of Philosophy	Russell
39.	The two sources of Morality and Religion	Bergson
40.	Introduction to Metaphysics	Bergson
41.	Beyond Good and Evil	Nietzsche
42.	Utilitarianism	Mill, J.S.
*43.	Phenomenology of the Mind	Hegel
*44.	Science of Logic	Hegel
45.	Being and time	Martin Heidegger
46.	Creative Evolution	Bergson
47.	Pragmatism	James, W.
*48.	Essay Concerning Human Understanding	Locke
*49.	Monadology	Leibnitz
*50.	Meditations	Descartes
*51.	The Philosophy of Science: An introduction	Toulmin
*52.	The Philosophy of History	Hegel
*53.	Philosophy of Civilization	Schweitzer
54.	Introduction to Philosophy of Religion	Caird, J.
55.	Chief Currents of Contemporary Philosophy	Datta, D.M.
*56.	Aesthetics	Croce, B.
57.	History of Ethics	Sidgwick
*58.	Metaphysics of Morals	Kant
*59.	Ethics and Language	Stevenson
60.	Problems of Knowledge	Ayer
*61.	Philosophical Studies	Moore
62.	Logical Syntax of Language	Carnap
63.	Six ways of Knowing	Datta, D.M.
64.	Introduction to Mathematical Philosophy	Russell
65.	Logic for use	Schiller
66.	Five types of ethical Theory	Broad, C.D.
67.	The Development of Logic	Kneale
68.	Symbolic Logic	Copi
69.	Introduction to Semantics	Carnap
70.	Logic and Language	Flew, A.
71.	Thealtetus, Parmenides and sophist	Plato
72.	Treatise of Human Nature	Hume
73.	A Dialogue in Natural Religion	Hume
74.	Prolegomena to any future Metaphysics	Kant

नामिका ने *पुस्तकों को शब्दावली आयोग द्वारा अनूदित करने की सिफारिश की।

नृ-विज्ञान विषय-नामिका की सिफारिशें*

नृविज्ञान विषय-नामिका की प्रथम बैठक 2-12-68 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. प्रो० एस० सी० दुबे········अध्यक्ष
2. प्रो० एल० पी० विद्यार्थी······सदस्य
3. प्रो० सच्चिदानन्द·············सदस्य

सदस्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिये नामिका ने निम्न व्यक्तियों की सिफारिश की।

1. दिल्ली विश्वविद्यालय के डा० एस० सी० तिवारी
2. रांची विश्वविद्यालय के डा० सरन और
3. पूना विश्वविद्यालय के डा० वीरेन्द्रनाथ मिश्र

उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

1. नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इसमें से निम्न पुस्तकें विश्व-विद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाई गईं—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	भारतीय संस्कृति के उपादान	मजूमदार
2.	मानव और संस्कृति	दुबे, श्यामाचरण
3.	मानव विज्ञान की रूपरेखा	विद्यार्थी, माथुर और सिंह
4.	मानवमिति	सिंह, रिपुदमन

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
5.	प्रागितिहास	मजूमदार एवं सरन
6.	छोर का एक गांव (सन्दर्भ)	मजूमदार, धीरेन्द्रनाथ
7.	प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियां	गोयल, श्रीराम
8.	मानव-शरीर रचना	वर्मा, डा० मुकन्दस्वरूप
9.	आदिवासी भारत	योगेश अटल
10.	भारतीय नगर	विद्यार्थी, एल० पी०
11.	भारत की सामुदायिक विकास योजना	सच्चिदानन्द
12.	भारतवर्ष में विवाह एवं परिवार	कपाडिया, के० एम०
13.	मोहन-जोदड़ो	काला, सतीशचन्द्र
14.	सिन्धु सभ्यता	काला, सतीशचन्द्र
15.	आदिवासी	सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
16.	बिहार के आदिवासी (सन्दर्भ)	विद्यार्थी, एल० पी०
17.	सामाजिक नृ-शास्त्र	इवान्स, प्रिचर्ड
18.	मानव की कहानी	कूल, कार्लटन एस०
19.	अमेरिकी सभ्यता	लर्नर, मेक्स
20.	सांस्कृतिक मानव-शास्त्र (अनु० रघुराज गुप्त)	हर्स्कोवित्स
21.	भारत में जाति	हट्टन, जे० एच०
22,	मानव की उत्पत्ति और क्रमिक विकास	नैस्तुर्ख, माइकेल
23.	दि ऑरिजिन आफ स्पीशिज़	डारविन
24.	मैन इन दि प्रिमिटिव वर्ल्ड	होइबल
25.	मैन-काइंड इन दि मेकिंग	होवल्स

2. नामिका ने निम्न हिन्दी पुस्तकों को विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाया जो शब्दावली आयोग द्वारा अनूदित की जा रही हैं।

1.	Anthropology	Krocheris
2.	Introduction to Social Anthropology	Pieldingtor
3.	Evolution, Genetics and Eugenics	H.H. Newwass
4.	Social Organisation	Riner

3. नामिका ने निम्न पुस्तकों को मौलिक रूप में लिखने के लिए सिफारिश की—

1. Human Evolution
2. Races of Man
3. Pre-history and Archaelogy
4. Human Biology
5. Social Structure

संख्या	पुस्तकें	लेखक

6. Marriage, Family and Kinship
7. Primitive Economics
8. History of Anthropology
9. Anthropology of Religion
10. Political Anthropology
11. Theories of Culture
12. Culture and Personality
13. Language & Culture
14. Primitive Cultures round the World
15. Recent Trends in Anthropology
16. Primitive and Peasant Culture of India
17. Peasant Culture around the world
18. History of Indian Anthropology

नामिका ने निश्चय किया कि उपरोक्त विषयों पर विदेशी पुस्तकों के रूपान्तर मौलिक पुस्तकों के रूप में कर लिए जायें। इससे विदेशी मुद्रा की बचत होगी और अनुवाद-अधिकार विलम्ब से मिलने की परेशानी से भी बचा जा सकेगा।

4. नामिका ने यह भी निश्चय किया कि एक सौ पच्चीस पृष्ठ के विभिन्न विषयों पर बीस संक्षिप्त मोनोग्राफ प्रारम्भ में निकाले जाएं।

5. इसके अतिरिक्त निम्न विषयों पर 'पाठ-संग्रह' (Book of Reading) लिखे जायें।

1. Readings from the Founding Fathers of Anthropology
2. Readings on Human Evolution
3. Readings on Human Biology
4. Readings on Prehistorical Archaeology
5. Readings on Social Structure
6. Readings on Myth and Ritual
7. Readings on Economic Anthropology
8. Readings on Peasant Societies and Culture
9. Readings on Political Organization
10. Readings on Social and Cultural Change

6. **नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरत अनुवाद की सिफारिश की।**

I. Cultural Anthropology

1.	An Introduction to Anthropology	Beals and Hoijer	I
2.	Man, Culture and Society	Shapiro	II
3.	Cultural Anthropology	Titiev	II
4.	Human Types	R. Firth	I
5.	Mirror for Man	Kluckhohn	I
6.	Other Cultures	Beattie	I
7.	An Introduction to Social Anthropology	L. Mair	I
8.	Politics, Law & Ritual in Tribal Society	Gluckman	II
9.	Introduction to Social Anthropology (Vol. I & II)	Piddington	
10.	The World of Man	Honigman	I
11.	Profiles in Ethnology	Service	I
12.	Understanding Human Society	Goldschmidt	

II. Family, Marriage and Kinship

13.	Social Structure	Murdock	II

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक	
14.	Kinship and Marriage	Robin Fox	I
15.	African Systems of Kinship and marriage (selected essays on India only)	Radcliffe— Brown and Forde	II
16.	Developmental Cycle of Domestic Group	Jack Goody	

III. Economic Anthropology

17.	Habitat, Economy and Society	D. Forde	II
18.	Economic Anthropology	Herskovits	I
19.	Readings in Economic Anthropology	George Dalton	II

IV. Political Anthropology

20.	Pritchard : African Political System	Fortes & Evans	II
21.	Custom and Conflict in Africa	Gluckman	I
22.	Tribes without Rulers	Middleton & Tait	II
23.	Political Anthropology (to be condensed)	Swartz & Turner	I
24.	Comparative Political Systems (Selected Essays)	Cohen & Middleton	II

V. Religion

25.	Religion among the Primitives	William J. Goode	I
26.	Theories of Primitive Religions	Evans Pritchard	I
27.	Anthropological Approaches to the study of Religion	A.S.A. Monographs	II

VI. Research Methodology

28.	The Craft of Social Anthropology	Epstein	I

VII. Anthropological Theory

29.	They Studied Man	Kardiner & Preble	I
30.	Structure & Function in Primitive Society	Radcliffe-Brown	I
31.	Man & Culture (Selected Essays)	R. Firth	II
32.	Rethinking Anthropology (Selected Essays)	Leach	II
33.	Theory of Social Structure (Condensed)	S.F. Nadel	II
34.	Closed Systems & Open Minds (Selected Essays)	Gluckman	II
35.	Primitive World & its Transformations	Redfield	II
36.	Theoretical Anthropology	Bidney	II

VIII. Applied Anthropology

37.	Traditional Cultures & Technological Change	Foster	I

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक	
38.	Cooperation in Change	Goodenough	I

IX. Classics/Reference Books

39.	Ancient Society	Morgan	II
40.	Patterns of Culture	Ruth Benedict	II
41.	Scientific Theory of Culture	Malinowski	I
42.	Dynamics of Culture Change	Malinowski	II
43.	The Study of Man	Linton	II
44.	Theory of Culture Change	Stewart J.H.	
45.	The Scheduled Tribes	Churve	II
46.	The Science of Culture	White, L.A.	II
47.	Social Organisation	Rivers, W.H.R.	II
48.	Primitive Culture	Tylor	
49.	Crime & Custom in Savage Society	Malinowski	
50.	Folk Culture of Yucatam	Redfield, R.	

PHYSICAL ANTHROPOLOGY

I. Human Origin & Evolution

1.	Mankind in the Making : the Story of Human Evolution. Secker & Warburg, London	Howells, W.W.	I
2.	History of the Primates. (Uni. Press, Edinburg)	Leuros Clark	I
3.	Origins of Man John Wiley & Sons. Inc. New York	Buettner, Janusch John	I

II. Fossil Men & Prehistory

4.	Introduction to Physical Anthropology 3rd Edition Thomas C.C. U.S.A.	Ashley Montagu M.F.	I
5.	Up from the Ape. The Macmillan Comp. New York	Hooten, E.A.	I
6.	Adam's Ancestors. (Harper, U.S.A.)	Leakey, L.S.B.	I
7.	Our Early ancestors. (Uni. Press, Cambridge)	Burkit, M.C.	II
8.	Early Man. (D. Appleton & Co. New York, London)	MacCurdy, G.G.	II

III. Living Races & Human Populations

9.	Races of Man. (Uni. Press, Cambridge)	Hadon, A.C.	I
10.	The History of Man : from the First Human to Primitive Culture and Beyond. Jonathan Cape, 30, Badford Square, London	Coon, C.S.	I

क्रक सं०	पुस्तक	लेखक	
11.	People of Asia Kegan Paul, Tranch, Trubner & Co. New York	Buxton	I
12.	The Races of Europe The Macmillan Co. New York	Coon, C.S.	I
13.	Races of Africa 4th Ed. Oxford Uni. Press	Seligman, C.C.	I

IV. Human Genetics & Miscellaneous

14.	Principles of Human Genetics W.H. Freeman & Co. San Fransisco, & London	Curt Stern	I
15.	Human Biology : An Introduction to Human Evolution, Variations & Growth. Oxford Uni. Press	Harrison (Edited)	I
16.	Survey of Principles of Heredity (College Series) Houghton Miffin Co. Riverside Press, Cambridge.	Winchester, A.M.	I
17.	Genetics & Races of Man (adaptation) Little Brown & Co. Boston	Boyd, W.C.	I
18.	Anthropometry Bharti Bhawan, Educational Publishers and Book Sellers, Delhi	Singh & Bhasin	I
19.	Elementary Principles of Genet ics	Singleton	II
20.	Anthropologia Vol. I & II.	Martin	I
21.	Finding the Missing Link	Robert Broom	I
22.	Archaeology Today	Sankalia	I
23.	Tool Making	Sankalia	I

V. Reference Books

24.	Ideas on Human Evolution Harvard Uni. Press, USA	Howells, W.W.	I
25.	Evolution of Man	Lasker	II
26.	Antecedents of Man Uni. Press Edinburg	Legros Clark	
27.	Apes, Giants & Man Uni. of Chicago	Weidenreich, Franz	II
28.	The Fossil Evidence for Human Evolution Uni. of Chicago Press, Chicago	Legros Clark	II
29.	Manual of Physical Anthropology (Revd. Ed. 1960) Charles C. Thomas Pub., Ilinois, U.S.A.	Comas, Juan	I

2. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरत अनुवाद की सिफारिश की है—

1.	Text Book of Organic Chemistry	Ferguson
2.	Modern Coordination Chemistry	Lewis and Wrinkins
3.	Advanced Inorganic Chemistry	Cotton and Wilkinson
4.	Thermodynamics	Van Wylen
5.	Theoretical Chemistry	Glasstone, S.
6.	Stereo Chemistry	Barenett. E. De Barry
7.	A Course in Technique of Organic Chemistry	Elividge and Simms
8.	Practical Organic Chemistry	Liustead and Wneedon
9.	Topics in Organic Chemistry	Fieser and Fieser
10.	Fundamental Principles of Physical Chemistry	Prutton and Maron
11.	The Chemistry of Coordination Compounds	Bailer, J.C.
12.	Organic Chemistry	Brewster
13.	Electronic Theory of Organic Compounds	Dewar
14.	Advanced Organic Chemistry	Fuson, R.C.
15.	Introduction to Electronic Theories of Organic Chemistry	Brown
16.	Physical Chemistry	Moore Walter, J.
17.	Inorganic Chemistry	Heslop and Robinson
18.	Organic Chemistry	Cram and Hanmond
19.	Modern Inorganic Chemistry	Mellor and Parks
20.	Fundamentals of Physical Chemistry	Barrow, G.
21.	Valency (Classical and Modern)	Palmer, W.G.
22.	A textbook of Practical Organic Chemistry including Organic Analysis (latest edition) in three parts	Vogel
23.	A text book of Macro and Semi Micro Inorganic Qualitative Analysis	Vogel
24.	A text book of Inorganic Quantitative Analysis	Vogel
25.	Colloid Science	Mcbain
26.	Physical Organic Chemistry	Hine
27.	Organic Chemistry	(4 vols.)

Published Recently

1. Carbohydrate Aur Gloucoside; Author: Phool Dev Sahai Verma; Publisher: Manager, Publication Branch, Govt. of India, Civil Lines, Delhi.
2. Kalij Kemistry (College Chemistry by L. Pauling)

List of Books under Publication

3. Inorganic Chemistry by Moelter
4. Experimental Physical Chemistry by Deniel Alberty
5. A Text Book of Bio-Chemistry by West and Todd

List of Books Ready for Publication

6. Treatise and Inorganic Chemistry Vol. I by Remy
7. ,, ,, ,, ,, Vol. II ,, ,,

List of Books, Translation completed and now under Vetting

8. Kinetic Theory of Gases by Kennard
9. Roger's Manual of Industrial Chemistry by Furnes Vol. I and II
10. Elements of Physical Chemistry : S. Glasstone
    List of Books under various Stages of Translation
11. General Chemistry by Pauling
12. Text Book of Organic Chemistry by Schsist
13. Text Book of Physical Chemistry by Glasstone
14. Metals of the Future by Flovore and Yodkevech
15. Inert Gases by Fink
16. Physical Chemistry by Mee
17. Hand Book of Organic Analysis by Clarke
18. Text Book of Organic Chemistry—Vol. I and II
19. Outline of Physical Chemistry by Daniels and Alberty
20. Nature of Atoms and Molecules by Scott and Kanada
21. Systematic Inorganic Chemistry by Caven and Lander
22. Modern Aspects of Inorganic Chemistry by Emelius and Anderson
23. Experimental Inorganic Chemistry by Palmer
24. Experimental Physical Chemistry by Palmer
25. Biochemistry by Harrow Majur
26. Principles of Organic Chemistry by Geissman

3. नामिका ने निम्न पुस्तक-शीर्षकों के अन्तर्गत मोनोग्राफ लिखवाने की सिफारिश की है—

Physical Chemistry

M. Sc. FINAL

1. Crystals and Chemistry of the solid State ; Closest Packings and defects
2. Metals, their properties and structure (including semi-conducters) Bonding in metals
3. Wave mechanics, and its applications to understanding of bonds spectra (atomic and molecular), calculations of Physical constants, understanding of radio-activity and the periodic table
4. Mechanism of reactions (gas reactions, reactions in solutions, reactions between charged particles in solutions)
5. Mechanisms of electron-transfer and atoms (or group-transfer) reactions
6. Acid-Base concept and catalysis based upon them
7. Photochemistry including chain reactions
8. Thermodynamics (classical)
9. Thermodynamics (statistical) and calculation of thrmodynamic functions
10. Electrochemistry of solutions

11. Reversible and irreversible phenomena at electrolysis in solution
12. The liquid state, (thermodydamics of rubber, liquid crystals)
13. Physical properties and structure of molecules
14. Advanced kinetic theory
15. Macromolecules (formation, properties and particle-weight determination and distribution.)
16. Surface Chemistry (including heterogeneous catalysis)
17. Principles of instrumental analysis
18. Determinatian of partitions, functions and applications
19. Oxidation and Reduction, redoxpatentials and calculations based on them
20. Phase Rule and its applications
21. Equilibria in Physico-chemical system
22. Thermodynamics of irreversible phenomena
23. Structure and mechanism of reactions
24. The old quantum theory and its failures

Organic Chemistry

M.Sc. (FINAL) GENERAL

1. Mechanism of chemical reactions ; Electronic theory and its applications, resonance, Molecular orbital theory.
2. Molecular rearrangements :
   Tautomerism, Ring Chain tautomerism, aninotropy, Beckmann re-arrangement, Walden inversion, Wagner-Meerwein rearrangement.
3. Concept of aromaticity in non-benzenoid systems :
   azulens, tropolones, ferrocene and mesoionic compounds
4. Alkaloids : Quinine, papaverine, narcotine, morphine ; biosynthesis of alkaloids.
5. Terpenes : biosynthesis of isoprenoids
   Elementary treatment of di-and triterpenoids.
6. Vitamins and hormones including sex hormones ; their occurrence isolation; structure and synthesis.
7. Name reactions in organic chemistry :
   Oppenauer oxidation, Meerwein-Pondorff's reduction, Darzen's glycidic ester reaction, Wilgerodt reaction, Elbs persulphate oxidation. Ullmann, Napieralski reaction and Sommelet reaction.
8. Chemotherapy : An elementary treatment of structure in relationship to biological activity.
9. Chemistry of antimalarials, antiseptics, analgesics, sulphadrugs, insecticides and tranquillizers.
10. Antibiotics : Isolation, structure, synthesis (if any) and uses of the following :
    Penicillin, Chloromycetin, Streptomycin and Tetracyclines.
11. Carotenoids : Isolation, properties, structure and synthesis of Lycopene, alpha and gamma-carotenes, Xanthphyll and Zeaxanthin.

12. Prophyrins : Isolation, structure and synthesis of porphyrins of blood and chlorophyll. Phthalocyanins.
13. Polymers : (a) Natural and Synthetic rubber
    (b) Synthetic plastics
14. Pteridines
15. Photosynthesis
16. Spectroscopy and its applications in structural chemistry, visible U. V. and infrared spectra, N.M.R.

M. Sc. (FINAL) SPECIAL

1. Alkaloids : Preparation Properties. structure and synthesis of strychnine, emetine, colchicine, reserpine, lysergic acid.
2. Nucleic acids
3. Peptides of Physiological importance—Clutathione, gramicidin—S ; oxytocin and insulin.
4. Synthetic oestrogens, desoxy—Corticosterone and Cortisone.
5. Steroidal glycosides and sapogenins : Digilanides, strophanthin diosgenin and Scilaren-A.
6. Uses of the following reagents in organic synthesis :
   Raney Nickle, Osmium tetraoxide, per acids, lead tatracetate, boron trifluoride, Cirard's reagent, metal hydries, metal ammonia reductions, Organolithium Compounds, dicyclohoxy carbodimide selenium dioxide diazomethane, N-bromosuccinimide, Polyphosphoric acid.
7. Fluorocarbons, their preparation, properties and uses.
8. Acetylene and its synthetic uses
9. Organo phosphorous compounds : Witting's reaction
10. Synthetic fibres
11. Free redical reactions
12. Lipids

Inorganic Chemistry

M.Sc. FINAL

1. Atomic Structure
2. Atomic and Molecular Spectra
3. Applications of wave mechanics to Chemistry
4. Periodicity of elements
5. Redioactivity
6. Lanthanona
7. Artificial Elements
8. Coordination Compounds
9. Inert Gases
10. Hydrides
11. Basic Principles of metallurgy
12. Peroxides and pracids

13. Infrared spectroscopy
14. N.M.R. Spectroscopy
15. Magnetochemistry
16. Organametallic elements (a) Non transition elements (b) transition elements
17. Modern Concepts of Acids and Bases
18. Non-aqueous solvents
19. Carbonyls and Nitrosyls of metallic elements
20. Alkoxides and Siloxides of Elements
21. B-diketone derivatives of metals
22. Thermogravimetry
23. Isopoly and heteropoly acids
24. Sillicates and their structures
25. Alloys and Intermetallic compounds
26. Silicones and organosilicon compounds
27. High temperature Inorganic Chemistry
28. Phosphonitric polymers
29. Inorganic polymers
30. Mechanism of substitution reactions in Inorganic Chemistry
31. Stability of metallic complexes
32. Valency
33. Principles of metallurgical process
34. Structure and stability of nuclei
35. Isotopes
36. Crystal Field Theory
37. Interpretation of spectra of inorganic complexes
38. Transition elements
39. Nuclear Energy
40. Steel Industry
41. Alakali Industry
42. Phosphate industry
43. Nitrogen cycle and nitrogen fixation

Bio-Chemistry

M. Sc. FINAL

1. Development of Biochemistry-Historical Account
2. Biochemistry and Physico-chemical concepts
3. Metabolisms-(i) Carbohydrates (ii) Proteins (iii) Liquids (iv) Nucleic acids nucleo proteins (v) Water and Mineral elements
4. Biological Antagonists
5. Microbiologv and its applications to biochemistry (General study of microbiology and microbiological assay of vitamins, hormone and antibiotics

6. Industrial fermentations (Alcohols, Acids, Antibiotics)
7. Enzymes
8. Intermediary metabolisms : (i) Carbohydrates (ii) fats (iii) Proteins
9. Bioenergetics
10. Metabolism of special tissues
11. Photochemistry
12. Research techniques in biochemistry

Practical Bio-Chemistry

Part I (M.Sc. Previous)

1. Qualitative and Quantitative analysis of (i) Carbohydrates (ii) Fats (iii) Proteins (iv) Milk (v) Urine
2. Analysis of Saliv
3. Biochemical preparations

Part II (M. Sc. Final)

1. Microbiology (Culture, assay fermention)
2. Animal Experimentation
3. Plant Experimentation
4. Analysis-Food, Blood (Qualitative and Quantitative)
5. Enzymes
6. Tracer techniques
7. Biochemical preparations

Analytical Chemistry

1. Statistics and Sampling (Data analysis)
2. Principles of Analysis
3. Thermogravimetry
4. Semi-micro Analysis (organic)

4.A. -do- (Inorganic)

5. Micro-analysis
6. Acids and Bases
7. Chemical microscopy
8. Hydrogenion concentration (PH)
9. Indicators
10. Mass spectometry
11. Nuclear Radiations—Their measurements
12. Functional Groups and Their analysis
13. Solvent Extraction
14. (a) Chromatography
    (b) Paper Chromatrography
15. Ion-exchange resigns
16. Vapour phase chromatography

17. Analysis of Commercial Substances
18. Potentiometric analysis
19. Conductometric analysis
20. Electrode reactions
21. Coulometry
22. Flourimentary
23. Flame photometry
24. Spectroscopic analysis
25. Raman spectroscopy
26. X-ray diffraction
27. Infrared spectra
28. Nuclear magnetic resonance
29. Refrectometry
30. Water Analysis
31. Gas Analysis
32. Spot test analysis
33. Electro photesis
34. Instrumental analysis
35. Assay of Vitamins
36. Precision and accuracy
37. Buffer Solutions
38. Complex and complexometry
39. Dipole moments

4. नामिका ने निम्न पाठ्य-पुस्तकों को मौलिक रूप से लिखवाने की सिफारिश की है—

(क) स्नातकोत्तर स्तर

1. A Text book of Physical Chemistry—3 vols.
2. A Text book of Inorganic Chemistry—3 vols.
3. A Text book of Organic Chemistry—3 vols.
4. A Text book of Qualitative Analysis—1 vol.
5. A Text book of Semi-Micro Analysis—1 vol.
6. A Text book of Organic Preparations—1 vol.
7. A Text book of Practical Chemistry—1 vol.
8. A Text book of Physico-Chemical constants and Mathematical Tables– 1 vol.
9. A Text book of Quantitative Analysis—6 vos.
10. A Text book of Organic Analysis—1 vol.
11. A Text book of Organic Indentifications is Data (Clark's type)
12. Text book of Biochemistry—12 vols.
13. Text book of Analytical Biochemistry

1. Inorganic Chemistry
2. Physical Chemistry
3. Organic Chemistry
4. Analytical Chemistry
5. Biochemistry

(ख) स्नातक स्तर

1. A Text book on Inorganic Chemistry
2. A Text book on Organic Chemistry
3. A Text book on Physical Chemistry
4. A Text book on Analytical Chemistry
5. A Text book on Chemical Calculations
6. A Text book on History of Chemistry

राजनीति-विज्ञान विषय-नामिका की सिफारिशें*

राजनीति-विज्ञान विषय-नामिका की प्रथम बैठक 2 दिसम्बर, 1968 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार नयी दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1.	प्रो० ए० बी० लाल	अध्यक्ष
2.	डा० वी० पी० वर्मा	सदस्य
3.	डा० एस० पी० वर्मा	,,
4.	डा० ए० अवस्थी	,,
5.	डा० एस० एन० वर्मा	,,
6.	डा० चेतकर झा	,,
7.	डा० बी० एस० खन्ना	,,

1. उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इनमें से निम्न पुस्तकें विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाई गईं—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का संक्षिप्त इतिहास	जी० एस० गोर्थोन हार्डी
2.	हिन्दू राज्यतंत्र—प्रथम व द्वितीय खण्ड	रामचन्द्र वर्मा
3.	पाश्चात्य राजनीतिक विचारधारा	डा० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा
4.	अरस्तु की राजनीति	भोला नाथ शर्मा

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
5.	राजनय	राघवेन्द्र सिंह
6.	शासन पर दो निबन्ध	सरला मोहन लाल
7.	राजनीति और दर्शन	डा० विश्वनाथ प्रसाद
8.	आदर्श नगर-व्यवस्था	भोलानाथ शर्मा
9.	राजनीति-दर्शन का इतिहास—खण्ड-1	जार्ज एच० सेवाहन
10.	राजनीतिक दायित्व के सिद्धान्त	ब्रज मोहन शर्मा
11.	आधुनिक राजनीतिक चिन्तन	फ्रान्सिस डब्ल्यू० कोकर
12.	राजनीति-दर्शन का इतिहास—खण्ड-2	जार्ज एच० सेवाहन
13.	राजनीति विज्ञान और शासन	जेम्स विल्फर्ड गार्नर
14.	पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन का इतिहास—खण्ड-1	हरिदत्त वेदालंकार
15.	इंगलैंड का राजदर्शन	हेराल्ड जे० लास्की
16.	इंगलैंड का राजदर्शन	सर अर्नेस्ट बार्क
17.	कूटनीति के सिद्धान्त और व्यवहार	के० एम० पणिक्कर
18.	सामाजिक पाषाण	डा० बूलचन्द, आई०ए०एस०
19.	विश्व राजनीति परीवेक्षण	डा० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा
20.	राजनीति के सिद्धान्त	महादेव प्रसाद शर्मा
21.	राजनीतिशास्त्र	सत्यकेतु विद्यालंकार
22.	राजनीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त	इकबाल नारायण
23.	राजनीतिशास्त्र प्रवेशिका	सत्य नारायण दुबे
24.	राजशास्त्र के मूल सिद्धान्त	डा० ब्रज मोहन शर्मा
25.	राजनीति चिन्तन का इतिहास	गैटिल
26.	लोक प्रशासन	प्रो० डी० सी० चतुर्वेदी
27.	इंगलैंड में स्थानीय शासन	प्रो० मृत्युंजय प्रसाद मिश्र
28.	लोक प्रशासन	डा० अवस्थी एवं डा० माहेश्वरी
29.	लोक प्रशासन	सी०पी० भाम्मरी
30.	पाकिस्तान का संविधान	जी० पार्थसारथी
31.	भारतीय संविधान	एम० वी० पापली
32.	भारतीय गणतंत्र का संविधान	डा० महादेव प्रसाद शर्मा
33.	संसार की प्रशासनिक प्रणालियां	अनूपचन्द्र कपूर

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
34.	आधुनिक राजनीतिक संविधान	सी०एफ० स्ट्रांग
35.	आधुनिक संविधान	के०सी० व्हीयर
36.	संसद् और संसदीय प्रक्रिया	परिपूर्णचन्द पेन्यूली
37.	भारत का संविधान	कन्हैया लाल वर्मा
38.	भारतीय संवैधानिक और राष्ट्रीय विकास	वी०पी०एस० रघुवंशी
39.	भारतीय संविधान	एम०वी० पापली
40.	भारतीय गणतंत्र का संविधान	महादेव प्रसाद शर्मा

2. नामिका ने निम्न पुस्तकों को भी स्वीकृति प्रदान की है। इन पुस्तकों के शब्दावली आयोग द्वारा अनुवाद-अधिकार भी प्राप्त हो चुके हैं—

1.	United Nations	(Everyman)
2.	English Constitutional History	Adams
3.	Shorter Constitution of India	D. Basu
4.	Constitutional History of India	Punnaiah
5.	Modern Indian Political Thought	V.P. Verma
6.	Constitutional Govt. of India	Pylee, M.V.
7.	Principles of Politics	Lord
8.	Democracy and Its Rivals	Tiyod
9.	Today's Isms	Ebenstein
10.	A Primer of Public Administration	Finer
11.	Public Administration	Dimock & Dimock
12.	International Relations	Palmer & Perkins
13.	European Diplomatic History	Sontag
14.	Public Administration	F.M. Marx
15.	Short History of International Organisation	Mangone
16.	Modern Foreign Governments	Ogg & Zink
17.	Govt. of Greater European Powers	Finer
18.	Parliamentary Govt. in England	Laski
19.	Indian Parliament	Morris Jones
20.	Web of Government	Mac Iver
21.	From Luther to Hitler	Mc. Govern

3. नामिका ने शब्दावली आयोग की प्रकाशकों के सहयोग की योजना के अन्तर्गत प्राप्त निम्न शीर्षकों को अनुमोदन प्रदान किया—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	Parliamentary Govt. in England	Laski
2.	Constitutional History of India	Keith
3.	Fundamentals of Political Science and Organisation	Gurmukh Nihal Singh
4.	History of Political Theories—3 Vols.	Dunning
5.	Landmarks in Indian Constitutional and National Development	Gurmukh Nihal Singh
6.	Local-Self Govt. in India	M.P. Sharma
7.	Principles and Practice of Public Administration	Ruthnaswamy
8.	Rajnitishastra (Political Science)	Gettell

4. नामिका ने निम्न पुस्तक शीर्षकों के अनुवाद की सिफारिश इस दृष्टि से की कि इनके अनुवाद हो जाने पर इस विषय में हिन्दी के माध्यम से पढ़ाने के लिए न्यूनतम अनिवार्य अनूदित साहित्य उपलब्ध हो सके :—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	The Man Versus the State	Herbert Spencer
2.	A History of Political Thought in 16th. Century	Allen
3.	Recent Political Theories	Marriam, Barnes and others
4.	Law in Modern State	Dugit
5.	The Idea of Modern State	Krabb
6.	The Metaphysical Theory of the State	Hobhouse
7.	Greek Constitutional History	Greenidge
8.	Roman Public Life	Greenidge
9.	Civilization during the Middle Ages	Adams
10.	Cabinet Government	Keith
11.	Parliament	Jennings
12.	Parliamentary Democracy in India	Rao
13.	Constitutional Law	Wade and Philips

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
14.	Law and Constitution	Jennings
15.	Modern Democracies	Bryce
16.	Democratic Monarchies in Scandinavia	Arson
17.	Japanese Government and Politics	Mark
18.	Australian Government and Politics	Miller
19.	Federal Government	Wheare
20.	Government of Canada	Dawson
21.	The Law of the Soviet State	Vyshinsky
22.	Principles of Public Administration	Pfiffner
23.	Management in Public Service	J.D. Millet
24.	Organization and Management	Bernard
25.	Functions of the Executive	Bernard
26.	Justice and Administrative Law	Robson
27.	Community Development in India	Mukherjee
28.	Essentials of Public Administration	Gladdon
29.	Law of Nations	Brierly
30.	International Law Through Cases	Green
31.	Manual of International Law—2 Vols.	Schwarzenberger
32.	Indian Political Ideas	Ghoshal
33.	Theory of Government in Ancient India	Beni Prasad
34.	State in Ancient India	Beni Prasad
35.	A Short History of the Far East	Vinacke
36.	Political History of China	Li
37.	Far Eastern Politics in the Post War Period	Vinacke
38.	History of Diplomacy	Petric
39.	International Relations Between Two World Wars	Carr
40.	The Administrative State	Waldo
41.	Parliamentary Financial Control of India	Wattal
42.	Indian Administration	A. Chanda
43.	Great Cities of the World	Robson
44.	Introduction to French Local Government	Chapman
45.	Introduction to Study of International Organization	Potter
46.	Principles of Social and Political Theory	Barker
47.	Reflection on Government	Barker
48.	Relations of Nations	Hartmann
49.	Contemporary Theory in International Relations	Hoffman
50.	Government and Politics of Japan	Maki

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
51.	Constitutional History of Modern Britain	Keir
52.	Renascent India From Ram Mohan Roy to Gandhi	Zacharia
53.	Modern Political Constitutions	Strong
54.	Constitution and Constitutional Trends	Zecher
55.	Chinese Political Thought	Thomas
56.	Political Parties	Morris Dubergar
57.	Community Development in India	V.T. Krishnamhchari
58.	Major Governments of Asia	Kahin (Ed.)
59.	Far Eastern Government and Politics	Lineberger and othres
60.	The Constitution of Ceylon	Jennings
61.	Government and Parliament	Herbert Morrison
62.	New Aspects of Politics	Merriam
63.	Public Personnel Administration	Mosher
64.	Civil Service in a Changing State	Greaves
65.	Indian Constitutional and National Development	Gurumukh Nihal Singh
66.	Fundamentals of Political Science and Organisation	Gurumukh Nihal Singh
67.	Plato and Aristotle	Barker
68.	Republic Vol. I to Vol. VI	Bodin
69.	Reflections on Violence	Sorel
70.	Socialist Traditions	Grey
71.	The City States of Greece and Rome	Fowler
72.	Ancient Institutions	Sir Henry Maine
73.	Constitution on England from Victoria to George VI	Keith
74.	Law of the Constitution	Dicey
75.	Ancient Indian Political Thought and Institutions	Salatore
76.	Elements of Social Justice	Hobhouse
77.	Growth of Indian Liberalism Vol. I to Vol. II	Buch
78.	Parliamentary Practice and Procedure in India	M.N. Kaul
79.	An Introduction to the study in Science of Politics	Polock
80.	Landmarks in Indian Constitution and National Development	G.N. Singh
81.	Anarchism	Bakunin
82.	Medieval Political Theory in the West	Carlyle
83.	History of Medieval Political Thought Vol. II to Vol. VI	Carlyle
84.	American Political System	Brogan
85.	Post war Japan	Yanaga
86.	Rural Government in America	Lancaster

87.	Public Administration	Dimock and Dimock
88.	Today's Isms	Ebenstein
89.	Political Thought from Locke to Bentham	Laski
90.	Political Thought in England (1848-1914)	Barker
91.	Democracy and Its Rivals	Lioyd, C.
92.	Principles of Politics	Lord
93.	Some Characteristics of Indian Constitution	Ivor, Jennings
94.	British Constitution	Jennings
95.	The Fifth French Republic	Pickles, D.
96.	Modern Indian Political Thought (The author may be requested to translate in Hindi)	Varma, V.P. (Ed.)

वनस्पति-विज्ञान विषय-नामिका की सिफारिशें*

वनस्पति-विज्ञान विषय-नामिका की प्रथम बैठक 7 दिसम्बर, 1968 को शास्त्री भवन, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. डा० आर० मिश्र — **अध्यक्ष**
2. डा० आर० पी० राय — सदस्य
3. डा० डी० डी० पंत ,,
4. डा० एस० बी० सक्सेना ,,

1. नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। पर इनमें से कोई भी पुस्तक विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त नहीं पाई गई।

2. नामिका ने बी० एस-सी० के लिए दो जिल्दों में वनस्पति-विज्ञान की निम्न पाठ्य-पुस्तकें मौलिक रूप से लिखवाने की सिफारिश की है—

Text Book in Botany Vol. I

1. Algae 2. Virus and Bacteria 3. Fungi 4. Bryophyta and Pteridophyta 5. Gymnosperms 6. Palaeobotany 7. Anatomy 8. Morphology 9. Embryology 10. Taxonomy 11. Economic Botany

Text Book in Botany Vol. II

1. Ecology 2. Cytology, Evolution and Genetics 3. Physiology and Biochemistry 4. Plant Pathology and Microbiology 5. History of Botany

3. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरंत अनुवाद कराने की सिफारिश की है—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	Biological Science—An enquiry into Life	BSCS Yellow Version
2.	Evolution, Process and Product (Reinhold)	Dooson
3.	Economic Botany	Hill

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
4.	Botany	Hill and others
5.	Plant Physiology	Meyer and Anderson
6.	Botany, Principles and Problems (Mcgraw Hill)	Sinnott and Wilson
7.	Cryptogamic Botany Vol. I and II	Smith
8.	Morphology of Gymnosperms	Sporne
9.	Morphology of Pteridophytes	Sporne
10.	Structure and Life of Bryophytes	Watson
11.	Science of Biology (1967 ed.) (McGraw Hill)	Weisz
12.	Pool Foundations of Plant Science	
13.	Text Book of Practical Botany	Mc Lean & Cook

Thallophytes

1.	Morphology and Texonomy of Fungi	Bessey
2.	Gernal Virlogy	Luria
3.	Biology of Algae	Round
4.	Fundamental Principles of Bacteriology	Salle
5.	Manual of Phycology	Smith
6.	Principles of Plant Pathology	Stakman & Harrar
7.	Fungi (1966)	Gauman
8.	Life of Bacteria	Thimann
9.	Viruses and Nature of life	Stanley & Valons
10.	Biology of Viruses	Smith

Vascular Plants

1.	Morphology of Vascular Plants	Eames
2.	Introduction to Embryophyta Vol. I & II	Parihar
3.	Comparative Morphology of Vascular Plants (Freeman and Co.)	Foster and Gifford

Gymnosperms

1.	Structure and Evolution of Gymnosperms	Chamberlain

Plant Morphology and Anatomy

1.	Morphology of Angiosperms	Eames
2.	Anatomy of Seed Plants	Esau
3.	Plant Anatomy	Fahn
4.	Plant Morphogenesis	Sinnot
5.	Dictionary of Flowering Plants and Ferns	Willis

क्रम सं०	पुस्तक	लखक
	Plant Embryology	
1.	Embryology of Angiosperms	Maheshwari
	Plant Ecology	
1.	Plant Ecology	Misra and Puri
2.	Plant Ecology	Weaver and Clements
3.	Plants and Environment	Daubenmire
4.	Ecology	Odum
	Plant Physiology	
1.	Plant Biochemistry	Bonner
2.	Principles of Plant Physiology	Bonner
3.	Plant Physiology—1966	Devlin
4.	Plant Metabolism	Street
5.	Plant Physiology	Meyer, Anderson and Bohning
	Cytology, Genetics and Plant Breeding	
1.	Cell Biology	Robertis, Novinski and Seez
2.	Methods of Plant Breeding	Hayes
3.	Principles of Genetics	Sinnot, Dunn, Dobhzansky
4.	Cytology and Cytogenetics	Swanson
5.	Plant Breeding and Cytogenetics	Elliot
6.	General Genetics Freeman and Co. 1965	Srb & Owen
	Palaeobotany	
1.	Fossil Plants (Second Ed.)	Walton
2.	Introduction to Palaeobotany	Arnold
3.	Plant Life through Ages	Seward
	Additional Titles	
1.	Microbial Life	Sistrom
2.	Fundamentals of Ecology	Odum
3.	Synoecology	Daubonmire
4.	Forest Ecology	G.S. Puri
5.	Plant Pathology	Walker

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
6.	Chromosome Marker	Lewis
7.	Foundations of Modern Biology	Complete Series
8.	Ecology Workbook	Misra
9.	Life of Green Plants	Galston
10.	Morphology and Taxonomy of Fungi	B. Stetssey
11.	Botany (3rd Ed.)	Hills, Overbolt and others
12.	Classification of Flowering Plants Vol. I	Rendle
13.	Classification of Flowering Plants Vol. II	-do-
14.	Introductory Mycology (2nd Ed.)	C.J. Alexopoulus
15.	Methods of Plant Breeding	Hayes
16.	Mendelism & Evolution	F.B. Ford
17.	Indian Manual of Plant Ecology	Misra and Puri
18.	Anatomy of Seed Plants	Esau
19.	Taxonomy of Vascular Plants	Lawrence
20.	Laboratory Plant Physiology	Meyer, Anderson and Swanson

वाणिज्य विषय-नामिका की सिफारिशें*

वाणिज्य विषय-नामिका की प्रथम बैठक 7-12-1969 को शास्त्री भवन, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया।

1. प्रो० के० सी० सरकार	अध्यक्ष
2. प्रो० सी० डी० सिंह	सदस्य
3. प्रो० ए० एन० अग्रवाल	,,
4. प्रो० पी० एन० शर्मा	,,

1. उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इसमें से निम्न पुस्तकें विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाई गईं—

क्रम सं०	पुस्तक/लेखक
1.	व्यावसायिक संगठन एवं औद्योगिक नियन्त्रण—नवल किशोर सिंह
2.	व्यावसायिक संगठन और प्रबन्ध—मेहर चन्द्र शुक्ल
3.	व्यापार संगठन—रूप राम गुप्ता
4.	मुद्रा, बैंकिंग, विदेशी विनिमय, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं राष्ट्रीय आय—आर० एल० गोयल
5.	व्यापारिक क्रियाशील, प्रशासन एवं प्रबन्ध—भंडारी एवं कुम्भट
6.	व्यापारिक लेखा परीक्षा—बी० एन० टंडन
7.	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा आर्थिक विकास—जेरेल्ड एम० मीअर
8.	सांख्यिकी के सिद्धान्त—देवकी नन्दन एलहंस
9.	सांख्यिकी के प्रारम्भिक सिद्धान्त—मुकुन्द लाल
10.	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त एवं समस्यायें—डा० विष्णुदत्त नाग
11.	मुद्रा की रूप रेखा—एम० सी० वैश्य

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०　　　　पुस्तक/लेखक

12. वाणिज्य विधि के तत्त्व—मन मोहन प्रसाद
13. द्रव्य विनिमय तथा बैंकिंग का परिचय—राजनारायण माथुर
14. वाणिज्यिक विधि, खंड 1—मेहर चन्द्र शुक्ल
15. वाणिज्यिक विधि, खंड 2—मेहर चन्द्र शुक्ल
16. बीमा सिद्धान्त—मोहित कुमार घोष

2. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरन्त अनुवाद की सिफारिश की है—

क्रम सं०　　　　पुस्तक/लेखक

1. Principles of Management—Terry
2. Principles of Management—Koontz and Donnel
3. Management Analysis, Concepts and Cases—Haynes & Massey
4. Economic Analysis for Business decisions—Maune
5. The Economics of Road Transport—Fenelon
6. Acworth Committee Report
7. Wedge Wood Committee Report
8. Mitchell—Kirkness Committee Report
9. Management Accounting, Text, and Cases—Anthory
10. Management Aecounting in Practice—De Paula
11. Cost Accounting—Shilling Law
12. Mercantite Law—Sen and Mitra
13. Public Enterprise and Economic Development—A.H. Hason
14. Public Enterprise—A study of its Organisation and Management in various Countries—A.H. Hason
15. Some Problems in the Organisation and Admn. of Public Enterprises in the Industrial Field—U.N.
16. Public Industrial management in Asia and Far East—U.N.
17. Auditing—De Paula
18. Auditing—Spicer and Pegler
19. Life Insurance—Maclean
20. Insurance Administration—Welson & Taylor
21. Principle and Practice of Fire Insurance—Godwin
22. Property Insurance—Huebner
23. Economics of Life Insurance—Huebner
24. Fire Insurance : Its principles and practice—Brooks
25. Guide to Marine Insurance—Keat
26. Insurance in India—Agarwal
27. Marine Insurance : Principles and Practice—Templeman
28. Insurance Funds and Investment—Paish and Setwaktz
29. Advanced Life Insurance—Knight
30. Personnel Administration—Pigors
31. Personnel Management and Industrial Relations—Dale Yoder

32. Industrial Psychology—M.S. Viteless
33. Personnel Management : Principles and Practice—North Cott.
34. Personnel Principles and Policies—Yuder
35. Industrial Psychology—Mayers
36. Elementary Mannual of Statistics—Bowley
37. Statistics and their application to Commerce—Bodding Lon
38. An Introduction to Theory of Statistics—Yule and Kendell
39. Principles of marketing—Clarke and Clarke
40. Marketing Research—Crisp
41. Principles of Marketing—Tousley, Clarke and Clarke
42. ABC of Foreign Exchange—Clare and Crump
43. Exchange Control—Paul Einzing
44. Banking Systems of Great Britain, France, Germany and U.S.A.—Mackenzie
45. International Economics—Kindleberger
46. Monetary Theory and Trade Cycle—Hayck
47. American Banking System—Sayers
48. Banking in the British Commonwealth—Sayers
49. Monetery Theory and Public Policy—Kurihara
50. International Trade—Haberler
51. International Economics—Ellsworth
52. International Trade and Economic Development—Viner
53. International Economics—Enke and Salera
54. International Trade and Economic Growth—Johnson
55. Balance of Payment and Standard of Living—Hawirey
56. Inter-regional and International Trade—Ohlin
57. Balance of Payments—Meade
58. Foreign Exchange—Evit
59. Corporate Financial Policy—Gattman and Dougal
60. Financial Policies of Business Enterprise—Taylor
61. Basic Business Finance—Hunt, Williams and Donaldson
62. Business Finance—Paish
63. Corporation Finance—Meade
64. Corporation Finance—Hoagland
65. Managing Agency System—Ncear
66. A book of stock Exchanges—Armstrong
67. Security Analysis—Graham and Dodd
68. Ebb & Flow of Investment Values—Meade
69. Financial Statements—Al. Bonington
70. Financial Statements : Analysis Principle and Technique—Meyrer
71. Financial Statements—Kand and Macmullen
72. Analysis of Financial statements- Guthmann

क्रम सं०	पुस्तक/लेखक
73.	Business Forecasting in Practice—Ambranson and Mark
74.	Business Forecasting– Richardson
75.	Reforming the world Money—Roy Hasrod
76.	World Monetary Reform : Plans and Issues—H.G. Grubell (Ed.)
77.	International Monetary Policy—Seamnell
78.	Outline of Monetary Economics—A.C.L. Day
79.	Practice of Management—Peter Drucker
80.	Development Banking in India—S.K. Basu
81.	Accounting—Pickles—Adoptation should be brought out
82.	Cost Accounts—Bigs ,, ,,
83.	Advanced Accounts—Carter ,, ,,
84.	Labour Organisation—Kennyson
85.	Organised Labour—Kennyson
86.	Higher Science of Accountancy—A.N. Agarwal
87.	An Introduction to Trade Unionism—G.D.H. Cole
88.	Collective bargaining—Chambslain
89.	Corporate Financial Policy—Guthmann and Dougal
90.	Basic Business Finance—Hunt, Pearson and others
91.	Indian Banking—Panardikar

3. नामिका ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा अनुवाद-अधिकार प्राप्त पुस्तकों के अनुवाद की सिफारिश की है।

Reference Books which may be translated in the C.S.T.T.

क्रम सं०	पुस्तक/लेखक
1.	Business Organisation—Money
2.	Industry and Trade—Marshall
3.	Scientific Management—Taylor
4.	General and Industrial Management—Henry Fayol
5.	Introduction to Operational Research—Churchman, Ackoff & Arnoff
6.	Outline of Railway Economics—Dongloss Knoof
7.	Element of Railway Economics—Acworth
8.	Railway Economics—Fenelon
9.	Industrial Organisation—Beechame
10.	Life Insurance—Huellner
11.	Management and the worker—Rocthlisberger
12.	Central Banks—Kisch and Elkin
13.	International Trade—Taussig
14.	Monitary Theory and Fiscal Policy—Hanson
15.	Financing of Foreign Trade—Spalding
16.	Theory of Financial Management—Saleman
17.	Scientific Inestment—Parkinson.

Titles Just approved

क्रम सं०	पुस्तक/लेखक
1.	Outlines of Auditing—R.R. Gupta
2.	Labour Problems in India Industries—V.V. Giri
3.	Trade Unionism in India—Punekar
4.	Fundamentals of Statistics—D.N. Elhance
5.	Co-operative Marketing in India—Kulkarni
6.	Central Banking—De Cock
7.	Modern Banking—Sayers
8.	Law and Practice of Banking in India—Tannan
9.	Indian Capital Market—Cirnente
10.	New Capital Issue Market in India—M.A. Mulky
11.	Financial Organisation and Management of Business—Gerstenbery
12.	Corporation Finance—Kuchhel
13.	Industrial Enterprises in India—N. Das

शिक्षा विषय-नामिका की सिफारिशें*

शिक्षा विषय-नामिका की प्रथम बैठक 6-12-1968 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1. प्रो० एस० वी० अडवाल	अध्यक्ष
2. डा० आत्मानन्द मिश्र	सदस्य
3. प्रो० आर० पी० सिंह	,,
4. डा० एम० वर्मा	,,
5. श्री वेद प्रकाश	,,

1. उपलब्ध साहित्य का सर्वेक्षण

नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इसमें से निम्न पुस्तकें विश्वविद्यालय स्तर के लिए उपयक्त पाई गईं—

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	शैक्षिक मनोविज्ञान	**मेहरोत्रा, तथा शैरी**
2.	शिक्षा मनोविज्ञान	**माथुर, एस० एस०**
3.	शिक्षा मनोविज्ञान के तत्व	**भाटिया, हंसराज**
4.	शिक्षा मनोविज्ञान	**भाटिया, हंसराज**
5.	मनोविज्ञान और शिक्षा	**अग्रवाल, पद्मा**
6.	शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकीय प्रयोग	**भटनागर, ओ० पी०**
7.	पाश्चात्य शिक्षा का इतिहास	**चौबे, सरयूप्रसाद**
8.	शिक्षा प्रणालियाँ और उनके प्रवर्तक	**चतुर्वेदी, सीताराम**
9.	प्राचीन व आधुनिक भारतीय शिक्षा का इतिहास	**रावत, प्यारे लाल**
10.	प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति	**अल्तेकर, अनन्तसदाशिव**

---

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
11.	बीसवीं शताब्दी में अमरीकी शिक्षा	कैन्डल, आई० एल०
12.	स्वतन्त्र भारत में शिक्षा की प्रगति	वंशीधर सिंह तथा भूदेव शास्त्री
13.	भारतीय शिक्षा की समस्याएँ	चौधरी, रामखेलावन
14.	शिक्षा-शास्त्र	सैयदैन, के० जी०
15.	शिक्षा की पुनर्रचना	सैयदैन, के० जी०
16.	भारतीय शिक्षा सिद्धान्त	अडवाल, सुबोध
17.	शिक्षा-दर्शन	भाटिया एवं अडवाल
18.	भारतीय शिक्षा-दर्शन	कबिर, हुमायूँ
19.	भारतीय शिक्षा की समस्याएँ	जौहरी तथा पाठक
20.	स्वतन्त्र भारत में शिक्षा	कबीर, हुमायूँ
21.	शिक्षा के नये प्रयोग	सूरजभान
22.	शिक्षात्मक अनुसंधान की प्रस्तावना	ट्रैवर्स
23.	शैक्षिक तथा माध्यमिक शिक्षालय व्यवस्था	गौड़ एवं शर्मा
24.	शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान	पाण्डेय, कामता प्रसाद
25.	माध्यमिक स्कूलों में शिक्षा	क्रौ, रिची
26.	विद्यालयों में मापन तथा मूल्यांकन	रावत, डी० एस०
27.	शिक्षण मापन का इतिहास, सिद्धान्त तथा प्रयोग	रावत, डी० एस०
28.	बुनियादी शिक्षालय का संगठन और व्यवस्था	दुबे, मिलाप चन्द्र
29.	बुनियादी शिक्षा में समवाय	द्वारिका सिंह
30.	बुनियादी शिक्षालय संगठन तथा स्वास्थ्य	मलैया, के० सी०
31.	भाषा शिक्षण	त्रिपाठी, करुणापति
32.	प्रौढ़ शिक्षा के प्रयोग और विधान	शर्मा, वेणीमाधव
33.	शिक्षण प्रविधि	माथुर, विश्वनाथ सहाय
34.	शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त	अग्रवाल, एस० के०
35.	समवायी शिक्षण	दुबे, मिलाप चन्द्र
36.	शिक्षण कला	मिश्र, आत्मानन्द
37.	भूगोल शिक्षण पद्धति	मिश्र, आत्मानन्द
38.	संस्कृत शिक्षण	पाण्डेय, रामशकल
39.	भाषा-शिक्षण की नवीन विधियाँ	ओड, एल० के०
40.	हिन्दी शिक्षण विधि (हिन्दी भाषा शिक्षा विधि)	सफाया, रघुनाथ
41.	संस्कृत शिक्षण विधि	गौरी शंकर
42.	संस्कृत शिक्षण विधि	सफाया, रघुनाथ
43.	नई तालीम	मजुमदार, धीरेन्द्र

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
44.	शैक्षिक परीक्षण, 1967	गैरेट, हेनरी ई० (अनुवाद)
45.	आधुनिक शिक्षा में मूल्यांकन	राइटस्टोन, जस्टमैन राबिन्स (अनुवाद)

2. नामिका ने निम्न पुस्तकों के अनुवाद की सिफारिश की है—

क्रम सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
I.	**Philosophy & Theory of Education**		
1.	Beds	Modern Educational Theories	Mc. Millan
2.	Brameld, Theodore	Pattern of Educational Philosophy	
3.	Butler, J.D.	Four Philosophies	New York, Harper & Bros.
4.	Henderson	Introductions : The Philosophy of Education	University of Chicago Press, 1964.
5.	Horne	The Democratic Philosophy of Education	Mc. Millan
6.	Rusk, R.	Philosophical basis of Education (2nd. rev. ed.)	University of London Press
7.	Whitehead, A.N.	Aims of Education & other Essays	
	Books by Indian Authors		
8.	Mukherji	Education for Fullness	Asia Publishing House
9.	R.P. Singh	The Democratic Philosophy of Education	
10.	Chaube, S.P.	Indian Philosophy of Education	Lucknow
II.	**Educational Sociology (including a chapter on Anthropology)**		
1.	Brown, Prunics J.	Educational Sociology	Prentice Hall, Asia Publications B'bay, 61
2.	Cook & Cook	A Sociological Approach to Education	Mc. Graw Hill Book Co. New York, 1950
3.	Outway, A.K.C.	Education and Society	London
4.	Roucek, J.S. & Associate	Social Foundations of Education	Routledge & Kegan Paul, 1967
III.	**Advanced Educational Psychology**		
1.	Kuppuswami, B	Educational Psychology	Oxford University, 1954
2.	Peel, E.A.	The Psychological Basis of Education	Oliver & Boyd, 1956
3.	Pressey & Robinson	Psychology & the New Education	(Revised edition)

क्रम सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
4.	Sorenson	Psychology in Education	Mc. Graw Hill, New York, 1964
5.	Stephens	Educational Psychology	Constable & Co.

IV. Social Psychology

V. Abnormal Psychology

VI. Child Development

क्रम सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
1.	Carmichel, L.	Manual of Child Psychology	Wiley, 1954
2.	Gessell, A.	The First Five years of Life (6th edition, 1965)	
3.	Hurlock, E.B.	Child & Child Growth (3rd. ed.)	Mc. Graw Hill
4.	Jersild, A.T.	Child Psychology	Prentice Hall, 1965, (4th Edition)
5.	Susan, Issac	Intellectual growth in Young children	Routledge & Kegan Paul
6.	Valentine, C.W.	Psychology of Early childhood	Methuen, London
7.	Piaget	Language & thought of the Child	
8.	Buhler, Charlotte	From Birth to Maturity	

VII. Adolescence

क्रम सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
1.	Cole, L.	Psychology of Adolescence	Allen & Unwin, 1957
2.	Hurlock, E.B.	Adolescent Development (3rd. ed.)	Hurlock, E.B. MC. Graw Hill, 1967
3.	Jersicol, A.T.	Psychology of Adolescence	Mac Millan, 1951

VIII. Personality

क्रम सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
1.	Allport, G.W.	Personality : A Psychological Interpretation	Henry Holt
2.	Murphy W. Barnerd	Personality—A Biosocial Approach	Mc. Graw Hill Book Co. Inc. New York, 1961
3.	Stagner	Personality	
4.	Shaffer	Personality Adjustment	
5.	Hunt, J.M.	Personality and the Behaviour Disorder	

IX. Mental Hygiene

क्रम सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
1.	Kelein, D.B.	Mental Hygiene for Class room Teachers	Henry Hoit

क्रम सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
X.	**Learning**		
1.	Deese	The Psychology of Learning	Mc. Graw Hill
2.	Hilgard Ernest. R.	Theories of learning	Appleton Century Grofts, New York, 1956
XI.	**Methology of Educational Research**		
1.	Best, John W.	Research in Education	Prentice Hall, N.J. 1961
2.	Good & Barr	Methology of Educational	Appleton
3.	Jahona, M. & others	Research Methods in Social Relations	Holt Rinehart and Winston
4.	Mouly, C.J.	The science of Educational Research	American Book Co. 1963
5.	Traverse Robert, M.V.	An Introduction to Educational Research	London, Mac Millan & Co. 1964 (2nd edn.)
6.	Wiseman	Reporting Research in Education	Manchester University Press
7.	Sukhia etc.	Elements of Educational Research	Allied Publishers
8.	M. Varma	Introduction to Psychology Educational Research	Asia, 1966
XII.	**(*a*) Educational Statistics (ordinary level)**		
	(*b*) Educational Statistics (advanced level)		
1.	Edward, Allen L.	Statistical Methods for the behaviourial Science	
2.	Garrett, H.S.	Statistics in Psychology and Education	Longmans Green & Co. 1953, U.S.A. 1960
3.	Guilford, J.P.	Fundamental statistics in Psychology and Education	Mc Graw Hill Book Co. New York, 1942, 3rd. Edn, London
4.	Tate, M.V.	Statistics in Education	Mac Millan
5.	Walker, H. & Lev	J. Statistical inference	Henry Holt
6.	Eby Frederick	History of Philosophy of Education—Ancient & Medieval	New Delhi, Prentice Hall 1653
XIII.	**Measurement & Evaluation**		
1.	Anastasi & Foley	Differential Psychology	
2.	Bell, J.E.	Projective Techniques	Longmans Greens & Co. 48
3.	Buros, Oscar K.	Mental Measurement Year Book	
4.	Guil-ford, J.E.	Psychometric Methods	London, Mc Graw Hill Book Co., 1954

क्रम सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
5.	Lindquist, E.F.	Educational Measurement	American Council of Measurement
6.	Super Donald	Appraising voc. fitness	Haorper
7.	Thorndike	Personnel Selection	John Wiley
8.	Thurstone, L.K. and others	The Measurement of Attitudes	

XIV. History of Indian Education

1.	Altekar, A.S.	Education in Ancient India	India Book Shop, Banaras, 1934
2.	Majumdar	History of Education in Ancient India	
3.	Das, S.K.	Education system of the Ancient Hindus	Calcutta Mitra Press, 30
4.	Mukherjee, R.K.	Ancient Indian Education (2nd Edn.)	
5.	Hampton, N.V.	Biographical studies in Education	Oxford University Press

XV. History of Western Education

1.	Bernard	A short history of English Education	U.L.P.
2.	Beyd, William	History of Western Education	Lord Adam & Charles Black, 1947
3.	Butts, R.I.	A cultural history of Western Education	Mc Graw Hill, 1965
4.	Eby Frederick	Development of Modern Education	New Delhi, Prentice Hall, 1953
5.	Cole L.	History of Western Education	Mac Millan, New York, 60
6.	Good, H.G.	A History of System Education	Mac Millan, 1948
7.	Ulich Robert	Three Thousand Years of Educational System	Harvard University Press 1954
8.	Brubacher	A History of the Problems of Education	Mc Graw Hill, 1947

XVI. Comparative Education

1.	Elvin, H.L.	Changing Education in a changing society	A.S.T.I., 1960
2.	Hans, N.	Comparative Education	Routledge and Kegan Paul 1949 R.S. King & Sons Ltd.,
3.	Kandel, I.L.	The New Era in Education A comparative study	Harper Row, Houghton Mifflin Co. Boston

क्रम सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
4.	Berceday	Methods of Camparative Education	
5.	Kandel, I.K.	Studies in Comparative Education	George G. Havropte
XVII.	**Problems of Indian Education**		
1.	R.P. Singh	Secondary Education : The democratic approach	Kitab Mahal
XVIII.	**Principles of Curriculum, Construction and Development**		
XIX.	**Principles & Methods of Teaching different school subjects**		
1.	Bernard, H.C.	Principles & Practices of Geopraphy Teaching	University Tutorial Press
2.	Jefferys, M.V.	History in Schools	Methuen, London
3.	Ghate	Method of Teaching History	-do-
4.	Sauders, H.N.	The Teaching of General Science in Tropical Secondary Schools	U.L. Press
5.	West Way	Science Teaching	-do-
XX.	**Teacher Education**		
1.	Livingston, R.	Leadership in Education	Oxford University Press, London, 1965
XXI.	**Adult Education**		
XXII.	**Art Education.**		
1.	Read Harbart	Appreciation of Art	
2.	R. Valentine	Psychology of Beauty	
XXIII.	**Audio visual Education**		
XXIV.	**Basic Education**	Shri Mali, K.L.	Virdha Scheme
XXV.	**Child Education**		
1.	Brameld, Theodore	Education for the Emerging Age	Harper & Bros. New York, 1st ed. 1961
XXVI.	**Education of the Gifted and the Backward**		
1.	Heack, A.C.	The Education of Exceptional Children	Mc Graw Hill Co., London
2.	French, J.	Educating the Gifted	
3.	Tansley, A.E. and Guliford, R.	Education of slow learning Children	London Routledge and Kegan Paul, 1950
4.	N.S.S.E. (the 49th. Year Book)	Education of the Exceptional Children	University of Chicago Press, 1940

क्रम सं०	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
5.	N.S.S.E. (The fifty seven Year Book, Part II)	Education of the Gifted	
6.	Robinson	Remendally Retarded Child	
XXVII.	**Education of the Physically Handicapped**		
1.	Bhat, Usha	The Physically Handicapped in India	Popular Book Depot. Bombay, 1963.
2.	Wadia, A.R.	The Handicapped Child	Tata Inst. of Social Sc. Bombay, India, 1954.
3.	Wallin, J.E.	Children with Mental & Physical Handicaps	Prentice Hall, New York, 1949.
XXVIII.	**Social Education**		
XXIX.	**Educational Administration & Supervision**		
1.	Mochlman, A.B.	School Administration	Houghton Mifflin & Co., Boston, 1951.
2.	Mohiuddin & Siddlingaih	School Organisation and Management	-do-
3.	Mort, P.B., Ross, D.H.	Principles of School Administration	Mc Graw Hill, 1957
4.	Mukherji	Educational Administration	-do-
5.	National Society for the Study of Education	Changing Conceptions in Educational Administration	University of Chicago Press, 45th. Year Book
6.	Barr, A.S. Burton, W.H. & Bruokner, L. T.	Supervision	Application Century Crofts Inc.
XXX.	**Educational Planning & Finance**		
1.	Mishra, A.N.	The Financing of Indian Education	Asia Publishing House, Bombay, 1962.
2.	Mort and Reusser	Public School Finance	Mc Grow Hill Book Co., 1957.
3.	William G. Carr	School Finance	Standard University Press, 1933.
XXXI.	**Guidance and Counseling**		
1.	Donald Super, E.	Appraising Vocational Fitness by Means of Psychological Tests	Harpar & Bros, New York
2.	-do-	The Psychology of Careers	-do-
3.	Erickson Clifford, E.A.	Basic Test for Guidance Workers	-do-

क्रम सं०	लखक	पुस्तक	प्रकाशक
4.	Arther J. Jones	Principles of Guidance	Mc Graw Hill Book Co. Inc. New York
5.	Myers, G.E.	Principles & Techniques of vocational guidance	Mc Graw Hill, 1941
6.	Torrance E. Paul	Guiding Creative Talent	Prentice Hall Inc. Englewood cliffs N.J. 1963
7.	Traxler	Techniques of Guidance	Prentice Hall, New York
8.	Williamson	Counselling adolescents.	Mc Graw Hill

शब्दावली आयोग के तत्वावधान में अनूदित पुस्तकें

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	Education, Its Data and First Principles	Percy Nunn
2.	Principles and Techniques of Vocational Guidance	C.D. Myres
3.	Testing for Teachers	-do-
4.	Modern Philosophies of Education	Brubacher
5.	Essentials of Educational Psychology	—Skinner
6.	Psychology in Education (3rd Ed.)	Sorenson
7.	Audio Visual Aid to Instruction	Mc Cown & Roberts
8.	Principles of Teaching Methods	A. Pinsent
9.	A History of the problems of Education	Brubacher
10.	A first course in statistics by Lindquist	
11.	Library in Education	Ralphes
12.	Nursery Years	Issacs
13.	Comparative Education	Hans
14.	Modern Methods of Teaching	Bossing
15.	Educational Psychology in the class room	Lindgren, clay
16.	Contemporary Education	Cramer & Brown

List of books approved for translation by the Commission

1.	Audio-Visual Methods in teaching	Edgar Dale
2.	The teacher Librarian	Grim Shaw, E.
3.	Psychological Testing	Anastasi

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
4.	Doctrine of Great Education	Rusk
5.	Modern Methods and Technique of Teaching	Yokham and Simpson
6.	Our Schools and Theirs	Edmund and King
7.	The Development of Modern Education	Eby-Arroword
8.	Education and Training of Teachers	P. Gurrey
9.	Statistics in Psychology and Education	Garett
10.	Educational Measurement	Travers
11.	Discovery of the Child	Montessori
12.	Great Educations of Three Countries	Graves
13.	Mental Health for class room teachers	Besnard
14.	Education in India—Today and Tomorrow	Mukherjee

समाज-विज्ञान विषय-नामिका की सिफारिशें*

समाज-विज्ञान विषय-नामिका की प्रथम बैठक 13 दिसम्बर, 1968 को शास्त्री भवन, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1.	डा० आर० एन० सक्सेना	अध्यक्ष
2.	डा० एम० सी० दुबे	सदस्य
3.	डा० पी० चन्द्र	,,
4.	डा० एस० के० श्रीवास्तव	,,
5.	डा० इन्द्रदेव	,,
6.	डा० ए० बी० सरन	,,

1. नामिका ने उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों का सामान्य रूप से निरीक्षण किया। इनमें से निम्न पुस्तकें विश्व-विद्यालय स्तर के लिए उपयुक्त पाई गईं—

स्नातक स्तर

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	समाजशास्त्र	मोरिस गिन्सबर्ग अनुवादक : महेन्द्रनाथ वर्मा
2.	सामाजिक सर्वेक्षण और अनुसंधान	सत्यपाल रुहेला
3.	भारत में समाज कल्याण और सुरक्षा	डा० रघुराज गुप्त
4.	समाजशास्त्र—सिद्धान्त और विश्लेषण (एक जिल्द)	शम्भूलाल दोषी

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
5.	सामाजिक विचारक	हैरी एल्मल बार्न्ज़ अनुवादक : रघुराज गुप्त
6.	सामाजिक मनोविज्ञान	वसन्त विनायक शकालकर अनुवादक : श्री शंकर शुक्ल
7.	भारतीय समाज और संस्कृति	डा० रामनाथ शर्मा
8.	भारतीय समाज और संस्कृति	डा० कैलाश नाथ शर्मा
9.	भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र	ए० आर० देसाई अनुवादक : हरिकृष्ण रावत
10.	हिन्दू परिवार मीमांसा	हरिदत्त वेदालंकार
11.	सामाजिक मनोविज्ञान की रूपरेखा	मुकर्जी
12.	समाजशास्त्र परिचय	रामपाल सिंह
13.	मानव और संस्कृति	दुबे
14.	आदिवासी भारत	अटल
15.	भारतीय नगर	विद्यार्थी
16.	भारत की सामुदायिक विकास योजना	सच्चिदानन्द
17.	समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों की विवेचना	बुद्धसेन चतुर्वेदी
18.	जाति-व्यवस्था	नर्मदेश्वर प्रसाद
19.	भारतीय ग्राम : सांस्थानिक परिवर्तन और विकास	पी० सी० जोशी
20.	भारतीय समाज	प्रो० इन्द्रदेव
21.	आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन	एम० एन० श्रीनिवास
22.	भारत में परिवार और विवाह	कपाडिया

स्नातकोत्तर स्तर

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	मध्यकालीन भारतीय संस्कृति	आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव
2.	समाजशास्त्र के सिद्धान्त	किम्वल-यंग एण्ड रेमंड डब्ल्यूमेन
3.	भारतीय समाजशास्त्र मूलाधार	डा० फतह सिंह
4.	सामाजिक पुनर्निर्माण के सिद्धान्त	बर्ट्रेंड रसेल अनुवादक : मुनीश सक्सेना
5.	मनु की समाज व्यवस्था	सत्य मित्र दुबे
6.	विवाह और समाज	डा० वेस्टर मार्क
7.	समाजशास्त्र की विधियाँ	डा० चार्ल्स ए० इलसज अनुवादक : शम्भूरत्न त्रिपाठी
8.	हिन्दू सभ्यता	राधा कुमुद मुकर्जी

2. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरत अनुवाद की सिफारिश की है—

स्नातक स्तर

Ist Priority

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	A Handbook of Sociology	Ogburn and Nimkoff
2.	Society	Maciwer and Page
3.	Caste in India	Hutton, J.H.
4.	Human Society (Mac Millan Co. New York, 1955)	Davis, Kingsley
5.	Sociology (O.U.P.)	Ginsberg, M.
6.	Primitive Society	Lowie

स्नातकोत्तर स्तर

'A' (First Preference)

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	Essays in Sociology (Ed. By Gerth and Mills)	Weber, Max
2.	Systematic Sociology	Mannheim, K.
3.	Twentieth Century Sociology (The Philosophical Li)	Gurvetch, G. and Moore, W.E.
4.	Modern Sociological Theory in Continuity and Change	Becker and Boskoff
5.	An Introduction to the History of Sociology (The University Chicago Press, Chicago Illinois 1948)	Barnes, H.E. (Ed.)
6.	Caste in Modern India	Srinivas, M.N.
7.	Indian Social Heritage	O. Malley
8.	Structure and Function in Primitive Society	Brown, Radcliff
9.	Social Structure (Macmillan & Co., New York 1949)	Murdock, G.P.
10.	The Theory of Social Structure	Nodel, S.F.
11.	Statistical Methods for Social Scientists	Cohen, L.
12.	Delinquent Boys (R.K. Paul, London)	Cohen, A
13.	Urban Community	Anderson, Nel
14.	Dynamics of Rural Society	Mukerjee
15.	India's Changing Village (Routledge & Kegan Paul London, 58)	Dube, S.C.
16.	Principles of Rural & Urban Sociology	Sorokin & Zimmormen
17.	Sociology of Culture	Unithan & Others
18.	The Religion of India	Weber, M.
19.	Industrial Sociology	Moore
20.	Individual & Society	Krech & Crutchfield
21.	Contemporary Sociological Theories	Sorokin, P.A.

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
22.	Sociology Today	Merton, R.K.
23.	The Methods of Social Research	Goode and Hatt.
24.	Scientific Social Surveys and Research	Young, P.V.
25.	Statistical Methods of Social Workers	Mc Hillen, W.
26.	Social Disorganisation	Elliot and Merrill
27.	Juvenile Delinquency	Tappan P.W.
28.	Criminal Behaviour	Reckles, W.C.
29.	Industrial Sociology	Schmiedar
30.	Handbook of Social Psychology	Young, Kimball Young
31.	Handbook of Social Psychology	Lindsey, G.
32.	Tools of Social Science	Madge, J.
33.	Research Methods in Social Relations	Selbtiz, Jahoda and others
34.	Statistics for Sociologists	Hagoode, J.
35.	Criminology and Penology	Gillin, J.L.
36.	The Little Community	Redfield Robert
37.	Criml, Justice and Correction	Tappen
38.	Caste, Class and Occupation In India	Ghurye, G.S.
39.	Society : An Introduction analysis	Mac Iwer and Page
40.	Kinship Organisation in India	Karve, Irawate
41.	Survey Methods in Social Investigation	Moser, C.A.
42.	Sociyology : A Systematic Introduction	Johnson, Harry, M.

'B' (Second Preference)

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
1.	Development of Social thought	Bogardus, E.
2.	Sociology of Knowledge	Stark
3.	Foundation of Sociology	Lundberg, G. and Others
4.	The Study of Society	Bartlet and Others
5.	Analysis of Social Change	Wilson, G.H.
6.	Social System	Parson, Telcott
7.	Elementary Social Statistics	Mc-Cormick
8.	Disorganisation—Personal and Social	Mowrer
9.	Sociology of Deviant Behaviour (New York, Halt, Rine Hard & Winston 1961)	Clinard, M.B.

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
10.	Contemporary Social Problems	Metton and Nisbet
11.	Juvenile Delinquency in an Indian Setting (Popular Book Depot, Bombay, 1961)	Seth, H.
12.	Juvenile Delinquency (New York)	Reckless
13.	Principles of Criminology (J.B. Lippin Cott. Co. London)	Sutherland, Cressay
14.	Urban Sociology	Quine
15.	Rural Sociology in India	Desai, A.R.
16.	A Systematic Source Book in Rural Sociology	Sorokin Zimmermen and Galpin
17.	Protestant Ethics	Wilber, Max
18.	Modern Indian Culture	Mukerjee, D.P.
19.	Family in a Democratic Society	Folson
20.	The Family	Burges and Locke
21.	Hindu Family in Urban Setting	Ross, Ailen, E.
22.	Behaviour Problems of Children	Marfatia, J.C.
23.	The Human Graphs	Homans, G.C.
24.	Hindu Social Organisations	Prabhu, P.N.
25.	Contemporary Correction	Tappan, P.W.
26.	Industry and Society	White, William F.
27.	Research Methods in Behavioural Science	Festinger and Katz
28.	Suicide	Durkein, E.

'C' (Third Preference)

1.	Fads and Fobles in Modern Sociology	Sorokin, P.A.
2.	History of Caste System	Ketkar, S.V.
3.	Social Organisation	Cooley
4.	Social Differentiation	North, C.C.
5.	Social Mobility	Sorokin, P.
6.	Society and the Criminal in India	Sethna, M.J.
7.	Behind the Mud Walls	Wiser
8.	Sociology of Religion	Watch, J.
9.	Social Diagnosis	Richmand, M.E.
10.	Community and Association	Tonnies
11.	The Structure of Social Action	Parsons, Talcott

Translation of Encyclopaedia

Encyclopaedia of Educational Research (latest edition)

Miscellaneous

1. Year Book on Progress of Education — N.C.E.R.T., Ministry of Education

क्रम सं०	पुस्तक	लेखक
2.	Report of the Education Commission	Education Commission, Govt. of India,
3.	Sargent Report	Sargent
4.	Report of the Secondary Education Commission (1953)	Secondary Education Commission
5.	University Commission Report	University Commission

3. नामिका ने निम्न विषयों/शीर्षकों पर मौलिक पुस्तकें लिखवाये जाने की सिफारिश की है—

स्नातक स्तर

1. An Introduction to Sociology
2. Indian Society : Structure and Change
3. Indian Social Problems
4. An Introduction to Social Psychology
5. Elements of Social Research
6. Social Change

स्नातकोत्तर स्तर

1. Modern Sociological Theories
2. Social Change in India
3. History of Sociological Thought
4. Caste, Class and Mobility in India
5. Social Disorganisation
6. Rural Sociology
7. Readings in Social Psychology
8. Founding Fathers of Sociology
9. Marriage and Family in India
10. Urban Sociology
11. Industrial Sociology
12. Social Research and Methodology
13. Sociology of Religion
14. Political Sociology
15. Communication
16. Bureaucracy and Formal Organisation
17. Sociological Tradition : A Survey of the theories of major thinkers
18. Educational Sociology
19. Sociology of Knowledge

समालोचना विषय-नामिका की सिफारिशें*

समालोचना विषय-नामिका की प्रथम बैठक 6 दिसम्बर, 1968 को शास्त्री भवन, नई दिल्ली में हुई। इसमें नामिका के निम्न सदस्यों ने भाग लिया—

1.	डा० हज़ारी प्रसाद द्विवेदी	अध्यक्ष
2.	डा० नगेन्द्र	सदस्य
3.	डा० विनय मोहन शर्मा	,,
4.	डा० सत्येन्द्र	,,
5.	डा० मोहन लाल	,,

1. नामिका को यह बताया गया कि श्री एस० के० डे लिखित History of Sanskrit Poetics का अनुवाद आयोग की देख-रेख में पूरा कर लिया गया है और इस समय उसका पुनरीक्षण हो रहा है। नामिका ने इसका अनुमोदन किया। तब नामिका ने उन पुस्तकों पर पुर्नविचार किया जिनके कापीराइट लेने से सम्बन्धित कार्रवाई शुरू की जा चुकी है। इन पुस्तकों में से नीचे लिखी पुस्तकें अनुमोदित की गईं—

1. History of Sanskrit Literature by Krishnamachari
2. World Drama by Nicoll
3. Making of Literature by Scott James

2. नामिका ने नीचे लिखे दो प्रस्तावों पर विचार किया जो कि प्रकाशकों के सहयोग से हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर की मानक पुस्तकों के निर्माण, अनुवाद और प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत प्राप्त हुए थे। इन दोनों प्रस्तावों को प्रत्येक के सामने दी गयी टिप्पणी सहित अनुमोदित किया गया—

प्रस्ताव	टिप्पणी
(1) रिचर्ड्स के समालोचना सिद्धान्त लेखक—शंभूदत्त झा भारतीय भवन, पटना।	प्रस्ताव के गुणावगुणों के आधार पर निर्णय कर लिया जाए।
(2) Readings in Literary Criticism प्रस्तावक सर्वश्री नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।	इसे दिल्ली विश्वविद्यालय की देखरेख में कराया जा सकता है।

* सिफारिश की गई पुस्तकों की यह पहली किस्त है।

3. नामिका ने निम्न पुस्तकों के तुरत अनुवाद की सिफारिश की है—

क्रम सं० | पुस्तक/लेखक

1. Advanced Verse Appreciation (Blackie)—F. Mesby and J.K. Thomas, Blackie & Sons Ltd., Bishopbriggs, Glasgew, London.
2. Aspects of the Novel—Ferster, E.M., Penguin Books Ltd., Hermends, Middlesex, West Drayten.
3. History of English Criticism (Vol. I & II)—Rone, Wellek, Jonathan Cape, 30, Badford Square, London, 1955.
4. (A) History of Modern Criticism (1750-1950)—Rene Wellek, Jonathan Cape, Thirty Bedford Square, London, 1955.
5. History of Sanskrit Literature, Vol. I Classical Period—S.K. De and S.N. Das Gupta, Chowkhamba Sanskrit series Office, Varanasi.
6. (A) History of Sanskrit Poetics—P.V. Kane, Probsthain (Arthur) 41-Great Russell St. W.C.I. 1961.
7. History of Sanskrit Poetics—S.K. De, Probsthain (Arthur) 41-Great Russell St. W.C.I. 1961.
8. Illusion and Reality—Caudwell, Christopher, People's Publishing House Ltd., Delhi, 1956.
9. (The) Modern Writer and His World—G.S. Fraser, Rupa & Co., Calcutta, Allahabad, Bombay, 1961.
10. (The) Poetic Image—Day Lewis, Oxford University Press Inc., 200-Madison Ave, New York.
11. Principles of Literary Criticism—Lascelles Abererembie, Vora and Co. Publishers Private Ltd., 3 Round Building, Bombay-2, 1962.
12. Principles of Literary Criticism—I.A. Richards, Routledge & Kegan Paul Ltd., Broadway House, 68-74, Carterlane E.C.U—4, London, 1959.
13. Sidney's An Apologie for Poetrie, ed. I by Churton Collins, Oxford at the Clarenden Press, 1924.
14. Theory of Drama—Nicell, A. Blom, Benjamin., Inc. 4w. Mt. Eden Ave.
15. Theory of Literature—Warren and Wellek, Harcourt, Brace & World Inc., 757 Third Ave, New York. (Re.ed.)
16. Style, Raleigh, (Walter)
17. The Novel and the People—R.F. Lawrence, 2 Wibert, 1937.
18. Fiction and the Reading Public : Q.D. Leavis, Chhatte & Windus
19. The Short story : Sean O' Fealain
20. Literary Criticism : A Short History—W. Wimstatt and Brooks
21. A Modern Book of Aesthetics : An Anthology—Malviv Rader
22. The Principle of Art—R.C. Collinwood, Oxford, 1938.
23. The Art of Fiction (ed.L.N. Richardson) Henry James, New York, 1941.
24. What is Literature—Jean Pal Sartre : Tr. Bernard Fetchman, New York, 1949.
25. American Literary Criticism—Clicks Berg

क्रम सं० पुस्तक/लेखक

26. Meaning of Beauty : Eric Newton, (Indian Edition Available)
27. The Poetic Principle : E.A. Poe (Poe's Complete Works—J.A. Harrison, 1902.)
28. The Style Lucas

4. नामिका ने सिफारिश की है कि निम्न पुस्तकों का अनुवाद/सम्पादन/अनुकूलन किया जाना चाहिए—

1. (The) Business of Criticism—Helen Gardner, Oxford, at the Clarendon Press, 1960.
2. Critical Approaches to Literature—David Daiches, Englewood, Cliffs N.J. Prentice Hall, Inc., 1956.
3. Dictionary of World Literary Terms—Joseph T. Shipley, George Allen and Unwin Ltd., London, 40 Museum Street, W.C.I. (to be done in C.S.T.T.)
4. English Critical Essays, XVI to XVIII Century (World's Classics), Oxford University Press, London, 1922.
5. English Critical Essays-Nineteenth Century and Twentieth Century—Oxford University Press.
6. English Critical Essays, Twentieth Century (Second Series) Edited by Derek Hudson and Printed at 7S (World's classics Series) Oxford University Press, 1938. 58.
7. (The) Greek Views of Poetry (Methuen)—E.E. Sykes, Methuen & Co. Ltd., 11 New Fetter Lane E.C.4.
8. (A) Handbook of Literary Terms—Yelland, H.L., Angus and Robertson Ltd, London, (to be done in C.S.T.T.)
9. Oxford Lectures on Poetry—A.C. Bradley, London, Macmillan & Co. Ltd., New York, St. Martin's Press, 1965.
10. Preface to the Lyrical Ballads (II Edition)—W. Wordsworth & S.T. Coleridge Lyrical Ballads, Ed. Littledale, Oxford University Press, 1911.
11. Selected Literary Criticism—D.H. Lawrence, ed. by Anthony Beal, William Heinemann Ltd., Malbourne, London, Toranto, 1955.
12. Seven Types of Ambiquity—Empson, W., Penguin Books Ltd., Harmondworth, Middlesex West, Drayton.
13. Aristotle-Poetics (Translated by Butcher) (Butcher's Introduction portion only).
14. The Sense of Beauty—George Sontayana, New York, 1896.

5. नामिका ने निम्न पाठ-संग्रह तैयार करने की सिफारिश की है—

1. **T.S. Eliot**

A combined volume consisting of the edited/adapted portions of the following :

(*i*) Selected Essays, Feber 'Faber, Ltd , 21 Rsslyn Hill N.W.3, 1951.

(*ii*) Tradition and Experiment in Present day Literature, Haskell House, 280 Lafayetter St., New York.

(*iii*) The use of Poetry and the Use of Criticism, Faber & Faber Ltd., 24 Russell Square, London, 1964.

(*iv*) The Function of Criticism and Poetic Drama
(*v*) The Study of Poetry and Criticism
(*vi*) Tradition and Individual Talent
(*vii*) The three voices of Poetry

2. **W. Pater**

A combined volume consisting of edited/adapted portions of :

(*i*) Appreciations, Macmillan, 1944.
(*ii*) On Style, Macmillan, 1944.

3. **M. Arnold**

A similar volume consisting of :

(*i*) Function of Criticism, preface to poems, 1853.
(*ii*) The Function of Poetry (Ist. Series)
(*iii*) The Study of Poetry

स्नातक-स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए विषय-नामिकाओं द्वारा संस्तुत पुस्तकों का ब्यौरा

क्रम सं०	विषय	मौलिक लेखन मोनोग्राफ आदि के लिए स्वीकृत पुस्तकों की संख्या	अनुवाद के लिये स्वीकृत पुस्तकों की संख्या	नामिका द्वारा अनुमोदित विषयवार उपलब्ध हिन्दी पुस्तकों की संख्या
1.	अर्थशास्त्र	—	37	39
2.	आयुर्विज्ञान (नैदानिक-विषय)	16	49	—
3.	भेषज विज्ञान	2	18	—
4.	आयुर्विज्ञान (पूर्व-नैदानिक-विषय)	4	14	—
5.	आयुर्विज्ञान (परा-नैदानिक-विषय)	5	7	—
6.	इतिहास	2	2	195
7.	(क) इंजीनियरी (कोर)	11	26	4
	(ख) इंजीनियरी (पोलिटेक)	34	81	4
8.	कृषि-विज्ञान	—	—	—
9.	गणित	11	100	14
10.	दर्शन	2	143	13
11.	नृ-विज्ञान	—	89	25
12.	प्राणि-विज्ञान	3	114	2
13.	भाषा-विज्ञान	6	140	99
14.	भूगोल	9	14	20
15.	भू-विज्ञान	8	134	8
16.	भौतिकी	40	108	—
17.	मनोविज्ञान	6	112	5
18.	रसायन-विज्ञान	172	57	2
19.	राजनीति-विज्ञान	4	200	40
20.	वनस्पति-विज्ञान	2	91	—
21.	वाणिज्य	—	120	16
22.	शिक्षा	31	176	46
23.	समाज-विज्ञान	25	88	30
24.	समालोचना	3	42	250
	कुल	396	2062	812

सचित्र विश्वकोश

(गोल्डन बुक इन्साइक्लोपीडिया पर आधारित)

ज्ञान-विज्ञान की प्रामाणिक तथ्यपूर्ण और नवीनतम जानकारी तथा
प्रत्येक खण्ड में डेढ सौ से अधिक रंगीन चित्र

अपने ढंग का अनूठा विश्वकोश

दस पृथक खण्डों में : प्रत्येक अपने में पूर्ण

खण्ड—1 पृथ्वी, आकार, खनिज
खण्ड—2 जीव-जन्तु और पेड़-पौधे
खण्ड—3 मनुष्य विकास, शरीर-रचना, स्वास्थ्य, खेलकूद
खण्ड—4 राजनीति, प्रशासन, धर्म
खण्ड—5 कृषि, उद्योग, व्यापार, शिल्प
खण्ड—6 आविष्कार, खोज, हाबी, पर्यटन
खण्ड—7 विज्ञान, वैज्ञानिक, आविष्कारक
खण्ड—8 साहित्य, कला, दर्शन, पुराण-काव्य
खण्ड—9 विश्व-इतिहास, प्रमुख व्यक्ति और घटनाएं
खण्ड—10 देश और निवासी

मूल्य : 7 रुपये प्रति खण्ड

प्रकाशक

राजपाल एण्ड सन्स
कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

निवेदन

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा समय-समय पर आयोजित उच्चस्तरीय शिक्षा से सम्बन्धित विषयों की पाठ्य-पुस्तकों और संदर्भ ग्रन्थों की पुस्तक प्रदर्शनियों में अपने प्रकाशनों का प्रदर्शन करने के लिए कृपया प्रत्येक ग्रन्थ की दो प्रतियां निम्नलिखित पते पर भिजवाएं।

अध्यक्ष
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, पश्चिम खण्ड 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22

लेखक
एस० टीमोशेंको
प्रोफेसर इंजीनियरी यांत्रिकी
स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय
और
डी० एच० यंग
प्रोफेसर इंजीनियरी यांत्रिकी
स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय

अनुवादक
ज्ञानचन्द्र जैन

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय की मानक ग्रंथों की प्रकाशन योजना के अन्तर्गत प्रकाशित

सरिता प्रकाशन
प्रकाशक, नौचन्दी मैदान, मेरठ

तीस खण्डों में पूरी होने वाली हिन्दी की प्रथम बुक ऑफ नालेज

ज्ञान-गंगोत्री

[प्रथम खंड]

ब्रह्माण्ड-दर्शन

मूल्य : 20 रुपये

छप कर तैयार है

सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर देश के श्रेष्ठतम विद्वानों की सहायता से 'ज्ञान गंगोत्री' का प्रकाशन कर रही है। गुजराती में इस 'बुक आफ नालेज' के 4 खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं; इन्हें साथ-ही साथ हिन्दी में भी प्रकाशित करने की व्यवस्था की गयी है।

योजना के निर्देशक हैं	:	श्री ईश्वरभाई जे० पटेल कुलपति, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी
प्रधान सम्पादक	:	श्री मांगीलाल गांधी
सहयोगी सम्पादक	:	श्री बंशीधर गांधी

ज्ञान-गंगोत्री

के 30 खण्डों में 20 खण्ड मानविकी विषयों के होंगे तथा 10 खण्ड विज्ञान-संबंधी विषयों के। चित्रों, रेखांकनों से भरपूर, ज्ञान-विज्ञान की विविध जानकारी और अधुनातन खोजों की व्याख्या से समृद्ध इस ग्रंथ-भंडार का प्रत्येक घरेलू और सार्वजनिक पुस्तकालय में होना आवश्यक है।

ज्ञान-गंगोत्री के खण्डों के वितरक हैं

राधाकृष्ण प्रकाशन

2, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-6